आर.एन.आई. नं. 3653/57

डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

वर्ष : 60 अंक 10

अक्टूबर, 2003 आश्विन, 2060

malhar11.5x19/1477

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

● **प्रकाशक**
प्रकाशचन्द डागा
मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 2565997

● **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

● **सम्पादक**
डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

● **सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र**
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005(राज.)
फोन नं. 0291-2730081

● **सम्पादक मण्डल**
डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

● **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. JPC/3825/02/2003-05

● **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पुट्ठो य दंसमसएहिं,
सम एव महामुणी।
नागो संगामसीसे वा,
सूरो अभिहणे परं॥

—उत्तराध्ययन सूत्र २.१०

**दंशमशक से छूने पर,
समरस हो मुनि दुःख सहन करे।
संग्रामशीर्ष पर शूर नाग,
ज्यों शत्रु सैन्य पर विजय करे॥१०॥**

अक्टूबर 2003
वीर निर्वाण सं. 2529
आश्विन, 2060

वर्ष : 60 **अंक** : 10

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोनः 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोटः यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन/निबन्ध

संघ—विकास के तीन आधार : स्नेह, सद्भावना और संगठन	: उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	6
धर्मसंघों में प्रदूषण : एक चिन्तन	: श्री प्रेमचन्द कोठारी	15
मोह और प्रेम में भेद	: श्री सम्पतराज डोसी	18
संस्कारों से व्यक्तित्व का निर्माण	: श्री पदमचन्द गांधी	21
संवर : एक विवेचन	: श्री राजमल सिंघी	24
कष्टों से घबराएँ नहीं : आत्मशक्ति को जागृत करें	: श्री गजमल लोढ़ा	27

विचार/प्रश्नमंच

सम्यग्दर्शन की महिमा	: सौ. कमला सिंघवी	14
स्वाध्याय आत्मसौन्दर्य की शोध	: श्री लक्ष्मीचन्द जैन	23

कथा/कविता/प्रेरक-प्रसंग

मनाओ दीक्षा महोत्सव आज	: श्री बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल	20
तीन कविताएँ	: श्री प्रकाश कर्णावट	29
थकान	: श्री दिलीप धींग	44
गाँधीजी की भावना	: श्री आनन्दराज घीसूलाल तलेसरा	64
दीपावली पटाखों से नहीं मनाएँ	: प्राणिमित्र नितेश नागोता	71

स्तम्भ/ अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
साहित्य—समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	30
पर्युषण रिपोर्ट	: संकलित	31
समाचार-संकलन	: संकलित	45
संक्षिप्त समाचार	: संकलित	58
बधाई	: संकलित	60
श्रद्धांजलि	: संकलित	60
साभार—प्राप्ति—स्वीकार	: संकलित	65

अहिंसा बनाम वीतरागता

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन धर्म में अहिंसा की प्रधानता है, किन्तु लक्ष्य वीतरागता है। वीतरागता के होने पर ही दुःखों से मुक्ति संभव है। वीतराग होने पर ही केवलज्ञान की प्राप्ति होती है, इसलिए कहा गया है कि कषाय से मुक्ति ही वास्तव में मुक्ति है-

नाशाम्बरत्वे न सिताम्बरत्वे, न तर्कवादे न च तत्त्ववादे।
न पक्षसेवाश्रयणेन मुक्तिः, कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव।।

-हरिभद्रसूरि

मुक्ति न दिगम्बर होने में है, न श्वेताम्बर होने में, न तर्कवाद में, न तत्त्ववाद में और न ही किसी एक पक्ष को स्वीकार करने में है। वास्तव में क्रोधादि कषायों से मुक्त होना ही मुक्ति है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है-

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य संखएणं, एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं।।

समग्र ज्ञान के प्रकाशन से, अज्ञान एवं मोह के विनाश से तथा राग एवं द्वेष के क्षय से आत्मा एकान्त सुख-स्वरूप मोक्ष को प्राप्त करता है।

इस प्रकार के मोक्ष या मुक्ति की प्राप्ति के लिए वीतकषाय किंवा वीतराग होना आवश्यक है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह महाव्रतों का स्वीकरण, पाँच समिति एवं तीन गुप्ति का पालन एवं रत्नत्रय का आराधन वीतरागता या मुक्ति की प्राप्ति के लिए ही है, किन्तु सम्प्रति वीतरागता की प्राप्ति का लक्ष्य गौण हो गया और अहिंसा आदि के बाह्य आचरण पर अधिक बल दिया जाने लगा है। 'अहिंसा' का अपना महत्त्व है। यह प्राणिमात्र की रक्षा एवं उसको अभय प्रदान करने के साथ स्वयं को भी पापकर्मों में प्रवृत्त होने से बचाती है। किन्तु अहिंसा भावपूर्वक, उपयोगपूर्वक होनी चाहिए। आज द्रव्य हिंसा से बचने पर जितना ध्यान दिया जाता है, उतना भाव हिंसा से बचने पर नहीं। यदि भाव हिंसा से बचने पर ध्यान दिया जाय तो वह अहिंसा वीतरागता-प्राप्ति का साधन बन सकती है। वीतरागता साध्य है एवं अहिंसा साधन।

वीतराग होने का अर्थ है रागादि से रहित होना। राग के साथ द्वेष एवं चतुर्विध कषायों से रहितता स्वतः गृहीत हो जाती है। वीतरागता भी कषाय के क्षयरूप होनी चाहिए, औपशमिक नहीं। मोहकर्म या कषाय का क्षय ही मुक्ति का द्योतक है। मोह कर्म का क्षय होते ही ज्ञानावरण, दर्शनावरण एवं अन्तराय कर्म तो

तत्काल क्षय हो जाते हैं, उसके पश्चात् आयु कर्म का जब क्षय होता है तो उसके साथ ही वेदनीय, नाम एवं गोत्र कर्म का भी क्षय हो जाता है। आठों कर्मों का क्षय होने पर मुक्ति की पूर्णावस्था प्राप्त हो जाती है।

बाह्य हिंसा-अहिंसा को लेकर यदि विचार किया जाय तो पूर्ण अहिंसक होना अत्यन्त कठिन है। तीन करण एवं तीन योग से जीव-हिंसा का त्याग करने वाला श्रमण भी क्या पूर्ण अहिंसक होता है? पाँच समिति पूर्वक की गई प्रवृत्ति में क्या कभी कोई जीव-हिंसा नहीं होती है? विचरण-विहार, वचन-व्यवहार, आहार आदि की गवेषणा आदि सभी प्रवृत्तियों में कहीं भी कोई हिंसा न होती हो, ऐसा नहीं है। यदि न होती हो तो प्रतिक्रमण करने की आवश्यकता ही नहीं रह जाएगी। प्रतिक्रमण करते समय श्रमण-श्रमणी को यह स्मरण हो जाता है कि वह तीन करण तीन योग से हिंसा का त्यागी है। वह प्रत्येक प्रवृत्ति सावधानी से करे, ताकि भावतः भी हिंसा का सेवन न हो। साधना के उच्च शिखर पर आरूढ़ होते समय भावतः हिंसा नहीं होती, किन्तु द्रव्यतः हिंसा तो किसी भी प्रवृत्ति में कहीं न कहीं होती ही रहती है। वीतरागता की प्राप्ति के पश्चात् भी द्रव्य हिंसा हो सकती है, किन्तु भावहिंसा के अभाव में वह कर्मबंध का कारण नहीं बनती। भावहिंसा तभी होती है जब प्रमत्तयोग हो, कषायभाव हो। राग,द्वेष,मोह, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि के अभाव में कर्मबंध नहीं होता है। इसलिए महत्त्व कषायभाव में कमी लाने का है, मात्र बाह्य अहिंसा का नहीं।

आगम वाङ्मय में हिंसा को अनेक कारणों से त्याज्य बताया गया है, यथा-

१. सभी प्राणी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता, सबको जीवन प्रिय है, इसलिए उनकी इस भावना की रक्षा की जानी चाहिए- **सव्वे पाणा पियाउया, सुहसाया दुक्खपडिकूला...सव्वेसिं जीवितं पियं।**-आचारांग सूत्र

२. हिंसा से कर्मों का आस्रव होता है तथा कषाय के कारण उनका बंध हो जाता है।

३. हिंसा से सब प्राणी भयभीत होते हैं, अहिंसा से सबको अभय प्राप्त होता है। अहिंसा भयभीत प्राणियों के लिए शरण है-**अहिंसा भीयाणं विव सरणं।**-प्रश्नव्याकरण

४. अहिंसा त्रस-स्थावर सभी प्राणियों के लिए कल्याणकारिणी है-**अहिंसा तस-थावर-सव्वभूयखेमंकरी।**

५. ज्ञानी होने का सार यही है कि मनुष्य किसी की निंदा न करें - **एवं खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किं चण।**

हिंसा की त्याज्यता प्रबल प्रमाणों के साथ सिद्ध होने पर भी वीतरागता

उससे अधिक उच्च लक्ष्य है, क्योंकि उसकी प्राप्ति के बिना न तो भव-भ्रमण मिटता है, न दुःखों से मुक्ति होती है और न ही शाश्वत अव्याबाध सुख की प्राप्ति होती है। अहिंसा आदि पंच महाव्रतों का पालन भी उसी वीतरागता की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

आज अहिंसा पर जितना बल प्रदान किया जाता है, उतना सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह पर नहीं। किन्तु इनका भी साधना में उतना ही महत्त्व है, जितना अहिंसा का। कुछ व्याख्याकार अहिंसा को प्रधान बनाकर सत्य आदि का समावेश अहिंसा में ही कर लेते हैं, किन्तु ऐसा करना एकान्तरूप से उपयुक्त नहीं है, अन्यथा तीर्थंकर भगवान के द्वारा पाँच महाव्रतों का प्रतिपादन क्यों किया जाता? ये सभी महाव्रत व्यक्ति को बाह्य प्रवृत्ति में शुद्धता के साथ भावों में शुद्धि को भी प्रेरित करते हैं।

यद्यपि अहिंसा की पूर्णता राग, द्वेष आदि की उत्पत्ति न होने में है अर्थात् वीतरागता में है। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि अहिंसा एवं वीतरागता कथंचित् भिन्न हैं। अहिंसा का अर्थ जब हिंसा से विरमण किया जाता है तो वह व्रत या महाव्रत का रूप अंगीकार कर लेता है, किन्तु वीतरागता कोई व्रत या महाव्रत नहीं है। अहिंसा साधन है, उसका परम उत्कृष्ट रूप वीतरागता में फलित होता है। सम्पूर्ण वीतरागता को प्राप्त अरिहन्त एवं सिद्धों के लिए जिन विशेषणों का प्रयोग किया जाता है, वे अपने आप में महत्त्वपूर्ण हैं, यथा- **लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं** आदि।

वीतराग स्वयं निर्मल-निष्कलुष होते हैं, साथ ही दूसरों के लिए कषाय-प्रक्षालन में प्रेरक होते हैं। अरिहन्त तो बोधि प्रदान करने वाले लोक के दीपक होते हैं। वे लोक ने नाथ एवं सब जीवों के शरणदाता होते हैं। वे अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तचारित्र/सुख एवं अनन्तवीर्य से सम्पन्न होते हैं। सिद्ध अव्याबाध सुख में लीन रहते हैं।

जैन धर्म का मुख्य प्रतिपाद्य वीतरागता है। आज जैन धर्मानुयायी इस तथ्य को भूल रहे हैं, जिसे स्मरण रखने की आवश्यकता है। उसी के लिए सारा धर्म निरूपित है। आज धार्मिकों की प्रवृत्ति बाह्याचार में मीन-मेख निकालने के प्रति अधिक केन्द्रित है, वीतरागता के प्रतिपादन के प्रति नहीं। धर्म में यदि वीतरागता का लक्ष्य नहीं होगा तो पारस्परिक सौहार्द, मैत्री, सहिष्णुता आदि का विकास नहीं होगा एवं मूल लक्ष्य से भटक कर बाह्य आचार में ही अटक कर रह जायेंगे। वीतरागता का लक्ष्य जितना सुदृढ़ होगा, बाह्याचार के शुद्ध पालन में भी तब आनन्द की अनुभूति होगी। ■

संघ-विकास के तीन आधार : स्नेह, सद्भावना और संगठन

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.

संघ-समुन्नयन में सन्त-सतियों के साथ श्रावक-श्राविकाओं का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. ने जोधपुर में 13 सितम्बर 2003 को श्रावक-संघ की बैठकों के पूर्व प्रवचन में फरमाया कि संघ को सदैव जागरूक होना चाहिए तथा संघ का उन्नयन पारस्परिक स्नेह, सद्भावना एवं संगठन की भावना से होता है। इसके लिए कट्टरता की नहीं विवेकयुक्त दृढ़ता की आवश्यकता होती है। प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है। -*सम्पादक*

धर्मप्रेमी बन्धुओं!

प्रभु महावीर स्वामी का शासन सदा जयवन्त है। प्रभु महावीर तीस वर्ष तक गृहस्थाश्रम में रहे, फिर संयम अंगीकार किया। बारह वर्ष और तेरह पक्ष तक छद्मस्थ अवस्था में अनेक उपसर्ग और परीषह सहन करते हुए साधना के मार्ग में बढ़ते रहे। धीरे-धीरे साधना करते हुए प्रभु ने घाती कर्मों का क्षय कर केवलज्ञान-केवलदर्शन प्राप्त किया। तीर्थंकर नाम कर्म के कारण से चतुर्विध संघ की स्थापना की। आज वही संघ अक्षुण्ण रूप से निरन्तर चला आ रहा है।

संघ की बहुत बड़ी महिमा है। नंदीसूत्र में संघ को आठ उपमाओं से उपमित कर वन्दन किया गया है। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं का मिला-जुला संघ गुणों के कारण वन्दनीय है। गुण ही वन्दन के योग्य होता है।

नगर-रह चक्क-पउमे, चंदे सूरे समुद्द-मेरुम्मि
जो उवमिज्जई सययं तं संघं गुणायरं वंदे।।

संघ को नगर की उपमा दी; रथ की, पद्म की, चन्द्र की, सूर्य की उपमा दी। इस संघ को समुद्र और मेरु की उपमा से उपमित किया। किस तरह से यह संघ निरन्तर शासन-सेवा में अपने आपको अग्रसर करता हुआ महावीर प्रभु के शासन की जाहोजलाली कर रहा है। रत्नसंघ के साथ रत्न जुड़ा है। रत्न की बड़ी महिमा है। हाथियों में जो श्रेष्ठ होता है उसे हस्तीरत्न या गजरत्न कहते हैं। घोड़ों में श्रेष्ठ होता

है उसे अश्वरत्न कहते हैं। चक्रवर्ती के चौदह रत्नों की बात आपने सुन रखी है। जिस जाति की वस्तु श्रेष्ठ होती है वह रत्न की उपमा से उपमित होती है।

यह रत्नसंघ लम्बे समय से अपने आचार के कारण से, ज्ञान के कारण से, दर्शन के कारण से, चारित्र के कारण से, तप के कारण से, वीर्य पराक्रम पुरुषार्थ के कारण से प्रसिद्ध रहा है। अभी मुनिश्री(श्री गौतममुनि जी म.सा.) ने आचार की बात कही। पाँच प्रकार का आचार होता है—ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार। आचार का अर्थ है आचरण करना। जीवन के अन्दर आचरण किया जाय उसको आचार कहते हैं। ज्ञान का आचरण किया जाय वह ज्ञानाचार, दर्शन का आचरण किया जाय वह दर्शनाचार। संयम और चारित्र में पुरुषार्थ किया जाय वह चारित्राचार। तप में पुरुषार्थ तपाचार और इन सबमें पुरुषार्थ लगाना है वीर्याचार।

आचार की प्रधानता वाला रत्नसंघ अपनी परम्परा का पालन करते हुए आज भी अपनी विशेषता लेकर चल रहा है। यह संघ भले ही छोटे रूप में रहा, लम्बा-चौड़ा क्षेत्र नहीं, संतों की संख्या भी कई परम्पराओं से न्यून है, सतियों की संख्या भी उतनी नहीं, फिर भी यह संघ अपने गौरव को लेकर स्वतः प्रसिद्ध है। जहाँ भी आचार्य भगवन्त के संत पहुँच जाते हैं लोग सेवा करने में अपना गौरव समझते हैं। लोग यही समझते हैं कि ये आचार्य भगवन्त के संत-सती हैं।

आचार्य भगवन्त ने २०१५ में दिल्ली चातुर्मास किया, तीस वर्ष बाद २०४५ में चातुर्मास का हमें मौका मिला, फिर भी आचार्य भगवन्त की इतनी बड़ी छाप कि हमारे चातुर्मास को लेकर सबके मन में बड़ा प्रमोदभाव था। संतों के आचार-विचार देखकर दिल्लीवासियों की जिज्ञासा जगी कि जब ये संत ऐसे हैं तो इनके गुरुदेव कैसे होंगे? वे बसें लेकर सवाईमाधोपुर पहुंचे। गुरुदेव के दर्शन किए, वाणी सुनी और धन्य-धन्य हो गये। वापस आकर कहने लगे- हम तो भगवान के दर्शन करके आये हैं। हमने अरिहन्तों को नहीं देखा, गणधरों को नहीं देखा, पूर्वधरों को नहीं देखा। हमने आचार्य श्री हस्ती को देखा। आचार्य भगवन्त ने अपने संत-सतियों को एक ही शिक्षा दी- 'ज्ञान-दर्शन- चारित्र में आगे बढ़ो।' आज भी वह संघ अपने आचार की सुगन्ध के साथ बराबर आगे से आगे बढ़ता चल रहा है।

रत्नसंघ का अधिवेशन है। अधिवेशन का अर्थ समझते हैं न आप? 'अधि' उपसर्ग है, 'विश्' धातु प्रवेश करने के अर्थ में है। अतः अधिवेशन का अर्थ हुआ—संघ के अन्दर प्रवेश करना। संघ के अन्दर प्रवेश करना भी सौभाग्य का विषय है। आप संघ के अधिवेशन के प्रसंग से उपस्थित हुए हैं तो आपको विचार करना है कि रत्नसंघ आचार-विचार को लेकर आगे बढ़ता जाय। आप निरन्तर भगवन्तों के बतलाये मार्ग पर चलकर संघ की महिमा-गरिमा दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ायें। आप अधिवेशन का मतलब समझें। अधिवेशन संघ को संभालने की पूर्ति करता है। चलते-चलते कभी कार को भी संभालना पड़ता है। मकान को भी संभालना पड़ता है। जहाँ कहीं भी मकान में टूट-फूट हो रही है तो उसकी मरम्मत की आवश्यकता होती है। आप मकान को संभालते हैं, इसी तरह समय-समय पर अधिवेशन भी संघ को संभालने का काम करता है।

संघ में श्रावक निरन्तर योगदान देते आ रहे हैं, फिर भी संघ को आगे बढ़ाने में समय-समय पर जागृति की आवश्यकता है। आपके अधिवेशन होते हैं, सम्मेलन होते हैं उससे संघ में आई हुई शिथिलता दूर करनी होती है। शिथिलता बढ़ाने के लिए अधिवेशन की जरूरत नहीं होती। अधिवेशन तो ज्ञान-दर्शन-चारित्र की वृद्धि के लिए होता है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र में यदि शिथिलता आ गई तो उसको दूर करके जागरूकता उत्पन्न करने के लक्ष्य से सम्मेलन होता है।

किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, समाज, राष्ट्र को चिरकाल तक अवस्थित रखना है तो उसके लिए मार्ग है **स्नेह, सद्भावना और संगठन।** परस्पर गुरुभ्राताओं में स्नेह बढ़े। वात्सल्य भावना बढ़े। सम्मेलन का उपयोग जोड़ने में हो। आपका कोई भी गुरुभ्राता, चाहे वह देश में रहता हो या विदेश में, उसके प्रति वात्सल्य भाव हो।

अन्ने देसे जाया अन्ने देसे वड्ढिया।
जे जिनधम्मे अनुरत्ता ते सव्वे बांधवा भणिया।।

कोई अन्य देश में जन्मा हो, अन्य देश में बड़ा हुआ हो परन्तु जो धर्म में अनुरक्त है वह भाई है। जो भी एक देव-गुरु को मानने वाला है वह हमारा भाई है और उसके प्रति वात्सल्य भावना रखना समकित के अन्दर शुमार है। समकित के भी आठ अंग बताये हैं-

णिस्संकिय-णिक्कंखिय-णिव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य।

उवगूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ।।

जिनेन्द्र के वचनों में शंकारहित, प्रदर्शन की आकांक्षा से रहित, धर्म के फल में संदेह रहित, अमूढ़ दृष्टि, गुणियों का गुण वर्णन, समकित से गिरने वाले को स्थिर करना, सहधर्मी के प्रति वात्सल्य भावना तथा धर्म की प्रभावना ये समकित के आठ अंग हैं।

इनमें वात्सल्य भावना का बड़ा महत्त्व है। पुराने समय में स्वामिवात्सल्य होते। उस समय की बात अलग थी, आज अलग है। स्वामिवात्सल्य का मतलब है एक स्वामी को मानने वालों के प्रति वात्सल्य भावना रखना, उनके दुःख-दर्द मिटाने की तरफ ध्यान देना। पहले एक-दूसरा एक-दूसरे को देखकर सहयोग की भावना करता। आज तो खाने-पीने की बात रह गई है। आज लोगों का जीवन संकुचित हो रहा है। अपने भाइयों के प्रति जैसी भावना रहनी चाहिये वह नहीं है। आज तो मैं, मेरी बीवी और मेरा बच्चा—बस इसकी ही चिंता है, दूसरों की नहीं। जहाँ स्वधर्मी भाइयों के प्रति वात्सल्य भावना रहनी चाहिये, एक-दूसरे के दुःख-दर्द में सहयोग होना चाहिये वह बात कम ही देखने में आ रही है। आज तो परिवारजनों के लिए भी वैसी भावना नहीं रही। होना तो यह चाहिये कि जो भी हमारे स्वधर्मी भाई हैं, एक देव-गुरु को मानने वाले हैं उन सबके प्रति सद्भावना हो।

एक गाय का बछड़े के प्रति भी प्रेम होता है। गाय जंगल से चर कर आती है तो सबसे पहले बछड़े के पास आती है। बछड़ा अन्दर है, गाय बाहर है तो आवाज लगाकर मिलने का प्रयास करती है। जैसे गाय का बछड़े के साथ वात्सल्य है वैसी ही भावना अपने गुरुभ्राताओं के साथ रहनी चाहिये। गाय का बछड़े के प्रति स्नेह संबंध होता है वैसे ही स्वधर्मी भाइयों के साथ स्नेह का संबंध रहना चाहिये।

दूसरी बात है-**सद्भावना।** सबके प्रति सद्भावना हो। धर्म की दृष्टि से गुरुभ्राताओं में सद्भावना बढ़े। कोई तरक्की कर रहा है, ऊँचे पद पर पहुँचा है तो यह सोचे कि वह संघ के लिए कभी काम आयेगा। उसके प्रति स्नेहभाव हो, ईर्ष्या का भाव नहीं। आज प्रमोद के भावों की जरूरत है। 'गुणिषु प्रमोदं', की अगर सद्भावना होगी तो सामने वाले की चाहे जितनी दुर्भावना है, आपकी सद्भावना देखकर वह बदलेगा ही। यही भावना आगे जाकर संगठन के रूप में बनती है।

संगठन एक भावना-एक विचार वालों का होता है। जहाँ एकता

होती है उसी की कीमत है। बिन्दियां चाहे कितनी ही क्यों न हों एका नहीं तो उनकी कोई कीमत नहीं और एका है तो बिन्दियों की कीमत है। स्वधर्मी भाइयों का संगठन बढे। मिलकर के जो काम होता है वह एक से नहीं हो सकता। एक-एक तिनका अलग-अलग है तो उसका महत्त्व नहीं है। तिनके जब तक अलग-अलग हैं तो उन्हें कोई भी तोड़ सकता है। वे ही तिनके संगठित हो जायें तो उन्हें तोड़ा नहीं जा सकता। एक धागा सहज टूट सकता है, पर धागों से बना रस्सा नहीं टूटता। हाथी की भी ताकत नहीं जो रस्से को आसानी से तोड़ सके। आप संगठित हैं तो कोई भी आपका बिगाड़ नहीं कर सकता।

आज संगठन की आवश्यकता है, विघटन की नहीं। आज कट्टरता की नहीं, दृढ़ता की जरूरत हैं। ऐसा नहीं कि गंगा गये गंगादास, यमुना गये यमुनादास। पानी तेरा रंग कैसा? जिसमें मिलाये वैसा। आपका आज दिन तक संगठन चला आ रहा है। एक आचार्य की नेश्राय में रत्नसंघ परम्परा चलती आ रही है। कोई निकल भी गया तो वह पनप नहीं पाया। निकलने वाला अपना अलग संगठन जमा नहीं पाया। यह परम्परा एक आचार्य की नेश्राय में निर्विघ्न चलती रही है, आगे भी चलती रहेगी। यह इस परम्परा की विशेषता रही है।

यह परम्परा दूसरी कई परम्पराओं से श्रेष्ठ है। आचार्य भगवन्त आचार के लिए बराबर कहा करते थे। आज भी आचार्य श्री (श्री हीराचन्द्र जी म.सा.) आचार के पूरे पक्षपाती हैं, ढिलाई की ओर कभी कदम नहीं रखा। कभी किसी ने उपचार के कारण से छूट लेनी भी चाही तो आचार्य श्री ने कह दिया इतनी छोटी-छोटी बातों के लिए वाहन की बात न करें। आप विहार नहीं कर सकते तो वहीं विराजें, साता हो तब विहार करें। आचार्य श्री ढिलाई के पक्षधर नहीं हैं। आज भी मैं देख रहा हूँ आचार पक्ष में कुछ चरण बढ़े हैं, पीछे हटने का काम नहीं है। आप भी आचार का पालन करते हुए संघ को और गौरवान्वित करें।

हाँ, छद्मस्थ होने के नाते कुछ कमियाँ रह सकती हैं। आज श्रावक संघ में भी कुछ कमी महसूस होती है। श्रावक संघ इन कमियों को बाहर उजागर नहीं करते हुए कमियों को मिटाकर संगठन को दृढ़ता प्रदान करे। ऐसा नहीं कि जिसको जिम्मेदारी दे दी वही सब करे। आचार्य भगवन्त चतुर्विध संघ की गाड़ी अकेले खींच गये। ग्रीनपार्क, पाली में आचार्य भगवन्त की जन्म तिथि थी उस दिन भगवन्त ने कहा

कि इस चतुर्विध संघ के रथ को मैं अकेला हांकता रहा, अब चतुर्विध संघ से अपेक्षा है कि वह हिलमिल कर कंधे से कंधा मिलाकर चतुर्विध संघ के रथ को बराबर चलाता रहे। भगवन्त स्वास्थ्य के कारण से सबको यह बात सुना नहीं सके, इसीलिए मैंने भगवन्त के शब्द उस समय सुनाये। चतुर्विध संघ आज पूर्णतया श्रद्धापूर्वक समर्पित है।

यह समर्पण रहना चाहिये। इस समर्पण की बहुत बड़ी जरूरत है। नेता सब नहीं बनते। नेता एक होता है, सहयोगी बहुत होते हैं। नेता अकेला कुछ कर भी नहीं सकता। किसी पदाधिकारी को कहा जाय कि वह भी थोड़ा समय निकाले। अपने आपको निवृत्त करके संघ के लिए समय का भोग देते हुए संघ को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करे, किन्तु अकेला पदाधिकारी भी कुछ नहीं कर सकता, उसको भी सहयोगियों के सहयोग की आवश्यकता होती है। किन्तु सेवा के लिए समय निकाले तो पद को सफलता के साथ संभाला जा सकता है। तभी पद की शोभा भी है।

सेवा से सामने वाले का हृदय जीता जाता है। अगर पदाधिकारी कर्त्तव्य का पालन करते रहें तो सहयोगी भी उन्हें बराबर सहयोग देंगे। संघ का काम सबका है, केवल मंत्री जी संभाल लें यह नहीं हो सकता। यहाँ जो भी है उसकी भी वैसी ही ड्यूटी है। सभी मिलकर समस्या का समाधान निकाल सकते हैं, इसलिये सबको मिलने की जरूरत है। घर के अन्दर माताजी नहीं हो और दूसरा भी कोई परोसने वाला नहीं हो तो हाथ से लेकर खाते हैं या नहीं? मेहमान आ जाय तो? घर का हर सदस्य अपने-आपको एक इकाई समझकर बराबर योगदान दे तभी वह घर, घर बना रहता है। इसी तरह से संघ का प्रत्येक सदस्य संघ-सेवा में सहयोग करे तो ही संघ आगे बढ़ सकता है।

आज संगठन की बहुत बड़ी आवश्यकता है। अपने संघ को किस तरह से संचालित किया जाय, यह बात सबके सोचने की है। पुराने श्रावक चले गये। हम उनके गुणगान करते हैं। गुणगान करने के पीछे भी यही लक्ष्य है कि उनसे कुछ प्रेरणा ली जाए। आपके स्वाभिमान को जगाने के लिए पूर्वजों की बात कही जाती है। जो श्रावक चले गये वे वापस आकर सेवा करने से रहे। अब तो जो हैं उन्हीं को सेवा करनी है। आप उनके आदर्शों को याद करके सहारा लें, पर सेवा में कभी कोताही न करें। आप अपने पूर्वजों के नाम पर कब तक

दुकानदारी चलाते रहेंगे? आखिर आपको संघ के प्रति सद्भावना रखते हुए समर्पण दृढ़ करना होगा।

आज के युग में जब अन्य-अन्य परम्पराएँ, सम्प्रदायें अपने-अपने व्यवहार को लेकर चल रही हैं ऐसे समय में आप दृढ़ता के साथ चरण नहीं बढ़ायेंगे तो अस्तित्व की रक्षा खतरे में पड़ सकती है। दूसरी-दूसरी सम्प्रदायें आज यहाँ तक उतर आई हैं कि हमारे क्षेत्र में प्रवेश न करें। ऐसी स्थिति में हमें सोचने की आवश्यकता है। आचार्य भगवन्त एक ऐसे ज्योतिर्धर प्रकाशपुंज सूर्य थे, जिनका सर्वत्र प्रकाश था। वे जहाँ भी जाते अपने प्रभाव के कारण सब लोग उनके हो जाते, पर आज वह भावना धीरे-धीरे कम होती जा रही है। भावना के अन्दर तेजी के साथ बदलाव आ रहा है। आचार्य भगवन्त के प्रति तो सबकी भावना थी, अगर कहीं भावना नहीं भी थी तो उनका पुण्य प्रताप इतना जबरदस्त था कि सब झुक जाते थे। हमें किसी के प्रति असद्भावना नहीं दिखानी है, पर अपने आपको दृढ़ रखना तो जरूरी है।

एक समय था पूज्यपाद आचार्य श्री शोभाचन्द जी महाराज आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज की दीक्षा के बाद बीकानेर की तरफ पधारे। वहाँ गये तो वहाँ पर कट्टरता का रूप नजर आया। उस समय युगप्रधान आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज जो सतारा विराज रहे थे, के कानों में क्षेत्र की कट्टरता की बात पहुँची तो उन्होंने श्रावकों को संकेत कराया- मैं हूँ वैसे ही आचार्य श्री शोभाचन्द जी महाराज हैं, तुम उनकी सेवा-भक्ति करो। थली में पानी गहरा होता है। पानी निकालते तो देर लगती है, पर निकालते हैं तो सीर चालू रहती है। पूज्य श्री शोभाचन्द जी महाराज २६ दिन तक वहाँ विराजे, श्रावकों ने भक्ति के साथ सेवा की। इस तरह पारस्परिक सद्भावना फलदायी होती है।

वर्तमान समय में संगठन के साथ दृढ़ता की जरूरत है, कट्टरता की नहीं। आचार्य भगवन्त कट्टरता को पसन्द नहीं करते। कट्टरता काटने का काम करती है, दृढता जमाने का। कट्टरता में विवेक नहीं होता, दृढ़ता में विवेक होता है। दृढ़ता होनी चाहिये। हम कभी नहीं कहते उनको मत मानों या उनको आहार-पानी मत दो। हम तो यही कहते हैं कि आपको विवेक युक्त दृढ़ता रखनी चाहिये। संगठन के बिना काम नहीं चलता।

स्नेह, सद्भावना और संगठन ये तीन चीजे जहाँ होती हैं वह

संघ चिरकाल तक अपना अस्तित्व लेकर सुचारु चलता है। यह संघ भी इसी भावना को लेकर आगे बढ़े। हमारा किसी के प्रति द्वेषभाव नहीं हो, सबके प्रति सद्भावना हो। सद्भावना होगी तो अगले की दुर्भावना भी सद्भावना में बदलेगी ही। आचार्य भगवन्त की उदारता थी इस कारण दूसरे संतों को रत्नसंघ के बाहुल्य वाले क्षेत्र में चातुर्मास का मौका देते। वर्षों तक भोपालगढ़ में ज्ञानगच्छ की सतियां रहीं, चातुर्मास किए। आचार्य भगवन्त भोलावन देते रहे कि आप इनकी अच्छी तरह सेवा करना। आचार्य भगवन्त तो अन्यान्य परम्पराओं के संतों को रत्नसंघीय क्षेत्र में चातुर्मास का संकेत करते रहते। यहाँ भी संत कोठारी भवन में चातुर्मास के लिए आये थे। आचार्य भगवन्त ने उनसे कहा कि आप पावटा क्षेत्र भी खुला रखना। पावटा वालों ने जो सेवा की, संत आज भी उस सेवा को याद करते हैं।

आचार्य भगवन्त में उदारता थी तो श्रावकों में भी उदारता का भाव रहा है। 'गुरु एक सेवा अनेक' आप इस बात को लेकर कभी इसका गलत उपयोग नहीं करें। 'गुरु एक सेवा अनेक' उसमें चाहिये विवेक। किनके साथ किस तरह का व्यवहार करना यह विवेक जागृत होता है तो संघ-संगठन ही नहीं संत-सती भी निर्दोष आचरण कर सकते हैं।

एक श्रावक की जागरूकता संत-सतियों के लिए चेतावनी होती है। आप जागरूक रहकर संघ को मजबूत करते रहेंगे तो आपका आचार्य के प्रति, संतों के प्रति, सतियों के प्रति श्रद्धा-समर्पण बना रहेगा। आपको जहाँ भी गलत लगे तो श्रावक चेताये। वह 'अम्मापियरो' का दायित्व निर्वहन करे। भगवान ने चतुर्विध संघ की स्थापना में आपको अधिकार दिया। अगर छद्मस्थता में मन की कचावट के कारण कोई शिथिलता की ओर जाता है तो आप श्रावकों का कर्त्तव्य है-हाथ जोड़ कर निवेदन कर सकते हैं। आप पूरा ध्यान रखें। आपकी संत- सतियों के प्रति सद्भावना है तो आप निवेदन करें, न कि दुर्भावना से बाजार भाव ढोल पीटें। शिथिलता का पोषण न हो, साथ ही किसी को हल्का बताने की भी जरूरत नहीं। कमी है तो उसे मिटाने का प्रयास करें। आप प्रयास करेंगे तो आज नहीं तो कल उन्हें रास्ते पर आना पड़ेगा। आप सद्भावना के साथ कमजोरी निकालने का प्रयास करें। आप स्नेह, सद्भावना और सहयोग का रूप पकड़ कर चलेंगे तो आपका संघ

उन्नति करेगा और संघ की गरिमा बढ़ती जायेगी।

आप मिलजुल कर अपने भाइयों के साथ स्नेह संबंध प्रगाढ़ करें। घर के भाइयों की तो फिर भी पीढ़ियाँ पड़ जाती हैं। ये मेरे दादाजी के, ये मेरे पिताजी के भाई के लड़के हैं, इस प्रकार घर के भाइयों में पीढ़ियाँ पड़ सकती हैं, पर गुरुभ्राता में पीढ़ियों का काम नहीं। यह कई पीढ़ियों तक चलता रहेगा। गुरुभ्राता का संबंध हृदय से जुड़ा संबंध होता है। यह संबंध निरन्तर बढ़ते रहना चाहिए। आज भी गुरु कृपा से जहाँ कहीं संत-सतियों के चातुर्मास हैं सब तरफ चातुर्मास सफलतापूर्वक चल रहे हैं, ऐसे समाचार मिल रहे हैं। आचार्य भगवन्त की हमारे कार्यों में परोक्ष प्रेरणा मिल रही है। आप स्नेह, सद्भावना के साथ संगठन को आगे बढ़ायें, यही मंगल मनीषा है।

सम्यग्दर्शन की महिमा

सौ. कमला सिंघवी

साधना की प्रथम सीढ़ी सम्यग्दर्शन को कहा है। दर्शन की नींव पर धर्म का महल ठहरता है। सम्यग्दर्शन से ही साधना का शुभारम्भ होता है।

आध्यात्मिक साधना के भव्य भवन में प्रवेश करने के लिए द्वार के समान सम्यग्दर्शन है। ज्ञातासूत्र में सम्यग्दर्शन को 'चिन्तामणि रत्न' की उपमा दी है।

यह प्राप्त होने पर जीवन ज्ञान की रोशनी से जगमगाने लगता है। इसके प्राप्त होने पर कषायों का शमन हो जाता है। जब आत्मा में सम्यक्त्व का उदय होता है तो एक प्रकार की अनिर्वचनीय-शान्ति प्राप्त होती है, जिसे प्रशम भाव कहते हैं। सम्यग्द्रष्टि, अनुकुल प्रतिकूल, परिस्थितियों में भी समभाव रखता है। वह दु:खी जीवों के प्रति, अनुकम्पा व करुणा की भावना से उनका दु:ख दूर करने का प्रयत्न करता है। सम्यग्दर्शन वह पारसमणि है, जिसके स्पर्श मात्र से मिथ्यात्व और अज्ञान रूपी लोहा सम्यक्त्व और ज्ञान रूपी स्वर्ण में बदल जाता है।

मिथ्यादृष्टि वर्षों तक साधना करके भी उतने कर्मों को नष्ट नहीं कर सकता जितने कर्म सम्यग्दृष्टि कुछ क्षणों की साधना से नष्ट कर लेता है। सम्यग्दर्शन सब ऋद्धियों में महाऋद्धि है। वह सभी प्रकार की सिद्धि करने वाला है।

-अध्यापिका

स्वाध्यायी ज्ञान मंदिर जैन पाठशाला, भड़गांव (महा.)

धर्मसंघों में प्रदूषण : एक चिन्तन

श्री प्रेमचन्द कोठारी

श्री प्रेमचन्द जी कोठारी एक जागरूक संघसेवी श्रावक होने के साथ विद्वान्, चिन्तक एवं वीतराग धर्म की शुद्धता के पक्षधर हैं। उनका 'सुधर्म प्रवचन-संदेश' में प्रकाशित चिन्तनपरक लेख हमें श्री मनोहरलाल जी जैन धार वालों ने प्रेषित किया है। लेख का उत्तरार्द्ध अधिक प्रासंगिक एवं उपयोगी लगने से उसे प्रकाशित किया जा रहा है। *-सम्पादक*

हमारी समस्त साधना का लक्ष्य मात्र साधना करना ही नहीं है, बल्कि स्वस्थ साधना के माध्यम से अपने को व संघ के सब सदस्यों को वीतरागता की ओर बढ़ाना है। आज देखने को मिल रहा है कि धर्म संघों ने राजनैतिकता का रूप ले लिया है- अनुकूल शिष्य- शिष्याओं व प्रतिकूल शिष्य-शिष्याओं के साथ व्यवहार में अन्तर रखना, गुरुदेव का अपेक्षित अनुकूल व्यवहार नहीं लगने पर कोई न कोई कारण, बहाना बनाकर शिष्यों द्वारा अलग गुट बनाना, अलग सम्प्रदाय बनाना, इसी प्रकार श्रावक समाज में भी एक दूसरों की बुराई करना, गुटबन्दी करना, पदों के लिए दांवपेच खेलना, निजी स्वार्थों की पूर्ति करना आदि-आदि भयंकर अवांछित कार्य रूपी दुर्गन्ध इस वीतराग संघ रूपी सुगंधित बाग को प्रदूषित कर रही है। जैसे कुशल व्यापारी का लक्ष्य धन कमाने का, कुशल विद्याभिलाषी का लक्ष्य विद्याध्ययन करने का रहता है वैसे ही हम सब **वीतराग उपासकों का पावन कर्त्तव्य है कि हम साधना व व्यवहार की प्रत्येक प्रवृत्ति में वीतराग मार्ग के लक्ष्य को नहीं भूलें। हमको सोचने, बोलने, करने में रागद्वेष की दूषित प्रवृत्ति से सदैव बचने का लक्ष्य रखना चाहिए। धर्म-संघ की सुरक्षा, धर्म-संघ का विकास, आडम्बर, नारेबाजी, पेम्पलेटबाजी, संख्या की बहुलता आदि के आधार से होने वाला नहीं है। इसकी सुरक्षा व विकास सादगी, सरलता, श्रद्धा, आचरण, समर्पणता, आत्मीयता आदि से होने वाला है। साधक की जीभ नहीं जीवन शैली बोलती है।**

आज संघ के सदस्यों में बिखराव, तनाव, कड़वाहट, परायापन आदि विषम अवांछित परिस्थितियाँ देखने को मिल रही हैं। हम सब (साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका) देदीप्यमान सर्वज्ञ-सर्वदर्शी भगवान महावीर के उपासक हैं, हम सबका उपास्य देव एक है अर्थात् हम सब एक

विशाल भव्य समृद्ध परिवार के सदस्य हैं। जिस परिवार या संघ में फूट होती है, वहाँ लूट होती है। हमारी विषमता के कारण हैं—वैचारिक भिन्नता, आचार संहिता की भिन्न्ता, आग्रह वृत्ति, अहं पोषण की वृत्ति, सोचने बोलने व करने में एकरूपता का अभाव, एक दूसरे पर आघात-प्रत्याघात की वृत्ति, साम्प्रदायिक संकीर्ण वृत्ति आदि-आदि। हम सभी का पावन कर्त्तव्य है कि हम वैचारिक व आचरण संबंधी भिन्नता होते हुए भी एक-दूसरे पर दोषारोपण, छींटाकसी, आग्रहवृत्ति आदि को छोड़कर आगमाज्ञा को प्रधानता देवें, एक दूसरे के विकास में प्रसन्न होवें क्योंकि **अपने भाई की उन्नति देख कर ईर्ष्या करने वाला भाई नहीं दुश्मन होता है।** हम जैसा मानते व बोलते हैं वैसा ही जीवन जिएँ बोलने, करने में अन्तर होने से एकरूपता नहीं होने से नवयुवकों में घृणा पैदा होती है, विकास रुकता है, विश्वास बिगड़ता है। अगर हम कथनी जैसी करनी नहीं कर सकते लेकिन उस तरह का जीवन जीने वाले अपने आपको बताते हैं तो हम अपने साथ, संघ के साथ व जिनेश्वर देव के साथ विश्वासघात करते हैं। ऐसी स्थिति में हमको निःसंकोच अपने को उस क्षेत्र से हटा लेना चाहिए ताकि संघ में ऊहापोह या अनावश्यक चर्चा नहीं हो।

सम्प्रदाय एक व्यवस्था है। व्यवस्था की दृष्टि से जैसे देश में अनेक प्रान्त होते हैं तथा प्रान्त में जिले होते हैं, लेकिन सब प्रान्त एवं जिले राष्ट्रीय दृष्टि से एक होते हैं। ठीक इसी प्रकार हम सम्प्रदाय की व्यवस्था की दृष्टि से ज्ञान, दर्शन, चारित्र के विकास एवं उनके प्रति अखण्ड विश्वास का पुरुषार्थ अवश्य करें, लेकिन **मेरी मान्यता वाली सम्प्रदाय ही सर्वश्रेष्ठ है, मेरी मान्यता ही सर्वश्रेष्ठ है, मेरे गुरु ही सर्वश्रेष्ठ हैं, मेरी सम्प्रदाय के अलावा सब जिनाज्ञा के विपरीत हैं, ऐसी मानसिकताओं से साम्प्रदायिक संकीर्णता पैदा होती है।** हमको चाहिए कि हम किसी का विरोध किये बिना अपनी आराधना करते रहें, हम मैत्री, कारुण्य, माध्यस्थ, प्रमोद भावना के पुजारी हैं, इन्हीं भावनाओं को हमें आचरण में लाना चाहिए। **साम्प्रदायिक संकीर्णता के कारण अपनी सम्प्रदाय की सब बातें उचित लगती हैं, आगमवाणी के स्थान पर सम्प्रदाय की वाणी का अधिक महत्त्व लगने लगता है, भगवान महावीर के स्थान पर गुरु का महत्त्व व जयकार अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है,**

अपनी सम्प्रदाय की बड़ी से बड़ी गलती सामान्य-सी भी प्रतीत नहीं होती है, दूसरी सम्प्रदाय की छोटी-सी गलती भी पहाड़ जैसी दिखाई देती है। उनमें बिना दोष ही दोष दिखाई देते हैं। इन सब प्रवृत्तियों से साम्प्रदायिकता, संकीर्णता, कड़वाहट, मनमुटाव आदि बढ़ते हैं, संघ का चारों ओर से ह्रास होता है, नई पीढ़ी धर्म से घृणा करती है, दूर होती है।

अतः हमको संघ का, अपना चहुँमुखी विकास करने के लिए एक-दूसरे पर आघात-प्रत्याघात नहीं करके आगमाज्ञा को सर्वोपरि रखकर अपने ढंग से अपनी गति करना चाहिये, अन्य सम्प्रदायों के साथ अविरोधी व्यवहार रखना चाहिये, धर्म व धर्मी का मंडन, पाप का खण्डन अवश्य हो, लेकिन पापी का खण्डन नहीं होना चाहिए। एकता का बहुत बड़ा महत्त्व है, एक-एक मिलकर ग्यारह होते हैं, सूर्य की बिखरी किरणों को केन्द्रित करने पर ऊर्जा शक्ति प्राप्त होती है जिससे ईंधन की समस्या का आज समाधान हो रहा है। शरीर के अंग भिन्न-भिन्न होने पर भी सारे शरीर में एक खून व आत्मीयता रहती है। पैर में कांटा लगने पर आँखे आंसू निकालती हैं, सारा शरीर ज्वरित हो जाता है। ताश के पत्तों में तुरुप के इक्के का महत्त्व है, ऐसे ही एकता का महत्त्व है, एकता की आज अत्यन्त आवश्यकता है।

सभी सम्प्रदायों, सभी धर्म संघ के सभी सदस्यों (साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका) से करबद्ध निवेदन है कि हम सब एकजुट होकर पुरानी कड़वाहटों को भुला कर भगवान महावीर द्वारा निर्मित इस भव्य कल्याणकारी परमोपकारी चतुर्विध संघ को प्रदूषण से बचावें, सबमें आगमों के प्रति श्रद्धा जगावें, आगमोक्त आचरण को प्रधानता देकर जीवन में उतारें, राग-द्वेष की प्रवृत्ति से अपने को व अपने साथियों को बचावें, सब स्वधर्मी बन्धुओं के साथ आत्मीय व्यवहार कर उनका बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, पारिवारिक विकास का रचनात्मक लक्ष्य रखावें। अन्त में जिनेश्वर देव से प्रार्थना है कि सभी का कल्याण हो, सभी का मंगल हो, सभी का आध्यात्मिक विकास हो, सभी के व्यावहारिक जीवन में आध्यात्मिकता आवे, सबमें आपस में प्रेम का झरना बहे, सब शीघ्र मोक्षगामी बनें। धर्म की, धर्म संघों की जय हो, विजय हो।

-चौगान गेट, बूंदी (राज.)

मोह और प्रेम में भेद

श्री सम्पतराज डोसी

अधिकांश व्यक्ति मोह और प्रेम को एकार्थक, समान एवं पर्यायवाची शब्द के रूप में ही जानते व मानते हैं। जबकि दोनों शब्द विलोम अर्थात् विपरीत अर्थ वाले हैं। मोह अर्थात् ममत्व या ममता को तो शास्त्रकारों ने आर्थिक,पारिवारिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक आदि सभी प्रकार के दुःखों का मूल कहा है और आठ कर्मों का राजा भी मोह कर्म ही कहलाता है। संसार में जितने भी पाप कर्म हैं उनमें किसी न किसी रूप में यह छुपा हुआ होता है। राग एवं द्वेष जिनको शास्त्रकारों ने सभी कार्यों की जड़ या बीज कहा वे दोनों मोह के ही मुख्य भेद हैं।

रागो य दोसो बिय कम्मबीयं।।-उत्तराध्ययन अ.32 गाथा 7

राग-द्वेष रूप भाव शत्रुओं को जीतने वालों को ही अरिहन्त कहा जाता है। उनको हम नमस्कार मन्त्र के प्रथम पद में नमस्कार करते हैं। इन राग, द्वेष रूप भाव शत्रुओं का विस्तार ही चार कषायों अर्थात् क्रोध, मान, माया और लोभ के रूप में होता है। कषाय ही सारे संसार परिभ्रमण का कारण माना गया है।

कोहो य माणो य अणिग्गहिया, माया य लोहो य पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स।।

-दश.अध्ययन 8 गाथा 40

मोह का विलोम शब्द 'प्रेम' है। जैसे-जैसे मोह घटता है वैसे-वैसे प्रेम बढ़ता है। कहने को तो कह दिया जाता है कि भाई-भाई में, पिता-पुत्र में, पति-पत्नी में अच्छा प्रेम है, पर वास्तव में अधिकांश तौर पर तो होता मोह ही है। मोह की जड़ स्वार्थ है। उदाहरण के लिए जब पुत्र-जन्म होता है, उस समय जितनी खुशी मानी जाती है उतनी पुत्री के जन्म पर नहीं, जबकि सन्तान दोनों स्वयं की है। इसी प्रकार स्वयं की शादी में व्यक्ति को जितनी खुशी या राग होता है, क्या अन्य संबंधी या मित्र आदि की शादी में उतनी ही खुशी होती है। शादी के समय या पुत्र-जन्म के समय जितनी खुशी या राग होता है, क्या वह खुशी या राग बाद में वर्षों तक रहता है? कभी-कभी पिता-पुत्र, पति-पत्नी आपस में लड़ते-झगड़ते भी देखे जाते हैं।

जब तक परस्पर राग होता है तब तक तो एक-दूसरे का

आकर्षण बना रहता है। परन्तु राग होने पर लड़ाई-झगड़ा भी निश्चित ही होता है। राग को ज्ञानियों ने मीठा जहर (स्वीट पोइजन) कहा है। ज्यों-ज्यों स्वार्थ में कमी होती जाती है त्यों-त्यों राग धीरे-धीरे कम पड़ता है और विपरीत होने पर राग भी द्वेष में बदल जाता है; व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति भले ही वही हो। व्यक्ति से लेकर विश्व तक में जितने भी तनाव के कारण हैं उनमें अधिकांश तौर पर मैं और मेरापन ही छुपा होता है।

प्रेम की जड़ निःस्वार्थतापूर्वक करुणा, दया, मैत्री, सहिष्णुता, क्षमा आदि में होती हैं। पूर्ण निःस्वार्थ भावना या किसी भी आशा या अपेक्षा के बिना किया गया कार्य सेवा कहलाता है। शास्त्रीय भाषा में इसे वैयावृत्य कहा जाता है, जो परम निर्जरा का कारण एवं तत्काल शांति देने वाला होता है। कई कवियों ने प्रेम को करने योग्य एवं मोह को त्याज्य बताया है-

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।।(मेरी भावना)

यह मीठा प्रेम का प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला।
प्रेम गुरु है, प्रेम है चेला, प्रेम धर्म है, प्रेम है मैला।
प्रेम की फेरो माला, कोई फैरेगा किस्मतवाला।।

कबीरदासजी ने भी कहा है-

पोथी पढ़ पढ़ जग मुवा, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पण्डित होय।।

परिवार में पिता-पुत्र, भाई-भाई, पति-पत्नी आदि के लिये किये गये लाखों-करोड़ों के खर्च से न पुण्य होता है न धर्म, उलटा पाप ही होता है। क्योंकि वह खर्च राग एवं स्वार्थ के वश होकर किया जाता है। स्वार्थ चाहे धन प्राप्ति का हो, सेवा का हो अथवा मात्र अहं अर्जन का हो।

अहं का स्वार्थ तो प्रायः समझ में ही नहीं आता है। समाज एवं धर्म के कार्य में प्रायः पदाधिकारी या बिना पैसा लिये कार्यकर्ता अपने आपको निःस्वार्थ सेवा करना मानते हैं और समाज भी उनको निःस्वार्थ सेवा करने वाला ही मानता हैं, पर अहं का सूक्ष्म स्वार्थ तो प्रायः अधिकांश पदाधिकारी या कार्यकर्ता पूरा करते ही हैं। इसीलिये जब उनके अहं पर ठेस पहुंचती है तो उनको भी टेंशन रूप अशान्ति होती है।

कोई भी पाप चाहे हिंसा, झूठ, चोरी आदि हो या क्रोध, मान,

माया, लोभ अथवा मोह एवं राग ही क्यों न हो, अशान्त हुए बिना पाप नहीं किया जा सकता, जबकि प्रेम निःस्वार्थ होने से टेंशन रहित होता है।

ममत्व और अहंत्व चाहे गृहस्थ वर्ग में धन, परिवार का हो चाहे साधु वर्ग में संघ एवं सम्प्रदाय का हो, त्याज्य है। आज प्रायः अधिकांश समाज इससे गहरे ग्रसित हैं और होते जा रहे हैं। किन्तु मोह का फल तो अशान्ति एवं टेंशन रूप ही होना है।

आज आवश्यकता है हमको मोह और प्रेम के रहस्य को समझ कर वीतरागता के मार्ग पर बढ़ने की, जिससे स्व और पर दोनों का कल्याण कर सकें।

-डागा बाजार, जोधपुर

दीक्षा-दिवस कार्तिक शुक्ला ६ पर

मनाओ दीक्षा महोत्सव आज

(तर्ज- देख तेरे संसार की हालत)

श्री बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल'

शासन नायक हीरा गुरु को मेरा हो प्रणाम।
मनाओ दीक्षा महोत्सव आज।
जन्में है इस धरती तल पर लगते सूर्य समान।।टेर।।
मोतीलाल जी के घर आये, मोहिनी माँ के मन को भाये,
नर नारी मिल मंगल गाये, मानवता का मान बढ़ायें।
जन्म आपको पीपाड़ शहर में, गांधी कुल की शान।।
रत्नत्रय की साधना करते, जैनाचार्य जी आप कहाते,
राग द्वेष को दूर हटाते, विश्व शांति संदेश सुनाते।
शशी सम शीतल मधु सम मीठे, क्रांतिकारी महान्।।
आगम वाणी गुरु फरमाते, दया धर्म का पाठ पढ़ाते,
गुरु हीरा सबको समझाते, सत्य धर्म का मर्म बताते,
त्यागी, तपस्वी, सरल स्वभावी, गुण रत्नों की खान।।
संयम से हो प्यार हमारा, असंयम से रहे किनारा,
हम सबका यह सच्चा नारा, अमर रहे गुरु हीरा हमारा,
विनती हमारी सुनलो गुरुवर, नैया खेवन हार।।
शासन नायक हीरा गुरु को मेरा हो प्रणाम
मनाओ दीक्षा महोत्सव आज।।

-मुम्बई (महा.)

संस्कारों से व्यक्तित्व का निर्माण

श्री पदमचन्द गांधी

आज समाज एवं युग की अन्तहीन समस्याओं का मूल कारण संस्कारजन्य चरित्र-निर्माण के महान् कार्यों की उपेक्षा है। आज मानव क्षणिक सुख-भोगों एवं क्षुद्र स्वार्थों की अंधी दौड़ में जीवन के इस सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य को भूल गया है। आज के समय मानव बाह्य प्रगति के नये-नये प्रतिमानों को छूते हुए भी आन्तरिक अवनति, पतन एवं पराभव की पीड़ा से त्रस्त है, जो गंभीर मनोरोगों से लेकर कलह, अशान्ति एवं गहन विषाद के रूप में उसके जीवन को दूभर किए हुए है। संस्कार-विहीन मानव में समाधान के ढेरों प्रयास जीवन के खाई-खंदकों को पाटने के असफल उपचार सिद्ध हो रहे हैं। आज का मानव संक्लेशों, दुराचारों, पापाचार आदि से घिर गया है, क्योंकि आज चरित्र-निर्माण की तरफ कोई ध्यान नहीं देता है। आज हर परिवार की स्थिति एक जैसी ही नजर आती है। तड़क-भड़क की चकाचौंध में संस्कार एवं चरित्र-निर्माण नगण्य हो गया है।

संस्कार आखिर क्या हैं? क्या सुव्यवस्थित जीवन जीना संस्कार है? क्या सही पद्धति को अपना कर नियमबद्ध अनुसरण करना संस्कार है? नहीं, क्योंकि संस्कार नियमों में मर्यादित जीवन को सुव्यवस्थित कर जीने की कला सिखाता है। मात्र एक ही गुण को हम संस्कार नहीं कह सकते हैं। यह तो गुणों का समुच्चय है। इसमें सदाचरण, चरित्र निर्माण, विश्वसनीयता, आदरभाव, विनम्रता, आज्ञापालन, स्वविवेक, दिव्यदृष्टि, उच्चमनोवृत्ति, करुणा, दया, वचनबद्धता, श्रेष्ठ निर्णय-शक्ति इत्यादि का समावेश होता है।

अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण संस्कारों के पावन धरातल पर आध्यात्मिक एवं नैतिक वातावरण में होता है। व्यक्तित्व ही व्यक्ति का वास्तविक परिचय है। समृद्ध एवं श्रेष्ठ व्यक्तित्व ही उसकी पूंजी है। यह वह सम्पदा है जो दैनिक जीवन में आने वाले छोटे-छोटे सूत्रों के माध्यम से जमा होती है। जिसके पास यह जमा पूँजी जितनी अधिक होगी वह उतना ही व्यवहार कुशल एवं सफल व्यक्तित्व का धनी होगा। अर्थसंचय एवं मुद्रा अर्जन इसके समक्ष क्षीण एवं तुच्छ हैं। इसके अभाव में व्यक्ति व्यावहारिक धरातल पर नितान्त दरिद्र होता है, भले ही वह अन्य क्षेत्रों

में चाहे जितना भी समृद्ध क्यों न हो। इसी को 'प्रेक्टिकल एप्रोच' के रूप में जाना जाता है। यह हर उम्र के लोगों के लिए एक समान लागू होता है, क्योंकि सभी का बाह्य जीवन व्यावहारिक पृष्ठभूमि में पलता, बढ़ता एवं विकसित होता है। इसी से अन्तरमन के बन्द दरवाजे खुलते हैं। एक लेखक स्टीफन कोवे ने अपनी पुस्तक "दी सेवन हैबिट्स ऑफ हाइली इफेक्टिव टीन्स" में व्यावहारिक जीवन के लिए वचनबद्धता, विश्वसनीयता, परोपकार, सुपात्रता, सदाचरण एवं विनम्रता को महत्त्व दिया है। इन्हीं को उन्होंने व्यावहारिक आदर्श बताया है, जिनसे न केवल व्यवहार पक्ष परिष्कृत होता है, समृद्ध होता है, वरन् आन्तरिक जीवन की अनन्त सम्पदा के द्वार खुलते हैं।

व्यक्तित्व निखार में चरित्र-निर्माण की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसके अभाव में आज मनुष्य, समाज एवं विश्व अन्तहीन समस्याओं से घिरा हुआ है, जिससे वह दुःखी एवं अशान्त रहता है। उसके मन में खिन्नता रहती है। वह भीड़ में भी अकेलेपन का अनुभव करता है। आज की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में समस्याओं के समाधान के ढेरों प्रयास करते हुए चरित्र-निर्माण के महत्त्वपूर्ण कार्य को उपेक्षित करना मनुष्य की विवेकशीलता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगा देता है। चरित्र को अंग्रेजी में 'करेक्टर' कहते हैं, जिसका अर्थ है जगत में अपने अस्तित्व को उत्कीर्ण करना या दुनियां में अपना प्रभाव छोड़ना।

यह प्रभाव ही व्यक्तित्व के सारतत्त्व को प्रतिबिंबित करता है जो कि समग्रता से निस्सृत होता है। यह दिल और दिमाग के 'सत्य' एवं 'शक्तियों' को नियंत्रित करता है तथा रचनात्मक ढंग से नियोजित करता है। यह जीव को पूर्णता के महान पथ पर आगे बढ़ाता है और दूसरों को भी इस कल्याणकारी मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

व्यक्तित्व को निखारती है "सच्चाई।" कन्फ्यूसियस ने कहा है "सच्चा इन्सान ही अपनी समस्याओं का समाधान कर सकता है तथा दूसरों के समाधान में भी मदद कर सकता है। उन्होंने कहा है "जो इन्सान सच्चा नहीं है वह न तो अधिक देर तक गरीब को झेल सकता है और न ही अमीरी को संभाल सकता है, क्योंकि चरित्र के अभाव में गरीबी उसे निष्ठुर बना देती है और अमीरी बर्बर। अतः दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा ही सद्चरित्र से सच्चाई तक पहुँचा जा सकता है।

व्यक्तित्व का मर्म अनुशासित जीवन में निहित है। सन्त

तिरुवल्लुवर ने कहा है "आत्मानुशासन जीवन से भी अधिक कीमती है, क्योंकि उसी से मनुष्य जीवनमूल्य प्राप्त करता है। अनुशासन के अभाव में जब हम उच्च आदर्शों एवं मूल्यों के अनुरूप जीवन को संगठित करने में विफल हो जाते हैं तो हम अन्दर से विघटित हो जाते हैं और बाह्य तौर पर समाज का समायोजन करने में विफल हो जाते है। आचार्य तुलसी ने कहा है- " निज पर शासन फिर अनुशासन" अर्थात् व्यक्ति स्वयं की इन्द्रियों एवं मनोवृत्तियों पर अंकुश लगाकर उनकी गति को नियमबद्धता की डोर में बांधकर अनुशासित हो सकता है, जिससे वह अपने उच्च व्यक्तित्व की पराकाष्ठा को छू सकता है।

व्यक्तित्व को चमकाने वाला सितारा है "विनम्रता", जो दैनिक जीवन में ही नहीं वरन् मनुष्य के प्रत्येक क्षेत्र में चार चांद लगा देता है। विनम्रता वह चाबी है जो क्षमा के द्वार खोलती है, जिससे भ्रातृत्व, मैत्री एवं सहिष्णुता का विकास होता है।

अच्छे संस्कार जो माता-पिता, गुरुजन, निजज्ञान एवं वातावरण से मनुष्य प्राप्त करता है, उन्हीं से व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

-12-रीटा पार्क सोसायटी, सुजात फ्लेट्स के पास
शाही बाग, अहमदाबाद (गुजरात)

स्वाध्याय आत्मसौन्दर्य की शोध

श्री लक्ष्मीचन्द जैन

1. भेद विज्ञान का समस्त सौन्दर्य स्वाध्याय की कसौटी है। ज्ञानालोक की शोध है। अनुभूति का आनंद है। स्वयं को पढ़ने की सफलता है। आत्मोन्मुखी अनुकूलताओं को परखने की प्रवृत्ति है। आत्मा की अमरता की शोध है। शरीर की नश्वरता का बोध है।
2. विचारों की दार्शनिकता को आचार रूप में परिणत करने की प्रक्रिया स्वाध्याय है। जब आत्म साक्षात्कार की अनंत संभावनाएँ अपने अन्दर साकार होने लगती हैं तब असली स्वाध्याय प्रकट होता है। अपनी आत्मा को निर्ग्रन्थ बनाने का प्रयास ही स्वाध्याय है। आत्मा रूपी ग्रन्थ को पढ़ना परम स्वाध्याय है।
3. स्वाध्याय की सुन्दरता अनुभवगम्य है। इससे जगा आत्मविश्वास अपने को आत्मनिर्भर बनाता है। निरन्तर स्वाध्यायशील बने रहने पर न मालुम कब खदान में से हीरा मिल जाय, या मिट्टी में से सोना अलग हो जाय। इसलिए हे स्वाध्याय! मेरा मन तेरे में निमग्न बना रहे। यही तो साधना है। *-छोटी कसरावद(म.प्र.)*

संवर : एक विवेचन

श्री राजमल सिंघी

'आस्रव' पाप का आगमन एवं 'संवर' उसका निरोध है। जो पाप के आगमन के मार्गों को बंद कर दे वह संवर है। दूसरे शब्दों में आस्रव मार्ग का निरोध करे, रोके, अटकावे वह संवर है। पाप कर्म को बंधने न दे, वह धर्म 'संवर धर्म' कहलाता है। मन, वचन और काया- इन तीनों योगों से पाप को ग्रहण ही नहीं करना- यही उत्तम संवर धर्म है। संवर ही आस्रव का निरोधक है। 'आणाए धम्मो'- वीतराग प्रभु की आज्ञा का पालन करना ही धर्म है।

सामायिक लेने, 'करेमि भंते' की प्रतिज्ञा लेने से संवर धर्म का प्रारम्भ हो जाता है। उपवास, आयंबिल का पच्चक्खाण लेने से संवर धर्म का प्रारंभ हो जाता है। हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन इत्यादि पाप न करने की प्रतिज्ञा रूपी व्रत-नियम के पच्चक्खाण लेने से संवर धर्म शुरू हो जाता है।

संवर एवं निर्जरा ये दोनों धर्म हैं एवं आचरणीय हैं। दोनों साथ रहते हैं। संवर आते हुए पाप कर्मों को रोकने की बात करता है, जबकि निर्जरा धर्म बंधे हुए पुराने कर्मों को खपाने की बात करता है। संवर धर्म तो दरवाजे के बाहर खड़े हुए चौकीदार जैसा है। वह बाहर से नए पाप को अन्दर घुसने नहीं देता। अतः आते हुए नए पापों को बंद करने की क्रिया का नाम 'संवर' है और झाडू निकालकर कचरा साफ करने की क्रिया का नाम निर्जरा है। ये दोनों आचरणीय हैं।

१. जीवन में अब नए कोई पाप करने नहीं और २. लगे हुए पाप कर्मों का नाश करना। जैन शासन में आत्मशुद्धि की साधना के क्षेत्र में इन दो लक्ष्यों की साधना को महत्त्व दिया गया है। इसी से आत्मा की सच्ची शुद्धि हो सकेगी। पाप लगते ही उसको कांटे की तरह तुरन्त निकालने का लक्ष्य होना चाहिए। सच्चा जागृत साधक तो वही कहलाता है जो जीवन में नए पाप लगने न दे। यही संवर धर्म है और संवर धर्म की साधना है।

जिस प्रकार मुझे नए पाप-कर्म करने नहीं, उसी प्रकार आज तक भूतकाल में किए हुए पाप, जो आत्मा पर लगे हुए हैं, वे मुझे

रखने ही नहीं, उनको खपाना ही है। इसके लिए की गई प्रवृत्ति निर्जरा धर्म है।

संवर-धर्म के भेद एवं उनका स्वरूप

पाँच समिति, तीन गुप्ति, बाईस परीषह-जय, दशविध यति-धर्म, बारह भावना एवं पाँच चारित्र इस प्रकार कुल ५७ भेद से संवर का मार्ग बताया गया है।

पाँच समिति– सम्यक् उपयोग वाली प्रवृत्ति को समिति कहते हैं। यह पाँच प्रकार की है- १. ईर्या समिति- जीव हिंसा न हो और जीव रक्षा हो, इसका ध्यान रखते हुए जाना, चलना इत्यादि ईर्या समिति कहलाती है। २. हितकारी, निष्पाप भाषा बोलना, भाषा समिति कहलाती है। ३. आहार, पानी ऐसा उपयोग में लिया जावे जिससे पाप न हो- यह एषणा समिति कहलाती है। ४. वस्त्र, बर्तन आदि देखकर एवं पूंजकर लेना तथा रखना, यह आदान-निक्षेप समिति कहलाती है। ५. जीव-जंतु आदि देखकर जयणा पूर्वक मल-मूत्रादि का विसर्जन करना, यह उत्सर्ग समिति कहलाती है।

इन पाँचों समितियों के पालन से साधक की आवश्यक सभी क्रियाएँ यतना पूर्वक होती है, जिससे पाप-दोष का आस्रव नहीं होता। यह जीव-हिंसादि के पापास्रव की निरोधक संवर-धर्म की अनुपम साधना है, निर्दोष एवं निष्पाप जीवन जीने की अद्भुत प्रक्रिया है।

तीन गुप्ति– आत्मा को पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, कर्मबंध, निर्जरा यह सब कराने वाले मन, वचन एवं काया हैं। उत्तराध्ययन सूत्र में प्रभु ने फरमाया है कि आत्मा ही अपने सुख-दुःख का कर्ता और विकर्ता है। अतः कुत्सित विचारों, कर्कश बोलने और अशुभ क्रिया से सदा दूर रहना चाहिए।

परीषह जय- आत्मा अनन्त शक्तिशाली है। आत्मा चेतन है, देह जड़ है। आत्मा देह से भिन्न है। यह जानकर परीषहों एवं उपसर्गों को सहन करना ही हितकर है।

दस प्रकार के धर्म से संवर– १. उत्तम क्षमा से क्रोध को जीतना २. मृदुता से मान को जीतना ३. सरलता से माया को जीतना ४. संतोष से लोभ को जीतना ५. सत्य धर्म का पालन करके मृषावाद के पापास्रव को जीतना ६. संयम धर्म से मन-वचन-काया का निग्रह

करना तथा इन्द्रियों एवं मन को वश में रखना ७. तप धर्म की आराधना से आहारादि की इच्छा को काबू में रखना, जिससे खाने-पीने से होने वाले पापास्रवों को रोकना ८. त्याग धर्म के संस्कार से मोह-ममत्व कम करना ६. देह तथा बाह्य साधन एवं सामग्री पर मोह-ममत्वका भाव टाल कर आत्मा को महापरिग्रह के पाप से बचाना १०. मैथुन-सेवन के महापापास्रव से बचने के लिए ब्रह्मचर्य उत्तम धर्म है।

संवर धर्म एक महान धर्म है, समुद्र जैसा विशाल धर्म है। जिसमें सभी प्रकार के धर्म का समावेश हो जाता है, जिससे पाप के आस्रव-द्वार बंद हो जाते हैं।

बारह भावना से संवर— भावना भवनाशिनी है। भव अर्थात् संसार में जन्म-मरण का नाश करने वाली है। १. अनित्य भावना २. अशरण भावना ३. संसार भावना ४. एकत्व भावना ५. अन्यत्व भावना ६. अशुचि भावना ७. आस्रव भावना ८. संवर भावना ६. निर्जरा भावना १०. लोक-स्वरूप भावना ११. बोधि-दुर्लभ भावना १२. धर्म स्वाख्यात भावना। ये बारह प्रकार की भावनाएँ हैं। इनके अतिरिक्त १. मैत्री भावना २. प्रमोद भावना ३. करुणा भावना ४. माध्यस्थ भावना भी है। इन भावनाओं को प्रतिदिन भाना श्रेयस्कर है।

हमने पूर्व में पाप किए हैं एवं अभी भी जानते-अजानते हो ही रहे हैं। इसीलिए तो हम संसार में हैं। अतः हमको संवर धर्म की पालना करना ही चाहिए, ताकि पाप कर्म रोके जा सकें। पाप किए हैं तो खपाने ही चाहिए—निर्जरा धर्म का आचरण करना ही चाहिए। साधना के क्षेत्र में संवर एवं निर्जरा धर्म की साधना उत्तम है।

संवर आत्मशुद्धि का उत्तम मार्ग है। पापों के निरोध के लिए यह "रेड सिग्नल" है। संवर, आत्मा में आते हुए पाप कर्मों को रोकता है और निर्जरा पुराने कर्मों को खपाती है। नवकारसी से मासक्षमण तप के पच्चक्खाण का शुभारम्भ- यही संवर की सूचना है। सामायिक, पौषध इत्यादि सभी संवर को दृढ़ बनाने वाले हैं। आस्रव सर्वथा त्याज्य है एवं संवर सदा आचरणीय है। आस्रव तो संसार का कारण है एवं संवर मोक्ष का कारण है। संवर-मार्ग शिवसुख पाने का मार्ग है, आत्मा का कल्याण करने वाला है।

-सेवानिवृत्त संयुक्त रजिस्ट्रार (सहकारिता)
बी ६१, सेठी कोलोनी, जयपुर (राज.)

कष्टों से घबराएँ नहीं : आत्मशक्ति को जागृत करें

श्री गजमल लोढ़ा

इंग्लैण्ड के दक्षिणी समुद्र में एक जहाज डूब गया एवं अनेक लोग डूब कर मर गये। भाग्यवश एक पन्द्रह वर्षीय बालक ऊँची-ऊँची लहरों की थपेड़ों से जूझता हुआ किनारे की चट्टानों तक पहुँच गया। रात भर के अथक परिश्रम के पश्चात् वह एक चट्टान पर चढ़ने में सफल हो गया और इस प्रकार बच निकला। उससे पूछा गया कि जिन्दगी और मौत से जूझते हुए उसने हिम्मत नहीं हारी, तो उसने उत्तर दिया वह हिम्मत तब हारता जब चट्टान हिल जाती। लेकिन वह चट्टान एक बार भी नहीं हिली।

जिस प्रकार संकल्प, साहस, दृढ़ निश्चय तथा उच्चतम आत्मविश्वास आपके लिए सफलता के सोपान हैं उसी प्रकार असफलता भी सफलता का प्रथम सोपान है, जो आपकी नींव को मजबूती प्रदान करता है। अतः असफलताओं से कभी न घबराएँ। कहा भी है-

बाधाएँ कब बांध सकी हैं,
आगे बढ़ने वालो को।
विपदाएँ कब रोक सकी हैं,
मर कर जीने वालों को।।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन अनगिनत असफलताओं के आगे नहीं झुके और अन्त में राष्ट्रपति बने।

तमिलनाडु के जेल से हाल ही में एक ऐसा कैदी छूटा जो कैद हुआ तब तो किसी हत्या का अभियुक्त था और जब जेल से छूटा तो सीधा विश्वविद्यालय का प्रोफेसर बना। उसने अपने किए का प्रायश्चित्त किया। उसने कारागार में रह कर सारी शिक्षा ग्रहण की। इसे कहते हैं जीवन को बदलना, जीवन का रूपान्तरण करना।

गुब्बारा अपने रंग के कारण नहीं, वरन् उसके भीतर जो गुण छिपे हैं उसी के बल पर ऊपर उठता है। अपने गुणों को पहचानिए, अवश्य सफलता मिलेगी। जिस व्यक्ति ने अपनी योग्यता का परिचय नहीं दिया वह चाहे कितना भी योग्य अथवा समर्थ क्यों न हो, उसका सम्मान नहीं होता।

जॉन कैथलीन रॉलिंग ने अपने पति से तलाक लेने के पश्चात्

मुश्किलों का सामना करते हुए एक कैफे के एकान्त कोने में बैठकर "हेरी पॉटर एण्ड द फिलोसाफर्स स्टोन" टाइटल से उपन्यास पूरा किया। जब उपन्यास छपकर आया तो कामयाबी और शौहरत की सौगात साथ लेकर आया। आज वह ब्रिटेन की महारानी से भी अमीर है।

मेरी नजर में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो सदा सुखी रहा और विपदाओं, कठिनाइयों, असफलताओं या समस्याओं से बचा रहा हो। कई लोग अपने दुःखों को अपने तक सीमित रखते हैं। सुखी वही रह सकता है जिसने कामनाओं-इच्छाओं पर काबू पा लिया हो। जो विपदाओं से विचलित नहीं होते हैं वे उपाय खोज लेते हैं। अनेक तीर्थंकर भगवान साधु-साध्वी व श्रावक-श्राविकाएँ अपने मार्ग की बाधाओं को पार कर आत्म-विकास की पराकाष्ठा पर पहुँचने में सफल हुए।

आपकी अपनी समस्याएँ हैं, जिनका कारण आप स्वयं भी हो सकते हैं। आप अपने आपको पहचानें और मार्ग बदल लें। प्रत्याशित या अप्रत्याशित विपदाएँ जीवन में आती हैं, जाती हैं, यह सब कर्मों का फल है। इनसे आज तक न कोई बच पाया है और न कोई बच पायेगा। जीवन जीने के लिए किसी से वैरभाव न बांधकर उचित रास्ता चुन लेना चाहिए।

सुमधुर व्याख्यानी गौतममुनि जी म.सा. की कविता याद आ रही है-

कष्टों से क्या घबराना, ये जीवन के सच्चे उपहार,
कर्मों के कारण ही आधि-व्याधि और उपाधि है।
दोष न दें कष्टों में पर को, जो बोया सो पाना,
दुःख से दुःखी बनेंगे तो, नहीं मिलती दुःखों से मुक्ति।।

गुरुदेव पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का यह कथन कितना सटीक है- "आत्मशक्ति को जगाएँ। दियासलाई की तूली में ज्योति है। लेकिन जब तक पेटी में बंद पड़ी है तब तक प्रकाश नहीं कर सकती। जब तूली को निकालकर माचिस की पेटी से रगड़ेंगे तब प्रकाश होगा। इसी तरह शरीररूपी पेटी के अन्दर चेतना की तूली है। यदि वह किसी सद्पुरुष की रगड़ खा जाये, या शास्त्र वचन से उसका सम्पर्क हो जाये तो प्रज्वलित हो उठेगी।"

अन्त में जैन धर्म के बारे में लार्ड बर्नाड शा के विचार- "प्रत्येक आत्मा परमात्मा बन सकता है। हर भक्त को भगवान बनने का

अधिकार है। यह सिद्धान्त मानवता के विकास का सबसे श्रेष्ठ सिद्धान्त है।"

भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने कहा है- "भगवान महावीर की तरह अगर हम अपने दोषों को और कमजोरियों को दूर कर लें तो हमारा सारा संसार खुद-ब-खुद सुधर जायेगा।"

-१४/७८, चौ.हा.बोर्ड, जोधपुर

तीन कविताएँ

श्री प्रकाश कर्णावट, इजरायल

(1)

सात्विक शुद्ध जीवन

भौतिकता की चकाचौंध में, संस्कारों का निकला दीवाला,
यशकीर्ति पाने में, चारित्र बना बडवानल वाला।
झुककर बना जो धर्मनिष्ठ, वर पाया मानवता को,
जी पाया सात्विक जीवन, भौतिकता भुलाने वाला।।

(2)

चरितार्थ बन पाना

पानी नहीं, दही मथने से, मक्खन निकल पाता है,
मिथ्या नहीं, समदृष्टि ही, समकित समझ पाता है।
द्रव्यभाव दोनों के मथने से, निखर उठता है मन,
चारित्र निखर पाने से, चरितार्थ बन जाता है।।

(3)

आत्मरमण

आचार-विचार के मिलने से, सदाचार जग पाता है,
आहार विहार में ढ़लने से व्यवहार सुधर जाता है।
कथनी-करणी के मेल से, चारित्र सम्यक् बन पाता है,
इन सभी में रमण करने वाला, आत्मरमण कर पाता है।।

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

समग्र जैन चातुर्मास सूची–2003 :–सम्पादक एवं प्रकाशक– *श्री बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल' 105, तिरुपति अपार्टमेण्ट, आकुर्ली रोड़ नं. 1, कांदिवली (पूर्व), मुम्बई–400101, फोन नं. 28871278,* ***मूल्य****–25 रुपये*

'गजेन्द्र संदेश' पत्रिका के विशेषांक रूप में प्रकाशित समग्र जैन चातुर्मास सूची का यह रजत जयन्ती वर्ष है। श्रमनिष्ठ एवं समर्पित श्री बाबूलाल जी जैन ने सन् १९७९ में समग्र जैन चातुर्मास सूची का प्रथम पुष्प प्रकाशित किया था। सूची का प्रकाशन निश्चित ही बहुत कठिन एवं समयापेक्षित कार्य है। इस वर्ष की चातुर्मास सूची में सम्पादक महोदय के समक्ष यह भी कठिनाई आई होगी कि श्रमण संघ के किस सन्त-सती के समूह को किन आचार्यों की आज्ञा में प्रदर्शित करे। श्री जैन ने सूची में दर्शाया है कि वर्तमान में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक सम्प्रदाय में ८१५७ साधु-साध्वी हैं। श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय में ३४३४, तेरापंथ सम्प्रदाय में ६८५ तथा दिगम्बर सम्प्रदाय में ९२८ साधु-साध्वी हैं। चारों समुदायों को मिलाकर देश में १३२०४ सन्त-सती जैन धर्म के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं। सन् १९९० में यह संख्या ६६७४, सन् १९९५ में १०५७५, सन् २००० में १२३०५ थी। इससे ज्ञात होता है कि जैन सन्त-सतियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है, जो इस धर्म के प्रति लोगों के अनुराग की द्योतक है। सूची उपयोगी है। सम्पादक महोदय धन्यवाद के पात्र हैं।

स्थानकवासी परम्परा पर शोधपरक पुस्तक

धार्मिक अध्ययन विभाग, लन्दन विश्वविद्यालय में प्राध्यापक डॉ. पीटर फ्ल्यूजल स्थानकवासी जैन परम्परा के इतिहास पर शोधपरक पुस्तक लिख रहे हैं। उन्हें स्थानकवासी सम्प्रदाय से सम्बद्ध साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं एवं पाण्डुलिपियों की आवश्यकता है। जो सज्जन इसमें उनकी मदद करना चाहें वे उनके ई-मेल :- **pf8@soas.ac.uk** पर अथवा मुझसे सम्पर्क स्थापित करें। जैन प्रकाश, जिनवाणी, सम्यग्दर्शन आदि पत्रिकाओं की जिनके पास पुरानी प्रतियाँ हों, वे अवश्य सूचित करें। -डॉ. सोहनलाल संचेती, संचेती भवन, केसरवाड़ी, चांदी हॉल, जोधपुर-३४२००२(राज.), फोन नं. २६२६६८७

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के ४२१ स्वाध्यायियों द्वारा १८० क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत ५६ वर्षों से, जैन संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित ग्राम/नगरों में विद्वान्, क्रियावान्, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना एवं आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस संघ के वर्तमान में लगभग ८३० स्वाध्यायी सदस्य हैं, जिनमें से अधिकांश स्वाध्यायी पर्युषण के लिए इस संघ द्वारा निर्देशित क्षेत्रों में जाकर अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी ऐसे भी हैं जो व्यावहारिक जगत् में न्यायाधिपति, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, इंजीनियर, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी, एडवोकेट, उद्योगपति, व्यापारी, लेक्चरर, शिक्षक आदि प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत होते हुए भी अपनी बहुमूल्य सेवाएं संघ को प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड, एल.एल.बी., पी-एच.डी. एवं एल.एल.एम. जैसी विशिष्ट उपाधियों से भी अंलकृत हैं।

इस वर्ष २४ अगस्त से ३१ अगस्त २००३ तक पर्युषण पर्व के अवसर पर हरियाणा, पंजाब, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान में मेवाड़-मारवाड़, पोरवाल-पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे-बड़े, दूर व निकट के १८० क्षेत्रों में ४२१ स्वाध्यायियों ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की।

सभी क्षेत्रों में पर्युषण पर्व के अष्टदिवसों में स्वाध्यायियों द्वारा सामायिक, प्रार्थना, प्रतिक्रमण, अंतगडसूत्र वाचन-विश्लेषण, सारगर्भित व्याख्यान, कल्पसूत्र वाचन, चौपाई आदि विविध विषयों पर प्रश्नमंच, नवकार मंत्र के अखण्ड जाप, अन्त्याक्षरी, संस्कार निर्माण शिविर, अध्ययन-अध्यापन, चौबीस तीर्थंकर पहेली प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, सामायिक प्रतियोगिता आदि अनेक प्रतियेगिताएं एवं धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न करवाये गये। सभी स्थानों पर युवा एवं भावी पीढ़ी को सुसंस्कारित करने हेतु धार्मिक पाठशालाएं प्रारम्भ करने, व्यसन रहित जीवन जीने तथा सामूहिक सामायिक स्वाध्याय करने की प्रबल प्रेरणा देने के साथ नये स्वाध्यायी बनाये गये। सौन्दर्य प्रसाधन, चिकित्सा, खान-पान, मनोरंजन एवं धार्मिक अन्धविश्वास आदि विविध क्षेत्रों में होने वाली हिंसा की जानकारी प्रदान करने के साथ-साथ हिंसक वस्तुओं का उपयोग नहीं करने की भी प्रेरणा की गई। अनेक स्थानों पर अजैन पुरुष व महिलाओं ने भी संवत्सरी के दिन उपवास, बेले, तेले आदि तप किये। स्वाध्यायियों से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार समस्त क्षेत्रों में हुए धर्मध्यान एवं तप त्याग का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है

०१. सामायिक	२७४३०८	०२. संवर	३२२१५
०३. दया	२६८५	०४. एकाशन	६१८४
०५. आयम्बिल	४६६	०६. उपवास	१२४१३
०७. पौषध	२३४०	०८. अष्टप्रहर पौषध	६४८

०६. बेला	४८८	१०. तेला	४६८
११. चोला	२७	१२. पचोला	३८
१३. छः	१०	१४. सात	२
१५. अठाई	६६	१६. नौ	१६
१७. दस	१	१८. ग्यारह	७
१६. पन्द्रह	१	२०. नीवीं	६
२१. पचरंगी	१२	२२. धर्मचक्र	३

महाराष्ट्र क्षेत्र

०१. शिरपुर	१. श्री मुन्नालाल जी भण्डारी, जोधपुर २. कु. सपना जी विनायक्या, मुकटी ३. कु. दीपाली जी दुग्गड़, मुकटी
०२. सिल्लोड़	१. सौ. ललिता जी कटारिया, जलगांव २. सौ. सुशीला जी सांखला, जलगांव ३. सौ. किरण जी बोरा, जलगांव
०३. चौपड़ा	१. सौ. विजया जी मल्हारा, जलगांव २. श्रीमती सुशीला जी भलगट, भंडारा ३. सौ. अनिता जी लुंकड़, जामनेर
०४. फत्तेपुर	१. श्री पारस जी गिड़िया, जोधपुर २. श्री सतीश जी कोटड़िया, जोधपुर
०५. फागणा	१. सौ. ताराबाई जी डाकलिया, जलगांव २. सौ. किरणबाई जी कोठारी, बोंदवड़
०६. मांडल	१. श्री अशोक जी पितलिया, भोपाल २. श्री सुभाष जी कोठारी, मांजलगांव
०७. नागद	१. श्री सुकनराज जी गुगलिया, हैदराबाद २. कु. सुषमा जी भूरट, जामनेर ३. कु. सोनाली जी सुराणा, जामनेर
०८. बोरकुंड	१. श्री कमलेश जी मेहता, जोधपुर २. श्री राजेश जी चौपड़ा, जोधपुर ३. श्री बसंत जी बोहरा, जोधपुर
०६. भड़गांव	१. श्री महावीर जी गुलेच्छा, वाकोद २. श्री पुखराज जी कोठारी, लासुर
१०. लासुर चौपड़ा	१. श्री मनीष जी बोथरा, जोधपुर २. श्री पंकज जी कवाड़, जोधपुर ३. श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा, जोधपुर
११. खलणा	१. श्री पंकज जी डोसी, जोधपुर २. श्री नरेश जी कवाड़, जोधपुर
१२. रत्नागिरी	१. श्री दीपचन्द जी बोथरा, पाचोरा २. श्री सूरजमल जी लुणावत, पारोला
१३. पांढरकवड़ा	१. श्री प्रकाश जी बांठिया, पाचोरा २. कु. ममता जी खिंवसरा, मुकटी

	३. कु. सुनिता जी सोलंकी, लोहारा
१४. चान्दुर रेलवे	१. श्री मनोज जी संचेती, जलगांव
	२. श्री देवेन्द्र जी कोठारी, जलगांव
	३. सौ. चन्द्रमाला जी गांधी, भण्डारा
	४. कु. विमला जी जैन, भंडारा
१५. लासुरगांव	१. श्री सुगनचन्द जी संचेती, चालीसगांव
	२. कु. लीना जी वेदमुथा, नागद
	३. कु. चेतना जी छाजेड़, चिंचाला
१६. सौंदाणा	१. सौ. निर्मला जी बांठिया, पाचोरा
	२. कु. पूजा जी वेदमुथा, नागद
	३. कु. दिपाली जी दर्डा, पारोला
१७. इच्छापुर	१. श्रीमती उषाबाई जी कोठारी, जलगांव
	२. कु. वर्षा जी कोठारी, जलगांव
	३. कु. सोनल जी जैन, बडनेरा
१८. चिपलुण	१. श्री हीरालाल जी मंडलेचा, जलगांव
	२. कु. सपना जी धाडीवाल, पाचोरा
	३. कु. पूनम जी संचेती, कजगांव
१९. खेड़	१. सौ. शोभा जी खिंवसरा, मांडल
	२. कु. जयमाला जी अलीझाड़, शिरूड़
	३. कु. प्रिती जी चोरड़िया, पारोला
२०. मण्डनगड़	१. श्री त्रिलोक जी जैन, जलगांव
	२. श्री जिनेन्द्र जी जैन, जलगांव
२१. केलसी	१. श्री रिन्कुकुमार जी जैन, जलगांव
	२. श्री विनोद कुमार जी जैन, जलगांव
२२. अम्बाजोगाई	१. सौ. विमला जी कांकरिया, जलगांव
	२. कु. मोना जी सुराणा, जलगांव
	३. सौ. मैनाबाई जी छाजेड़, अमलनेर
२३. पहुरदाभा	१. सौ. किरणबाई जी खिंवसरा, मांडल
	२. सौ. शंकुतलाबाई जी खिंवसरा, मांडल
	३. कु. गायत्री जी वेदमुथा, नागद
२४. भंडारा	१. श्री अतुल जी मुणोत, बालाघाट
	२. श्री मनोज जी बोहरा, पीपाड़
२५. किनगांव राजा	१. श्री श्री चिमनलाल जी बोरा, न्यायडोंगरी
	२. श्री निशांत जी जैन, जलगांव
२६. पवन नगर, नाशिक	१. श्री सुरेन्द्र जी गुन्देचा, पीपाड़
	२. श्री पुनित जी मुथा, पीपाड़
	३. श्री विनीत जी मुथा, पीपाड़
२७. जायखेड़ा	१. सौ. विमला जी चोरड़िया, धुलिया
	२. सौ. मंगला जी रूणवाल, धुलिया
	३. कु. हर्षाली जी दुग्गड़, धुलिया

२८. कासारे
१. श्री मुकेश जी बुरड़, शिरपुर
२. श्री आनन्द जी छाजेड़, जलगांव

२६. मुक्ताई नगर
१. श्रीमती मोहनी देवी जी जैन, आलनपुर
२. सौ. सुजाता जी जैन, चौथ का बरवाड़ा

३०. वरणगांव
१. कु. नेहा जी चोरड़िया, जलगांव
२. कु. संगीता जी छाजेड़, भुसावल
३. कु. पुजा जी गादिया, भुसावल

३१. तलेगांव
१. श्री राजमल जी संचेती, अमलनेर
२. श्री सुगनचन्द जी संचेती, येलदा

३२. वाकोद
१. श्री विनयचन्द जी जैन, आलनपुर
२. श्री रामदयाल जी जैन, आलनपुर

३३. तोंडापुर
१. श्री राजेन्द्र जी जैन, सवाईमाधोपुर
२. श्री मनोज जी जैन, चौथ का बरवाड़ा

३४. पलासखेड़ा
१. श्रीमती बदामबाई जी चोरड़िया, शिरपुर
२. सौ. सरोज जी पारख, चालीसगांव

३५. मुकटी
१. श्री लल्लुलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
२. कु. रूपाली जी बागमार, वडाला
३. कु. अनिता जी बरड़िया, बोरखेड़ा

३६. कजगांव
१. श्रीमती मोहनीदेवी कच्छवाहा, जोधपुर
२. कु. निर्मला जी जीरावला, जोधपुर
३. कु. दिपीका जी सिंघवी, जोधपुर
४. कु. शीतल जी छल्लाणी, नेर

३७. शेलवड़
१. सौ. प्रियदर्शना जी जैन, सवाईमाधोपुर
२. कु. नगिना जी छाजेड़, जोधपुर
३. कु. रेखा जी छाजेड़, जोधपुर

३८. पिलखोड़
१. श्री दिलीप जी बाघमार, वडाला-वडाली
२. श्री राकेश जी जैन, जलगांव
३. श्री अभय जी चण्डालिया, भादसोड़ा

३६. वरखेड़ी
१. श्री मनोहर जी पोखरणा, भादसोड़ा
२. श्री शंकरलाल जी लोढ़ा, भादसोड़ा

४०. वाघली
१. कु. रूपाली जी दर्डा, चिंचाला
२. कु. सपना जी दुग्गड़, मुकटी

४१. भराड़ी
१. श्री अलंकार जी मुणोत, जलगांव
२. श्री योगेश जी जैन, जलगांव

४२. बेटावद
१. श्री ललित जी भण्डारी, जलगांव
२. श्री प्रवीण जी दुग्गड़, जलगांव

४३. उम्बरखेड़
१. सौ. चन्द्रकलाबाई जी बाफना, निमगुल
२. सौ. सायरबाई जी सुराणा, शिरपुर

४४. शिरूड़
१. श्री रतन जी घीया, पीपाड़
२. श्री निर्मल जी मुथा, पीपाड़

४५. देउर ब्रुद्रक	१. श्री महेन्द्र जी जीरावला, जोधपुर
	२. श्री सुनील जी बोथरा, जोधपुर
४६. नसीराबाद	१. श्री धर्मचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री मुकेश जी जैन, सवाईमाधोपुर
४७. चिंचाला	१. सौ. कान्ता जी जैन, जलगांव
	२. कु. चन्दनबालाल जी टाटिया, शिरूड़
	३. कु. राखी जी बम्ब, बोरकुंड
४८. बांबरूड़	१. सौ. विमला जी चोरड़िया, जलगांव
	२. सौ. हेमलता जी सांखला, मुम्बई
	३. कु. राखी जी छाजेड़, धुलिया
४९. कासमपुरा	१. श्री चिरंजीलाल जी सांड, ब्यावर
	२. कु. भारती जी वेदमुथा, नाग
	३. कु. नम्रता जी वेदमुथा, नागद
५०. लोहारा	१. सौ. मंगला जी बागरेचा, शिरपुर
	२. कु. विजयलक्ष्मी जी लुणावत, पीपाड़
	३. कु. रेणुका जी भंडारी, पीपाड़
५१. विटनेर	१. श्रीमती कान्तिबाई जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. सौ. सुशीला जी ललवाणी, जलगांव
५२. वडाला	१. श्रीमती पुष्पा जी सुराणा, जोधपुर
	२. कु. निर्मला जी लुणावत, पीपाड़
	३. कु. रेखा जी जैन, पीपाड़
	४. श्री दीपक जी जैन, पीपाड़
५३. वाकड़ी	१. श्रीमती स्नेहलता जी मुथा, पीपाड़
	२. कु. चन्दनबाला जी जैन, भोपालगढ़
५४. आलेगांव	१. श्री रमेश जी भंसाली, फत्तेपुर
	२. श्री चैनकरण जी कटारिया, जलगांव
५५. बोरखेड़ा	१. सौ. सुजाता पारख, वाघली
५६. गंगाखेड़ (परभणी)	१. सौ. मंजु जी जैन, गंगाखेड़
५७. होलनांथा	१. श्री भंवरलाल जी लुणावत, होलनांथा
	२. श्री मनोहरलाल जी सेठिया, होलनांथा

मारवाड़ क्षेत्र

५८. आगोलाई	१. श्री नेमीचन्द जी कर्णावट, भोपालगढ़
	२. डॉ. धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर
	३. श्री नरेशचन्द जी जैन, भोपालगढ़
	४. श्री शिखरचन्द जी बोहरा, जोधपुर
५९. अजीत	१. श्री नरपतराज जी भण्डारी, जोधपुर
	२. श्री दिलरूपचन्द जी भण्डारी, जोधपुर
६०. बाड़मेर	१. श्री जवरीमल जी छाजेड़, जोधपुर.
	२. श्री रमेश जी भण्डारी, जोधपुर
६१. धनारीकलां	१. श्री उम्मेदमल जी जैन, जरखोदा

	२. श्री शिवकुमार जी जैन, जरखोदा
६२. रिया बड़ी	१. श्री धर्मेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री प्रेमबाबु जी जैन, बजरिया

मेवाड़ क्षेत्र

६३. छोटा भटवाड़ा	१. श्री मानसिंह जी खारीवाल, सहाड़ा
	२. सुश्री ललिता जी खारीवाल, सहाड़ा
	३. सुश्री डिम्पल जी सेठिया, लाखोला
६४. भानसोल गडवाड़ा	१. श्री सागरमल जी लोढ़ा, महागढ़
	२. श्री सुरेश जी राठौड़, महागढ़
६५. जावरमाइन्स	१. श्री दिलीप जी धींग, बम्बोरा
	२. सुश्री नीतू जी दाणी, डूंगला
	३. श्री हरिसिंह जी भानावत, उदयपुर
६६. अरनोदा	१. श्री मानमल जी लसोड़, प्रतापगढ़
	२. सुश्री नीतू जी चण्डालिया, भादसोड़ा
	३. सुश्री रंजना जी बोहरा, आरणी
	४. श्रीमती सुशीला जी मेहता, जीरन
६७. दरीबा	१. श्री मानमल जी दक, डूंगला
	२. श्री हरीसिंह जी तातेड़, डूंगला
	३. श्री कालूलाल जी तातेड़, डूंगला
६८. नवाणियां	१. श्री महेश कुमार जी जैन, जयपुर
	२. श्री दिलीप जी जैन, जयपुर
६९. मावली जंक्शन	१. श्री जितेश जी जैन, जयपुर
	२. श्री पारसचन्द जी जैन, जयपुर

जयपुर क्षेत्र

७०. दूदू	१. श्री प्रकाशचन्द जी डागा, जयपुर
	२. श्री सुनीलकुमार जी जैन, जयपुर
७१. महारानी फार्म, जयपुर	१. श्री जम्बूकुमार जी जैन, जयपुर
	२. श्री अशोक कुमार जी जैन, जयपुर
७२. मानसरोवर, जयपुर	१. श्री जशकरण जी डागा, टोंक
	२. श्री कुशलचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर
	३. श्री हितेश जी जैन, कुश्तला
७३. लाल कोठी, जयपुर	१. श्री हीराचन्द जी हीरावत, जयपुर
७४. जोबनेर	१. श्री विरेन्द्र जी झागड़, जयपुर
	२. श्री कैलाश जी जैन, जयपुर
	३. श्री अभयकुमार जी जैन, जयपुर
७५. चाकसू	१. श्री विनोद कुमार जी जैन, चाकसू

दक्षिण क्षेत्र

७६. कोयम्बटुर	१. श्री सम्पतराज जी डोसी, जोधपुर
	२. श्री देवेन्द्र जी सिंघवी, बैंगलोर

७७. पुनमल्ली	१. श्री फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर
	२. श्री कन्हैयालाल जी जैन, भीलवाड़ा
	३. श्रीमती कंचन जी सुराणा, चेन्नई
७८. सिरकाली	१. श्री पी.एम. चोरड़िया, चेन्नई
	२. श्री सतीश जी जैन, जयपुर
७९. पाडी	१. श्री रिखबचन्द जी मेहता, जोधपुर
	२. श्री अनुपम जी जैन, जयपुर
८०. मायावरम	१. डॉ. स्मृति रेखा जी जारोली, नीमच
	२. सुश्री स्नेहलता जी गादिया, पीपाड़
	३. श्रीमती सोहम जी जैन, नीमच
८१. आलन्दुर	१. श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर
	२. श्री महावीर जी बाफना, चेन्नई
	३. सुश्री अल्फा जी सुराणा, जोधपुर
८२. कालातिपेठ	१. श्रीमती शान्ता जी मोदी, जयपुर
	२. सुश्री मनीषा जी छाजेड़, जोधपुर
८३. चिदम्बरम	१. श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर
	२. सुश्री शिल्पा जी गांधी, जोधपुर
	३. सुश्री अस्मिता जी डाकलिया, जोधपुर
८४. कल्लाकुरची	१. श्री दुलीचन्द जी बोहरा, चेन्नई
	२. श्री नितीन जी हुण्डीवाल, जलगांव
	३. श्री रेखचन्द जी चौधरी, आरकाट
८५. पम्मल	१. श्री सुरेश जी हींगड़, भीलवाड़ा
	२. श्री सुमेर जी बाघमार, चेन्नई
	३. श्री विमल जी मुथा, पल्लीपट्ट
८६. चिंगलपेठ	१. श्री चम्पालाल जी बोथरा, चेन्नई
	२. श्री महावीरचन्द जी ओस्तवाल, चेन्नई
	३. श्री जवाहरलाल जी बाघमार, चेन्नई
८७. तिरवामिपुर	१. श्रीमती सूर्यकांता जी बाघमार, चेन्नई
	२. श्रीमती मंजु जी बांठिया, चेन्नई
८८. आरकाट	१. श्री सागरमल जी सर्राफ, बड़ी सादड़ी
	२. श्री मोहनलाल जी बाफना, चेन्नई
८९. काटमनार कोइल	१. श्रीमती रतनदेवी जी नाहर, बेगूँ
	२. सुश्री प्रीति जी बांठिया, चेन्नई
९०. नलीकुपम	१. श्री नीलमचन्द जी बाघमार, चेन्नई
	२. श्री ज्ञानचन्द जी बाघमार, चेन्नई
९१. कोलीडम	१. श्रीमती लाडदेवी जी हीरावत, जयपुर
	२. सुश्री सीमा जी कांकरिया, जोधपुर
९२. उलुन्दुर पेठ	१. श्री कमलेश जी बोहरा, चेन्नई
	२. श्री निर्मल जी बोहरा, चेन्नई
९३. कुनराथोर	१. श्री महावीर जी रांका, पहुंना
	२. श्री मानमल जी सुराणा, चेन्नई

६४. विरदाचलम	१. श्री सुनील जी सांखला, चेन्नई
	२. श्री महावीरचन्द जी बाघमार, चेन्नई
	३. श्री जितेन्द्र जी डाकलिया, चेन्नई
६५. पल्लीपट्ट	१. श्री कल्याणमल जी बाफना, भोपालगढ़
६६. आवड़ी	१. श्री किशोर जी छाजेड़, हैदराबाद
	२. श्री श्रीपाल जी देशलहरा, हैदराबाद
	३. श्रीमती लाजवन्ती जी गोलेछा, हैदराबाद

पं. बंगाल

६७. कोलकाता	१. श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर
	२. सुश्री प्रिया जी चौपड़ा, जोधपुर

उत्तरप्रदेश

६८. वाराणसी	१. श्री हस्तीमल जी गोलेछा, ब्यावर
	२. श्री दिलखुश जी मेहता, जोधपुर

पंजाब क्षेत्र

६९. जैतोमण्डी	१. श्री राजेन्द्र जी चोरड़िया, इन्दौर
	२. श्रीमती रेखा जी चोरड़िया, इन्दौर
	३. श्री अनिलेशजी नाहर, इन्दौर
१००. मोडमण्डी	१. श्रीमती प्रेम जी नवलखा, जयपुर
	२. श्री लोकेश जी जैन, जयपुर
	३. श्रीमती धर्मवती जी जैन, जयपुर

हरियाणा क्षेत्र

१०१.मण्डी डबवाली	१. श्री चंचलमल जी चोरड़िया, जोधपुर
	२. श्री सुनील जी चौपड़ा, जोधपुर
१०२.फतेहाबाद	१. श्री सुनील जी छिंगावत, इन्दौर
	२. श्रीमती प्रमिला जी छिंगावत, इन्दौर
१०३.भट्टु मण्डी	१. श्री भानामल जी जैन, सोनीपत
	२. श्री सुमेरचन्द जी जैन, सोनीपत
१०४.भिवानी	१. श्री सुमतिबाबु जी जैन,मण्डी डबवाली
	२. श्री लक्ष्मीचन्द जी छाजेड़, समदड़ी
१०५.नारनोल	१. श्री पारसचन्द जी जैन, नैनवा
	२. श्री ताराचन्द जी जैन, देई
	३. श्री कमलेशचन्द जी जैन, देई

अन्य राजस्थान क्षेत्र

१०६.विज्ञान नगर, कोटा	१. श्री नवरतनमल जी डोसी, जोधपुर
	२. श्री राजेन्द्र जी कुम्भट, जोधपुर
१०७.पदमपुर मण्डी	१. श्री राजमल जी मेहता, डूंगला
	२. श्रीमती रमादेवी जी मेहता, डूंगला
१०८. सांगरियामण्डी	१. श्री दिनेश जी जैन, कुश्तला
	२. श्री नितीन जी जैन, कुश्तला

मध्यप्रदेश क्षेत्र

१०६.भोपाल	१. श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जलगांव
	२. श्री निलेश जी जैन, जलगांव
	३. सुश्री सोनाली जी दर्डा, चिंचाला
	४. सुश्री रीना जी जैन, जलगांव
११०.जावरा	१. श्री धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर
	२. श्री प्रदीप जी धारीवाल,पाली
	३. श्री नीरज जी सुराणा, ब्यावर
१११. शुजालपुर मण्डी	१. श्री पदमचन्द जी जैन, बजरिया
	२. श्री हरकचन्द जी जैन, बजरिया
	३. सुश्री अमिता जी जैन, बजरिया
११२.नीमच सिटी	१. श्रीमती लीला जी सालेचा, जलगांव
	२. श्रीमती विमला जी सिंघवी, धुलिया
	३. श्रीमती निर्मला जी जैन, छिंदवाड़ा
११३. बलकवाड़ा	१. श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन, छोटी कसरावद
	२. श्री प्रेमचन्द जी जैन, बलकवाड़ा
	३. श्री अंकित जैन, इन्दौर
	४. श्री नीरज जी जैन, इन्दौर
११४.संजीत	१. श्री राजमल जी ओस्तवाल, जोधपुर
	२. श्री सम्पतराज जी बोथरा, जोधपुर
११५.जबलपुर	१. श्री माणकचन्द जी गादिया, चालीसगांव
	२. सौ. प्रमिला जी गादिया, चालीसगांव
	३. सौ. सुधा जी आंचलिया, चालीसगांव
११६.अंजड़	१. श्री कन्हैयालाल जी फाफरिया, नीमच
	२. श्री हरकूलाल जी गांधी, सिंगोली
११७.हरसूद	१. श्री शांतिलाल जी गांधी, सिंगोली
	२. श्री हंसराज जी पितलीया, पारसोली
	३. सुश्री सीमा जी गांधी, सिंगोली
११८.बेरछा	१. श्री ऋषभ जी जैन, पीपाड़
	२. श्री अरिहंत जी मेहता, पीपाड़
	३. श्री रोशन जी जैन, पीपाड़
११६.श्योपुरकलां	१. श्री अभिषेक जी नाहर, इन्दौर
	२. श्री राहुल जी तातेड़, इन्दौर
१२०.गरोठ	१. श्री करणराज जी मेहता, जोधपुर
१२१.कालुखेड़ा	१. श्री रिखबलाल जी मारू, कपासन
	२. श्रीमती कमला जी मारू, कपासन
१२२.महागढ़	१. श्री समरथमल जी लोढ़ा, महागढ़
	२. श्री सुभाष जी जैन, महागढ़
१२३.छोटी कसरावद	१. श्रीमती ममता जी जैन, छोटी कसरावद
	२. श्रीमती स्नेहलताजी जैन, छोटी कसरावद

	३. कु. नमिता जी जैन, छोटी कसरावद
१२४.सैंधवा	१. श्री शांतिलाल जी चौपड़ा, जोधपुर
	२. कु. भारती जी वेदमुथा, नागद
	३. कु. नम्रता जी वेदमुथा, नागद
१२५.इच्छापुर	१. श्रीमती उषा जी कोठारी, जलगांव
	२. कु. वर्षा जी कोठारी, जलगांव
	३. कु. सोनल जी जैन, बडनेरा
१२६.मगरदा	१. श्री सौभागमल जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री पदम जी जैन, सूरवाल, बजरिया
१२७.पीपलिया बजुर्ग	१. श्री रामप्रसाद जी जैन, चौथ का बरवाड़ा
	२. श्री जिनेन्द्र जी जैन, चौथ का बरवाड़ा
१२८.बागोद	१. श्री बाबुलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री ज्ञानचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर
१२६.सिवनीमालवा	१. श्री राहुल जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री पवन कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर
१३०.आकोदिया मण्डी	१. श्री शान्ताप्रसाद जी जैन, बजरिया
	२. श्री लड्डूलाल जी जैन, आ.म., स.मा.
	३. श्री नीरज जी जैन, चौथ का बरवाड़ा
१३१. ओवेदुलागंज	१. श्री नगीनचन्द जी डाकोलिया, करही
	२. श्री विमलचन्द जी खिंवसरा, खरगौन
	३. श्री जितेन्द्र जी मुणोत, इन्दौर
१३२.इच्छावर	१. श्रीमती बालीबाई भण्डारी, नान्द्रा
	२. श्रीमती सुभद्रा जी बाबेल, मन्दसौर
	३. श्रीमती निर्मला जी मुगदिया, इन्दौर
१३३. बड़वानी	१. श्रीमती शान्ता जी मुणत, इन्दौर
	२. सुश्री वर्षा जी मुणत, इन्दौर
१३४.चारूवा	१. श्री सुभाषचन्द जी पावेचा, इन्दौर
	२. श्री विमल जी पोरवाल, इन्दौर
	३. श्री यश जी बाफना, इन्दौर
१३५.बरेली	१. श्री शालिभद्र जी चपलोत, उज्जैन
	२. श्री हरकचन्द जी पोरवाल, इन्दौर

पोरवाल क्षेत्र

१३६.बजरिया	१. श्री प्रकाश जी हुण्डीवाल, जलगांव
	२. श्री ललित जी हुण्डीवाल, जलगांव
	३. श्री बाबुलाल जी जैन, बजरिया
१३७.अलीगढ़	१. श्री सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर
	२. श्री पदम जी लुणावत, पीपाड़
१३८. गंगापुर सिटी	१. श्री जगदीशजी जैन, सुमेरगंजमण्डी
	२. श्री प्रेमप्रकाश जी जैन, आदर्श नगर
	३. श्री जिनेन्द्र जी जैन, गंगापुर सिटी

१३९.सुमेरगजमण्डी	१. श्री रामदयाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री सौभागमल जी जैन, कुस्तला
१४०.आदर्शनगर	१. श्री शिखरचन्द जी छाजेड़, करही
	२. श्री विमल जी तातेड़, इन्दौर
१४१. सवाईमाधोपुर	१. श्री मगनलाल जी जैन, सवाईमाधेपुर
	२. श्री मोहनलाल जी सर्राफ, सवाईमाधोपुर
१४२.नसिया गंगापुर	१. श्रीमती कुमकुम जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्रीमती मीना जी जैन, बजरिया
१४३.जरखोदा	१. श्री महेशचन्द जी जैन, हिण्डौन
	२. श्री बाबुलाल जी जैन, हिण्डौन
१४४.देई	१. श्रीमती सुशीला जी जैन, बजरिया
	२. श्रीमती आशा जी जैन, बजरिया
१४५.दूणी	१. श्री जितेन्द्र जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री गिरधारीलाल जी जैन, सवाईमाधेपुर
१४६.उनियारा	१. श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन, उनियारा
१४७.फलोदी क्वारी	१. श्री अमोलकचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री श्यामलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
१४८.देवली	१. श्रीमती संतरा जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. सुश्री समता जी जैन, सवाईमाधोपुर
१४९.चोरू	१. श्री रामस्वरूप जी जैन, गंगापुर सिटी
	२. श्री प्रमोद कुमार जी जैन, बरवाड़ा
१५०.मांगरोल	१. श्री महावीरप्रसाद जी जैन, चौ.का बरवाड़ा
	२. श्री उम्मेदचन्द जी जैन, झुण्डवा
१५१. बाबई	१. श्री बृजमोहन जी जैन, लहचोड़ा
	२. श्री सुमेरचन्द जी जैन, वैर
१५२.कुण्डेरा	१. श्री हुकमचन्द जी जैन, हिण्डोन
	२. श्री धर्मचन्द जी जैन, हिण्डोन
१५३.इन्द्रगढ़	१. श्री बृजमोहन जी जैन,
	२. श्री सुमेरचन्द जी जैन
१५४.नैनवा	१. श्री पुखराज जी जैन, नैनवा
	२. श्री महावीरप्रसाद जी जैन, नैनवा

पल्लीवाल क्षेत्र

१५५.मण्डावर	१. श्री राजेन्द्र जी पटवा, जयपुर
	२. श्री ऋषभ जी जैन, जयपुर
१५६.वर्द्धमान नगर, हिण्डौन	१. श्री अमोलकचन्द जी जैन, सुमेरगजमण्डी
	२. सुश्री ममता जी जैन, चौ.का बरवाड़ा
	३. सुश्री किरण जी जैन, अलीगढ़
१५७.खेरली	१. श्री रमेशचन्द जी जैन, समिधी, स.मा.
	२. श्री रामस्वरूप जी जैन, कुण्डेरा

	३. श्री बाबुलाल जी जैन, खेरली
१५८.हिण्डौनसिटी	१. श्री तेजराज जी भण्डारी, जयपुर
	२. श्री अमितकुमार जी जैन, जयपुर
१५६.फाजिलाबाद	१. श्री मगनचन्द जी जैन, फाजिलाबाद
१६०.भरतपुर	१. श्री प्रेमचन्द जी जैन, भरतपुर
	२. श्री शांतिलाल जी जैन, भरतपुर
१६१.हरसाना	१. श्री कृष्णमोहन जी जैन,हिण्डौनसिटी
	२. श्री श्रेयांस कुमार जी जैन, हिण्डौन सिटी
१६२.अलवर	१. श्री सुमतिचन्द जी मेहता, पीपाड़
	२. श्री धनपतचन्द जी मेहता, पीपाड़
१६३.परबैणी	१. श्री रामजीलाल जी जैन, खेरली
१६४.पहरसर	१. श्री धर्मचन्द जी जैन, खेरली
१६५.बौंण	१. श्री मदनमाहन जी जैन, मण्डावर
१६६.सहाड़ी	१. श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, सहाड़ी
१६७.गोपालगढ़,भरतपुर	१. श्री महेन्द्रपाल जी जैन, गोपालगढ़
	२. श्री सुधीर कुमार जी जैन, गोपालगढ़
१६८.बरगमा	१. श्रीमती मिथलेश जी जैन, खोह
	२. श्रीमती आशा जी जैन, खोह
१६६.मौजपुर	१. श्री छगनचद जी जैन, खोह
	२. श्री पदमचन्द जी जैन, नदबई
	३. श्री हरीशचन्द जी जैन, मौजपुर
१७०.शेरपुर	१. श्री बाबूलाल जी जैन, गोपालगढ़
	२. श्री पारसचन्द जी जैन, गोपालगढ़
१७१.झारेड़ा	१. श्री सुरेशचन्द जी जैन, खेरली
	२. श्री अरूण कुमार जी जैन, खेरली
१७२.करौली	१. श्री चन्द्रप्रकाश जी जैन, करौली
१७३.रसीदपुर	१. श्री गुजरमल जी जैन, रसीदपुर
	२. श्री श्रीपाल जी जैन, रसीदपुर
१७४.वैर	१. श्री सुमेरचन्द जी जैन, वैर
१७५.खौह	१. श्री प्रदीपकुमार जी जैन, खौह
	२. श्री प्रसूनकुमार जी जैन, खौह
१७६.गढ़ी सवाईराम	१. श्री रामदयाल जी जैन, गढ़ी सवाईराम
१७७.वडेर	१. श्री श्रीपाल जी जैन, वडेर
	२. श्री भागचन्द जी जैन, वडेर

छत्तीसगढ़ क्षेत्र

१७८.मानपुर	१. श्री दिनेश जी नाहटा, नगरी
	२. श्री अनिल जी ढेलड़िया, नगरी
१७६.शेलेन्द्रनगर (रायपुर)	१. श्री मोहनलाल जी पीपाड़ा, इन्दौर
	२. कु. शीतल जी जैन, कंवर्धा
१८०.हलवाईलेन (रायपुर)	१. श्री प्रकाश जी कोठारी, इन्दौर

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त पर्युषण सहायतार्थ राशि

आलन्दुर	५५०३.००	चिदम्बरम्	५१०१.००
कोलकाता	५०००.००	आरकाट	३५००.००
पल्लीपट्ट	३५००.००	आवड़ी	३१००.००
उलुन्दर पेठ	२५०५.००	वाराणसी	२५०१.००
पम्मल	२५०१.००	अलवर	२१०१.००
पाड़ी	२१००.००	जावरा	१५०१.००
शुजालपुर मण्डी	१५००.००	अम्बाजोगाई	१५००.००
नलीकुपम	१५००.००	कोइमनार कोइल	१५००.००
चाकसू	१५००.००	दूदू	१५००.००
अलीगढ़	११११.००	सैंधवा	११११.००
दरीबा माइन्स	११११.००	मायावरम	११०१.००
मावली जंक्शन	११००.००	विज्ञान नगर, कोटा	११००.००
मण्डी डबवाली	११००.००	मेड़ता सिटी	११००.००
जावर माइन्स	११००.००	कोलीडम	११००.००
बाड़मेर	१००१.००	विरदाचलम	१००१.००
पांडरकवड़ा	१०००.००	चिंगलपेठ	१०००.००
सिवनीमालवा	१०००.००	कलाकुरची	१०००.००
पहुर	७२५.००	बेरछा	७०१.००
गरोठ	६१२.००	खलाणे	५११.००
इच्छापुर	५०१.००	वरखेड़ी	५०१.००
मण्डावर	५०१.००	जामनेर	५००.००
लासुर	५००.००	नसीराबाद	५००.००
आगोलाई	५००.००	गंगाखेड़	३५१.००
दूणी	३००.००	गोपालगढ़, भरतपुर	२५१.००
लोहारा	२५०.००	वडाला वडाली	२५०.००
खण्डाला	२०१.००	भानसोल गढवाड़ा	२०१.००
देउर बुद्रक	१५१.००	बौंण	१५१.००
पचाला	१५०.००	***कुल योग***	***११८०५७.००***

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव को प्राप्त पर्युषण सहायता

रत्नागिरी	३१००.००	चिपलुण	३१००.००
खेड़	३१००.००	चौपड़ा	२१०१.००
वाकोद	१५०१.००	केलसी	१५००.००
मण्डनगढ़	१५००.००	जबलपुर	१५००.००
भंडारा	१५००.००	मुक्ताई नगर	१२५१.००
आलेगांव	११०१.००	किनगांव राजा	१००१.००
तोण्डापुर	१००१.००	सिल्लोड़	१०००.००

बिटनेर	७८१.००	मांडल	७०२.००
कासमपुरा	७०१.००	बोरकुंड	७०१.००
चिंचाला	६२१.००	भराड़ी	६००.००
भड़गांव	५८६.००	कजगांव	५५३.००
उम्बरखेड़	५५२.००	नागद	५०२.००
पिलखोड़	५०१.००	मुकटी	५०१.००
लासुर चौपड़ा	५०१.००	सौंदाणा	५०१.००
वाकड़ी	५०१.००	शिरपुर	५०१.००
तलेगांव	५०१.००	जायखेड़ा	५००.००
पवननगर, नाशिक	५००.००	बांबरूड़ राणिचे	२५१.००
फागणा	२५१.००	लोहारा	२५०.००
बोरखेड़ा	२०१.००	लासुरगांव	२०१.००
शेलवड़	१५१.००	***कुल योग***	***३६३६७.००***

अन्त में हम उन सभी क्षेत्रों के श्रीसंघों के पदाधिकारियों व सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने इस संघ को सेवा का सुअवसर प्रदान किया। साथ ही उन स्वाध्यायी भाई-बहनों का भी हम हृदय से आभार एवं धन्यवाद प्रकट करते हैं, जिन्होंने इस संघ के निर्देशानुसार पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में बाहर पधारकर अपना अमूल्य समय जिनशासन की सेवा में प्रदान किया।

सुशीला बोहरा
संयोजक

रिखबचन्द मेहता
सचिव

थकान

श्री दिलीप धींग

मानव कितना बेभान!
संसार में कैसा अज्ञान?
न तत्त्व का ज्ञान,
न स्वयं का भान,
न शील-सदाचार,
न भाव-तप-दान।
मकान से दुकान तक
और
दुकान से मकान तक;
आ जाती बस
जीवन की थकान।

-बम्बोरा-३१३७०६, उदयपुर (राज.)

समाचार-संकलन

पर्युषण के पश्चात् भी धर्माराधन की निरन्तरता

इचलकरंजी—**परम श्रद्धेय आगममर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ तथा **व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा ७ के पावन सान्निध्य में इचलकरंजी में आशा से अधिक तपाराधन एवं धर्माराधन हुआ है। आठ मासखमण तप सम्वत्सरी तक हो चुके थे, दो मासखमण उसके पश्चात् सम्पन्न हुए हैं। सुश्रावक श्री उदयराज जी नाहर एवं चंगेरिया परिवार की बहिन ने मासखमण तप किए हैं।

कुछ तपश्चर्या मौन के साथ गुप्त रूप से भी की गई है। तीन बहिनों ने सिद्धि तप किया है। पूज्य आचार्यप्रवर की प्रेरणा से आयी धर्मजागृति स्पष्ट परिलक्षित होती है। दया, संवर, नवरंगी, पचरंगी आदि अनेक तप हुए हैं। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती श्री संघों का एवं श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं का आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग सेवा की भावना से निरन्तर आवागमन बना रहता है। आगत श्री संघ आचार्यप्रवर के पावन श्रीचरणों में अपने-अपने क्षेत्रों में चातुर्मास की और शेखेकाल की भावपूर्ण विनतियां रख रहे हैं। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के पश्चात् श्रद्धालुओं का आवागमन विशेष रूप से हो रहा है। आगत भक्त भक्ति-भावना से आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर शासन की प्रभावना कर रहे हैं। इचलकरंजी श्रीसंघ की आवास- भोजन व्यवस्था महावीर भवन के पास गायत्री मंगल कार्यालय में होने से लोगों को बहुत सुविधाकर है। सुश्रावक श्री जवाहरलाल जी बोहरा सपरिवार सेवा में रात-दिन लगे हुए हैं। त्याग-तप के प्रति इचलकरंजी वालों की भावना एवं स्वधर्मी बन्धुओं के प्रति आत्मीयता अनुकरणीय है।

जोधपुर—**आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ५ तथा **साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा.** आदि ठाणा ३ के सान्निध्य में घोड़ों का चौक स्थानक में, **शासन- प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** के सान्निध्य में पावटा स्थित वर्द्धमान भवन में तथा **सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ४ के सान्निध्य में सरस्वती नगर में धर्ममय वातावरण बना हुआ है। १३-१४ सितम्बर को अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की बैठकों के आयोजन के समय जोधपुर में देशभर से

श्रावक-श्राविकाओं का आगमन हुआ। उपाध्यायप्रवर एवं श्री गौतममुनि जी म.सा. के प्रवचन-पीयूष से सबने अपने को लाभान्वित किया। बाहर से आए श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने पावटा एवं सरस्वती नगर विराजित महासतियों के दर्शन-वन्दन एवं त्याग-प्रत्याख्यान का भी लाभ लिया। पर्युषण के पश्चात् भी जोधपुर में तपस्या का क्रम जारी है। सरस्वती नगर में श्रीमती प्रेमलता दुग्गड़ धर्मपत्नी श्री बाबूलाल जी दुग्गड़ ने पूर्व में १३ उपवास किये थे, उसके पश्चात् पुनः १० दिवसीय तप किया। श्रीमती प्रभा भण्डारी, श्रीमती भंवरी बाई देसरला ने ६ दिवसीय, श्रीमती सुवा बाई देसरला एवं कुमारी समता कवाड़ ने ८ दिवसीय तप किया। श्रीमती एवं श्री मदनलाल जी कवाड़ ने श्रीमती रेशमी बाई धर्मपत्नी सुश्रावक श्री इन्द्रचन्द जी देसरला के ४१ दिवसीय तपस्या के पूर के दिन आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया।

भोपालगढ़—शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा ४ के पावन सान्निध्य में वीतराग वाणी की निर्मल सरिता सतत प्रवाहित हो रही है। तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. के १ सितम्बर को ६ दिवसीय तप का पारणक समाधिपूर्वक सम्पन्न हुआ है। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही धर्मध्यान का जो ठाट लगा वह पर्युषण के समय और अधिक वृद्धिगत हुआ। सुश्रावक श्री शांतिलाल जी कांकरिया ने ३३ दिवसीय उग्र तप किया तथा सम्वत्सरी पर्व तक १३-१४ अठाई तप हुए। पर्युषण के आठों दिनों में विभिन्न विषयों पर प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं।

अहमदाबाद—व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. महासती श्री शशिकला जी म.सा. आदि ठाणा ५ के सान्निध्य में पर्युषण में एवं उसके अनन्तर भी अच्छा धर्माराधन चल रहा है। पर्युषण में प्रार्थना, प्रवचन आदि में गजब का ठाट रहा। प्रवचन में हजारों की संख्या में उपस्थिति रही। अपराह्न में २ से ४ बजे तक महिलाएँ ज्ञानाराधन एवं चौपाई-श्रवण करती हैं। श्री विकास जी सुपुत्र श्री बाबूलाल जी बागरेचा ने एकाशन का मासखमण तप किया है। बहिनों में प्रातः ७ से सायं ७ बजे तक भाइयों में शाम ७ बजे से सुबह ७ बजे तक नमस्कार मंत्र का जाप हुआ।

कोटा—व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी (सोहनजी) म.सा. महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४ के पावन सान्निध्य में औद्योगिक नगरी कोटा में धर्माराधन, ज्ञानाराधन एवं तपाराधन का ठाट लगा हुआ है। सुश्राविका श्रीमती कमलाबाई धर्मपत्नी स्व. श्री बद्रीलालजी एवं माता श्री हरकचन्द जी जैन, देवली वालों के ३८ दिवसीय तप तथा अनेक अठाई तप के पश्चात् आश्विन कृष्णा ६ को प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकंवर जी म.सा. की पुण्यतिथि पर ४५ महिलाओं ने भिक्षु दया का आदर्श उपस्थित किया है। महासती जी के यशस्वी चातुर्मास की महक सर्वत्र फैल रही है।

चौथ का बरवाड़ा—व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा.

महासती श्री समर्पिता जी म.सा. आदि ठाणा ५ के सान्निध्य में नौ, अठाई, पचोला तथा अनेक तेले की तपस्या हुई है। छोटे से कस्बे में अब तक १६ अठाई, ५ पचोले एवं ४५ तेले की तपस्या एक रिकार्ड है। एकाशन, आयम्बिल, उपवास तथा तेले की लड़ी चल रही है। धर्मचक्र, पचरंगी, एकाशन का मासखमण आदि तप भी हुए हैं। चार पचरंगी हो गई है। महासती जी के सान्निध्य में ज्ञानाराधन एवं तपाराधन के साथ प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण आदि का लाभ लेकर चौथ का बरवाड़ा एवं निकट के ग्रामवासी हर्षित हैं। पर्युषण में आठ दिनों तक नमस्कार मंत्र का अखण्ड जाप हुआ। महासती श्री समर्पिता जी म.सा. एवं महासती श्री वृद्धिप्रभा जी म.सा. ने भी अठाई तप कर धर्माराधन की प्रभावना की है। अनेक स्थानों से दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है।

कुशतला– व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा ४ के सान्निध्य में धर्म-ध्यान एवं तप-त्याग का ठाट लगा हुआ है। छोटे से ग्राम में २६ अठाई तप, १६० तेले, ४ ग्यारह दिवसीय तप, २ नौ दिवसवीय तप, ५ पचोला, २ धर्मचक्र, ३ पचरंगी आदि तपस्याएँ पूर्ण हो चुकी हैं। पर्युषण पर्व के आठों दिन अखण्ड जाप हुआ। दोपहर बाद २ से ४ बजे तक महिलाओं एवं बालक-बालिकाओं में धार्मिक शिक्षण बराबर चल रहा है।

निफाड़ में व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में एक ही परिवार के आठ सदस्यों ने सिद्धि तप किया है। बीजापुर में विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., सतारा में व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. तथा नदबई में व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. के सान्निध्य में भी तप-त्याग, ज्ञानाराधन एवं धर्माराधन का प्रवाह निरन्तर चल रहा है। चातुर्मासों की महक सर्वत्र फैल रही है। श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं के आगमन से त्याग-प्रत्याख्यानों का धर्ममय वातावरण बना हुआ है।

-अरुण मेहता, महामंत्री-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

लब्धप्रतिष्ठ रत्नव्यवसायी सुश्रावक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत रत्नसंघ के अध्यक्ष मनोनीत

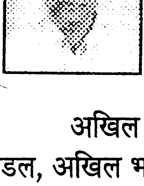
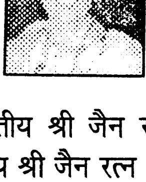
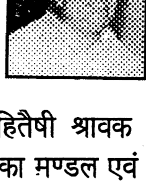
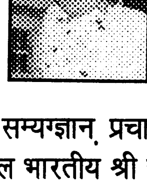

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की **कार्यकारिणी एवं वार्षिक साधारण सभाओं के आयोजन**

जोधपुर में १३ व १४ सितम्बर २००३ को अत्यन्त सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुए। संघ की वार्षिक साधारण सभा ने सर्वसम्मति से संघ के कार्याध्यक्ष लब्धप्रतिष्ठ रत्नव्यवसायी सुश्रावक **श्री कैलाशचन्द जी हीरावत** को संघाध्यक्ष का गौरवशाली पद प्रदान किया। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष पद का दायित्व स्वाध्याय संघ की संयोजक संमाज-सेवी श्राविकारत्न **श्रीमती सुशीला जी बोहरा** को तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के अध्यक्ष पद का दायित्व श्री वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के जयपुर केन्द्र की क्षेत्रीय निदेशिका, विदुषी श्राविका **डॉ. (श्रीमती) सुषमा जी सिंघवी** को प्रदान किया गया। युवारत्न **श्री अशोक जी कवाड़-चेन्नई,** जो चार्टड एकाउन्टेंट हैं और जैनालॉजी में शोध कर रहे हैं, को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् का अध्यक्ष पद प्रदान किया गया। संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के चुनाव के साथ नव-निर्वाचित अध्यक्षों को अपनी-अपनी कार्यकारिणी गठन हेतु अधिकृत किया गया। **संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने नव-निर्वाचित अध्यक्षों को शपथ दिलाई।** निवर्तमान संघाध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना, मण्डल के निवर्तमान अध्यक्ष श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, श्राविका मण्डल की निवर्तमान अध्यक्ष श्रीमती विमला जी मेहता एवं युवक परिषद् के निवर्तमान अध्यक्ष श्री अनिल जी बोहरा के सुन्दर कार्यकाल एवं विशेष उपलब्धियों की सदस्यों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

संघ एवं मण्डल की कार्यकारिणी एवं आमसभा की बैठकें सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यकारिणी की संयुक्त बैठक १३ सितम्बर २००३ को तथा आमसभा १४ सितम्बर २००३ को ओसवाल कम्यूनिटी सेण्टर में संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

कार्यकारिणी बैठक में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, आचार्य श्री हस्ती जीवन-चरित्र, आजीवन-साहित्य-सदस्यता आदि विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। श्री जिनेन्द्रकुमार जी जैन-दिल्ली, प्रो. चांदमल जी कर्णावट-उदयपुर, श्री मनोहरलाल जी कांकरिया-चेन्नई, श्री चंचलमल जी चोरड़िया-जोधपुर, श्री जवाहरलाल जी बाघमार-चेन्नई, श्री अनिल जी बोहरा-जोधपुर आदि महानुभावों ने कई प्रकार के सुझाव प्रस्तुत किए।

आमसभा में संघ एवं मण्डल का प्रतिवेदन क्रमशः संघ महामंत्री श्री अरुण जी मेहता एवं मण्डल के मंत्री श्री प्रकाशचन्द जी डागा ने प्रस्तुत किया। सभा में वर्ष २००२ एवं २००३ का अंकेक्षित एवं वर्ष २००३-२००४ का अनुमानित बजट प्रस्तुत किया गया, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

आमसभा में श्री हस्ती स्मृति ग्रन्थ समिति के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना

ने पूज्य गुरुदेव अध्यात्मयोगी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जीवनी के प्रकाशन के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि प्रख्यात जैन मनीषी डॉ. धर्मचन्द जैन के सहयोग से 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ का लेखन कार्य पूर्ण हो चुका है तथा जीवनी का प्रकाशन कार्य दिल्ली में चल रहा है, जो लगभग पूर्ण होने वाला है। शासन सेवा समिति के सदस्य श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने जीवनी में २० हजार रुपये का योगदान कर अधिकाधिक सदस्य बनाने की अपील की। बाफना जी ने कहा कि ग्रन्थ प्रकाशन के पश्चात् अवशिष्ट राशि का उपयोग स्वाध्याय संघ को आत्मनिर्भर बनाने हेतु किया जाएगा। डॉ. धर्मचन्द जैन ने कार्यकारिणी बैठक में जीवन-चरित्र के विभिन्न खण्डों का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी विशेषताओं से अवगत करा दिया था।

आमसभा में श्री सुमतिचन्द जी जैन-मण्डी डबवाली, श्री ज्ञानचन्द जी जैन-नदबई, किशोर कुमार जी छाजेड़-हैदराबाद, श्री सुरेशचन्द जी जैन-सहाड़ी आदि ने सुझाव प्रस्तुत किए।

संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत ने सदन को बताया कि संघ-संरक्षक मण्डल की बैठक में संघाध्यक्ष पद के नाम के संबंध में विचार हुआ है, जिस पर आप सबकी सहमति अपेक्षित है। उन्होंने संघाध्यक्ष पद हेतु संघ के कार्याध्यक्ष श्रीमान् कैलाशचन्द जी हीरावत का नाम रखा, जिसका सभी सदस्यों ने हर्ष-हर्ष, जय-जय के जयनाद से अनुमोदन किया। इसी प्रकार सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष पद हेतु स्वाध्याय संघ की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा के नाम का सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक मुणोत सा. ने बताया कि श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए उनकी साधारण सभाओं में घोषणा हो चुकी है। अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के अध्यक्ष पद हेतु विदुषी श्राविका डॉ. (श्रीमती) सुषमा जी सिंघवी और अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के लिए युवारत्न श्री अशोक जी कवाड़ का चुनाव किया गया है। उपस्थित सदस्यों ने चारों नव-निर्वाचित अध्यक्षों को बधाई देते हुए अपना हर्ष व्यक्त किया।

नव-निर्वाचित संघाध्यक्ष माननीय श्री कैलाशचन्द जी हीरावत ने अपने उद्बोधन में कहा कि मुझे एक नहीं, दो अध्यक्षों के साथ काम करने का सौभाग्य मिला। संघाध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना के मार्गदर्शन को मैं कभी भुला नहीं सकता। वे सबको स्नेह देते, पर मेरे ऊपर उनकी विशेष कृपा रही। बाफना साहब की कहने की कला बड़ी सजीव थी। वे किसी काम को कहते तो सबसे पहले काम करने वालों की अच्छाइयाँ सामने रखकर बड़ी शालीनता से अपनी बात रखते। यही कारण है कि संघ में कोई भी व्यक्ति उनकी बात नहीं टालता। नव-निर्वाचित अध्यक्ष महोदय ने बाफना साहब, जो बाई-पास सर्जरी के पश्चात् विश्राम कर रहे हैं, की भावना का इजहार करते कहा कि सभी पदाधिकारियों-कार्यकर्ताओं का स्नेह रहा, मैं

उनकी ओर से सभी का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूँ। हीरावत साहब ने संघ सदस्यों से अपेक्षा रखी कि पूर्ववर्ती अध्यक्षों की तरह अब सब मुझे अपना पूरा-पूरा सहयोग करेंगे।

नव-निर्वाचित संघाध्यक्ष महोदय ने संघहित के विषयों पर विचार रखने वाले महानुभावों के सकारात्मक सुझावों पर यथासंभव अमल का आश्वासन देते कहा कि मंगलदेश की भावना भाई श्री सुमतिचन्द जी जैन ने रखी। मंगलदेश स्वाध्याय से जुड़ा है, संघ से जुड़ने की उनकी भावना प्रमोदजन्य है। हम उन्हें संघ की मुख्य धारा में जोड़ने का प्रयास करेंगे। प्रवास के लिए पर्याप्त समय की बात को आवश्यक समझते हुए हीरावत साहब ने बताया कि स्वाध्याय संघ को इसका ध्यान दिलाया जायेगा। संत-सतीवृन्द की वृद्धि के लिए प्रयास करना हम-सबका कर्त्तव्य है। भाई श्री किशोर जी छाजेड़ के सद्प्रयासों से हमें हैदराबाद के एक परिवार से तीन बहिनों की दीक्षाओं का सुन्दर सुयोग मिला। हम त्यागानुरागी भाई- बहिनों को सहयोग करें और उनकी भावना बढ़ायें।

श्राविका मण्डल की नव-निर्वाचित अध्यक्षा डॉ. (श्रीमती) सुषमा जी सिंघवी ने अपने मनोभाव व्यक्त करते कहा कि मैं इस गुरुतर दायित्व को आपके सहयोग से निभा सकूँगी। डॉ. सिंघवी ने सामायिक-स्वाध्याय की निरन्तरता पर बल देते कहा कि हम जैन धर्म का मौलिक इतिहास पढ़ें। उन्होंने संघ की हर शाखा में इतिहास का सेट उपलब्ध कराने की आवश्यकता बताई। बच्चों में धार्मिक संस्कार एवं संघ स्तर पर सार्वजनिक जलमंदिर, अन्नपूर्णा केन्द्र आदि-आदि विषयों पर भी विचार रखें।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के निवर्तमान अध्यक्ष माननीय श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल ने अपने छः वर्ष के कार्यकाल की प्रमुख उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जिनवाणी की सदस्यता वृद्धि, स्वाध्याय संघ की प्रवृत्तियों का विस्तार और साहित्य प्रकाशन में अच्छा कार्य हुआ है। श्री डूंगरवाल साहब ने अपने कार्यकाल में रही कमियों के लिए क्षमायाचना भी की।

युवक परिषद् के नव-निर्वाचित अध्यक्ष श्री अशोक जी कवाड़ ने माता-पिता एवं धर्माचार्य-धर्मगुरु के उपकारों का स्मरण कर चेन्नई में युवासाथियों के स्नेहपूर्ण सहयोग के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने कहा कि युवक संघ के कार्यों में संगठन को सक्रिय करने का प्रयास रहेगा।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक एवं सभा के अध्यक्ष माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में संघ, मण्डल, श्राविका मण्डल और युवक परिषद् के कार्यों के प्रति संतोष व्यक्त करते कहा कि संघ की चारों संस्थाओं में अच्छा कार्य हुआ है, मैं अध्यक्षों एवं समस्त पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता हूँ। नव-निर्वाचित संघाध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत मूकसेवी है, संघ-सेवा में इनका पूरा समर्पण है, छः वर्षों तक कार्याध्यक्ष रह चुके हैं, संघाध्यक्ष के रूप में मैं इनकी सफलता की कामना करता हूँ। मण्डल अध्यक्ष श्रीमती

सुशीला जी बोहरा, श्राविका मण्डल अध्यक्ष डॉ. (श्रीमती) सुषमा जी सिंघवी और युवक परिषद् के अध्यक्ष भाई अशोक जी कवाड़, इन सभी की संघ के प्रति अटूट आस्था है, श्रद्धा-भक्ति और सेवा भावना है, इसलिए इनके कार्यकाल में अच्छा काम होगा, मैं अपनी शुभकामना व्यक्त करता हूँ। चारों संघों के अध्यक्षों का प्रस्ताव संघ-संरक्षक मण्डल में हुआ और सर्वानुमति से चयन हुआ, इसकी मुझे खुशी है।

आज चतुर्विध संघ को जागृत होने की जरूरत है। हम कट्टरता में विश्वास नहीं रखते फिर भी हमें दृढ़ता का परिचय देना है। कट्टरता हमारे संस्कारों में नहीं है। मुणोत साहब ने गुण दृष्टि विकसित करने की आवश्यकता पर बल देते कहा कि गुणग्राहकता का भाव रहेगा तो हमारा परस्पर का प्रेम बढ़ेगा और सभी गुरुभाई मेरे अपने हैं यह भाव जगेगा। हम एक-दूसरे के गुणों को देखकर प्रमोद व्यक्त करें, ईर्ष्या को मन में कभी स्थान न दें।

मुणोत साहब ने कहा कि हमने आचार्य भगवन्त को देखा है, उनका जीवन बोलता था। हम गुरु हस्ती-गुरु हीरा के भक्त हैं, इसलिए हमारे जीवन में प्रामाणिकता हो यह जरूरी है। हम आपस में प्रेम बांटें।

एक-दूसरा एक-दूसरे को संघ-सेवा में आगे बढ़ाये और अपने जीवन को ईमानदार और प्रामाणिक बनायें, यही आपसे अपेक्षा है। धन्यवाद के साथ आमसभा की बैठक सम्पन्न हुई।

जोधपुर में सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

आचार्य श्री हस्ती-स्मृति-सम्मान, युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा-सम्मान, विशिष्ट स्वाध्यायी-सम्मान के साथ बहुविध संघ-सेवियों का गुणी-अभिनन्दन कार्यक्रम रविवार दिनांक १४ सितम्बर को सायं ७ बजे ओसवाल कम्युनिटी सेन्टर, सरदारपुरा के विशाल सुसज्जित हॉल में संघ-संरक्षक-मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। माननीय न्यायमूर्ति श्री राजेश जी बालिया(न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय) समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे, वहीं माननीय न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया (न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय) का विशिष्ट अतिथि के रूप में सान्निध्य प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से किया गया। मंगलाचरण नन्हें से बालक प्रफुल्ल गिड़िया ने किया। "मैं जैन हूँ" संकल्प पाठ की प्रस्तुति शासन सेवा समिति के सदस्य श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने करवाई। संघ के महामंत्री श्री अरूण जी मेहता ने स्वागत भाषण के माध्यम से मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं स्वागत समारोह में पधारे सभी सदस्यों का स्वागत किया।

आचार्य श्री हस्ती-स्मृति-सम्मान वर्ष २००२ एवं २००३, युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा सम्मान वर्ष २००२ एवं २००३ तथा विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान वर्ष २००२ एवं २००३ से जब विद्वानों, युवारत्नों एवं स्वाध्यायियों को सम्मानित किया गया तो सभा-मण्डल ने हर्ष-हर्ष, जय-जय के निनादों से उसका अनुमोदन

किया। इन सबका सम्मान अभिनन्दन पत्र, शॉल, स्मृति चिन्ह एवं राशि का चैक प्रदान कर किया गया। इसी अवसर पर अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्तकर्ताओं को स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया। अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् ने चतुर्विध संघ-सेवा, सामायिक-स्वाध्याय कार्यक्रम, धार्मिक-शिक्षण, समाज-सेवा आदि के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाली शाखाओं को सम्मानित किया। (सम्मानित व्यक्तियों एवं शाखाओं का विवरण अलग से इसी अंक में प्रकाशित है।)

इस अवसर पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत ने कहा कि जोधपुर में जहाँ दो वर्षों पूर्व संघ का अधिवेशन हुआ, वहाँ इस धर्मधरा पर पुनः संघ एवं उसकी सहयोगी संस्थाओं की कार्यकारिणी एवं वार्षिक साधारण सभाओं के साथ सम्मान समारोह के आयोजन का सुअवसर प्राप्त हुआ, यह निःसन्देह हमारे लिए सौभाग्य का विषय है। डॉ. भाण्डावत सा. ने सभी अतिथियों एवं देशभर से पधारे गुरुभ्राताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया।

न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया साहब ने आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के गुण-स्मरण के साथ आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द को भाव वन्दन कर कहा कि गुणिजनों का सम्मान करना एक अच्छी परम्परा है। इससे समाज में एक अच्छा संदेश जायेगा। न्यायमूर्ति श्री टाटिया साहब ने संघ- समाज में भावना पूर्वक काम करने का आह्वान किया और इस सुन्दर आयोजन को सार्थक बताया।

न्यायमूर्ति श्री राजेश जी बालिया ने इस समारोह को गौरवशाली बाताते कहा कि प्रबुद्ध मनीषियों के सम्मान से संघ स्वयं सम्मानित होता है। न्यायमूर्ति श्री बालिया साहब ने उपस्थित जन समुदाय के बीच आने व सबसे मिलने के लिए अपनी प्रसन्नता का इजहार करते हुए एकता के प्रयासों को आगे बढ़ाने पर बल दिया।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक एवं सम्मान समारोह के अध्यक्ष श्री मोफतराज जी मुणोत ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि आदि मंचासीन विराज रहे महानुभावों का नामोल्लेख कर अपनी बात यह कहते प्रारम्भ की कि जिस संघ में गुणियों का सम्मान होता है वह जीवन्त संघ होता है। 'गुणिषु प्रमोदं' पर विचार रखते मुणोत साहब ने कहा कि हमारी परम्परा में यह सिलसिला वर्षों से चला आ रहा है। मुणोत साहब ने सम्प्रदाय और सम्प्रदायवाद के परिप्रेक्ष्य में कहा कि **सम्प्रदाय पारिवारिक व्यवस्था है। हम उन्नति करें, किन्तु हमारी उन्नति किसी की अवनति पर न हो, हमारा सुख किसी के दुःख पर न हो, हमारा सम्मान किसी दूसरे के अपमान पर न हो। हम वाद से बचें और लक्ष्य के प्रति जागरूक रहें। मुणोत साहब ने कट्टरता नहीं दृढ़ता की अवधारणा पर विचार रखते कहा कि हम अपनी उन्नति के लिए सतत प्रयासरत रहें, अपनी कमियां दूर करें।** मुणोत साहब ने संघ में परस्पर

प्रेम-मैत्री- सहयोग को अच्छा बताया और कहा कि हम इस दिशा में निरन्तर आगे बढ़ते रहें।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री प्रकाशचन्द जी डागा ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, समारोह के अध्यक्ष सहित मंचासीन महानुभावों का एवं समारोह में पधारे श्रावक-श्राविकाओं का आभार प्रदर्शित किया। कार्यक्रम का सुन्दर रीति से प्रभावी संचालन युवारत्न श्री चन्द्रेश जी भण्डारी ने किया।

प्रो. कल्याणमल जी लोढ़ा को वर्ष २००२ का आचार्य श्री हस्ती-स्मृति सम्मान

अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षाविद् एवं साहित्यमनीषी प्रोफेसर कल्याणमल जी लोढ़ा को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर ने जोधपुर में १४ सितम्बर २००३ को आयोजित एक भव्य समारोह में 'आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान वर्ष २००२' से सम्मानित किया हैं। प्रोफेसर लोढ़ा को यह सम्मान उनकी उल्लेखनीय साहित्य-सेवा के लिए प्रदान किया गया। 'प्रणव तत्त्व' उनकी सम्पादित कृतियों में अत्यधिक चर्चित रही है। वाग्विभव, वाक्पथ, वाग्मिता आदि अनेक कृतियाँ प्रकाशित हैं। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से भी आपकी दो कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं- अहिंसा निउणा दिट्ठा' एवं 'नमो गणि-गजेन्द्राय'। आप पत्रात्मक निबन्ध शैली के उन्नायक एवं हिन्दी- साहित्य के प्रसिद्ध समालोचक हैं। प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने आपको भगवान महावीर के २६००वें जन्म-कल्याणक के अवसर पर 'जैन रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया है। जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर लोढ़ा सन् १९९९ में लन्दन में आयोजित षष्ठ विश्व हिन्दी सम्मेलन में सम्मानित हो चुके हैं। आप राष्ट्र की अनेक शैक्षिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं तथा विवेक पुरस्कार, बिहारी पुरस्कार, महात्मा गांधी पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कारों से आप सम्मानित हैं। कोलकाता विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त प्रो. लोढ़ा ८२ वर्ष की अवस्था में भी साहित्य-साधना में सन्नद्ध हैं। आप लगभग १० वर्षों तक 'आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान निर्णायक समिति' के अध्यक्ष रहे हैं।

प्रोफेसर लोढ़ा की अनुपस्थिति में यह सम्मान उनके लघुभ्राता श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा (पूर्व न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय) ने मुख्य अतिथि श्री राजेश जी बालिया, न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय के कर कमलों से स्वीकार किया। पुरस्कार स्वरूप प्रो. लोढ़ा को २१ हजार रुपये का चैक, शॉल, अभिनन्दन-पत्र एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान किए गए।

प्रज्ञा भारती सम्मान-पश्चिम बंगाल की संस्था 'श्री सत्यानन्द देवायतन' ने आपको 'प्रज्ञाभारती' विरुद से सम्मानित किया है। प्रो. लोढ़ा को यह सम्मान उनके जन्म-दिवस पर २८ सितम्बर को प्रदान किया गया। प्रो. लोढ़ा इस दिन ८२ वर्ष के

हो गए हैं।

डॉ. मंजुला जी बम्ब को २००३ का आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान

रत्नसंघीय शासनसेवा समिति की विदुषी सदस्या डॉ. (श्रीमती) मंजुला जी बम्ब को उनकी शैक्षणिक एवं साहित्यिक सेवाओं के लिए सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा वर्ष २००३ का 'आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान' प्रदान किया गया। सम्मान रूप में २१०००/- की राशि का चैक, अभिनन्दन पत्र, शॉल एवं प्रतीक चिह्न प्रदान किए गए। उनकी अनुपस्थिति में यह सम्मान श्रीमान ज्ञानचन्द जी बम्ब ने समारोह के विशिष्ट अतिथि माननीय श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया (न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय) के कर-कमलों से स्वीकार किया।

नवरतन जी भंसाली एवं अशोक जी कवाड़ को युवा प्रतिभा-सम्मान

वर्ष २००२ के युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा-सम्मान से बैंगलोर के प्रतिभाशाली युवा श्री नवरतनमल जी भंसाली को तथा वर्ष २००३ के इसी सम्मान से चेन्नई के प्रतिभासम्पन्न युवारत्न श्री अशोक जी कवाड़ को सम्मानित किया गया। श्री भंसाली जी स्वाध्याय एवं सेवा के क्षेत्र में अपना योगदान कर रहे हैं तथा श्री अशोक जी कवाड़ ने श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई के अध्यक्ष पद पर रहकर सेवा, समर्पण एवं प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया है। श्री कवाड़ जी सी.ए. हैं, व्यवसायी हैं तथा साथ ही जैनदर्शन में पी-एच.डी. हेतु शोध कार्य में संलग्न हैं। ये दोनों पुरस्कार भी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा १४ सितम्बर २००३ को जोधपुर में आयोजित भव्य समारोह में प्रदान किए गए। इस सम्मान में अभिनन्दन-पत्र, ११०००/- का चैक एवं स्मृति चिन्ह के साथ शॉल ओढ़ाकर युवारत्नों को अलंकृत किया गया।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान से श्री पदमचन्द जी जैन एवं श्री रिखबराज जी कर्णावट सम्मानित

जोधपुर में आयोजित संघ के सम्मान समारोह में वर्ष २००२ के विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान से वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ की बजरिया (सवाईमाधोपुर) शाखा के संयोजक श्री पदमचन्द जी जैन को तथा वर्ष २००३ के विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान से वरिष्ठ एवं वयोवृद्ध स्वाध्यायी श्री रिखबराज जी कर्णावट को सम्मानित किया गया। श्री पदमचन्द जी जैन वर्षों से स्वाध्यायी सेवा प्रदान करने के साथ १० वर्षों से संयोजक हैं। स्वतन्त्रता सेनानी एवं संघ के प्रमुख कार्यकर्ता रहे श्री कर्नावट सा ने ३७ वर्षों तक स्वाध्यायी सेवा प्रदान की है। दोनों स्वाध्यायियों को २१ हजार की राशि के चैक, अभिनन्दन-पत्र, शॉल एवं स्मृति-चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

गुणी अभिनन्दन

संघ में गुण-संवर्धन हेतु रत्न-संघ की परम्परा में वर्षों से बहुविध संघ -सेवियों को सम्मानित किया जा रहा है। उसी शृंखला में इस वर्ष जोधपुर के ओसवाल कम्यूनिटी सेण्टर के सभागार में १४ सितम्बर २००३ को समायोजित सम्मान-समारोह में निम्नांकित गुणियों का सम्मान किया गया-

१. सुश्रावक श्री महेन्द्र कुमार जी मेहता, नवसारी

आपने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रवचनामृत का पान कर रत्न-व्यवसाय से निवृत्ति का संकल्प लिया तथा धर्माराधन में विशेषतः प्रवृत्त हुए।

२. सुश्रावक श्री हुकमीचन्द जी नागसेठिया, होलनांथा

आपने अपने पिताश्री के स्वेच्छा से गृहीत संथारे में सहयोग किया तथा उपाध्यायप्रवर के होलनांथा चातुर्मास में समर्पण भाव से संघ-सेवा का लाभ लिया।

३. श्री पदमचन्द जी कोठारी, अहमदाबाद

आपने संघ-सेवा एवं सन्त-सती सेवा में उल्लेखनीय योगदान किया। व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. के अहमदाबाद के दो चातुर्मासों में आपकी पूरी सक्रियता रही।

४. श्री नवरतनमल जी मुणोत, मुम्बई

आपने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुम्बई चातुर्मास में चार माह तक तत्परतापूर्वक सेवा-भक्ति का परिचय दिया।

५. श्री दिलीप जी मेहता, मुम्बई

आप उत्साही संघसेवी कार्यकर्ता हैं। चातुर्मास में सक्रियता रही तथा विहार-सेवा का लाभ लिया।

६. श्री बाबूलाल जी जैन 'उज्ज्वल', मुम्बई

गजेन्द्र संदेश के सम्पादक श्री बाबूलाल जी जैन 'उज्ज्वल' प्रतिवर्ष 'समग्र जैन चातुर्मास सूची' का प्रकाशन करते हैं। आप समर्पित श्रमनिष्ठ संघसेवी हैं तथा सन्त-सतियों की विहार-सेवा आदि में लाभ लेते रहते हैं।

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की जनवरी २००३ की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्तकर्ताओं को स्वर्णपदक

जोधपुर में १४ सितम्बर को आयोजित सम्मान-समारोह में अतिथियों के कर- कमलों से अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की १९ जनवरी २००३ को आयोजित विभिन्न परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को स्वर्णपदक प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले परीक्षार्थियों के नाम हैं-

परीक्षार्थी	परीक्षा
१. सौ. प्रेमलता कटारिया, मीरा रोड़ , मुम्बई	-जैन धर्म परिचय

२. कु. रोहित सुराना, घोटी एवं सौ. प्रमिला लोढ़ा, चेन्नई -जैन धर्म प्रवेशिका
३. सौ. सरोज देवी चोरड़िया, चेन्नई - जैन धर्म प्रथमा
४. सौ. नीता बोथरा, नरडाना -जैन धर्म मध्यमा
५. सौ. कौशल्या सिंघवी, चेन्नई -जैन धर्म चन्द्रिका
६. श्री राजेन्द्र जी डागा, हांगकांग -जैन धर्म विशारद
७. कु. मंजु छाजेड़, भोपालगढ़ -जैन धर्म कोविद
८. सौ. ज्योति गादिया, भुसावल -जैन धर्म भूषण

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के पुरस्कार

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् प्रतिवर्ष अपनी शाखाओं एवं युवारत्नों को विभिन्न क्षेत्रों में पुरस्कृत करती है। इस वर्ष पुरस्कारों का वितरण जोधपुर में आयोजित समारोह में इस प्रकार किया गया-

१. चेन्नई शाखा - सर्वश्रेष्ठ शाखा
२. जोधपुर शाखा - चतुर्विध संघ-सेवा
३. सवाईमाधोपुर शाखा - सामायिक-स्वाध्याय कार्यक्रम
४. जयपुर शाखा - धार्मिक शिक्षण
५. पीपाड़ शाखा - समाज सेवा और स्वधर्मि वात्सल्य

चेन्नई शाखा का पुरस्कार शाखा अध्यक्ष श्री अशोक जी कवाड़ एवं उनकी टीम ने स्वीकार किया। शेष सम्मान क्रमशः शाखा अध्यक्ष श्री मनीष जी लोढ़ा, श्री कुशल जी गोटे वाला, श्री प्रमोद जी हीरावत एवं श्री धर्मेन्द्र जी चौधरी ने ग्रहण किए।

करुणा डायरी का प्रकाशन

करुणा इण्टरनेशनल के जोधपुर केन्द्र ने बालक-बालिकाओं में करुणा, दया, अहिंसा, मैत्री, परोपकार आदि उच्च भावों को जागृत एवं विकसित करने की दृष्टि से 'करुणा डायरी' का प्रकाशन किया है। इस डायरी में उपर्युक्त भावों को जागृत एवं पुष्ट करने हेतु कुछ कविताओं एवं कहानियों के साथ महापुरुषों के प्रेरक वचन संकलित हैं, जो छात्र-छात्राओं के लिए अतीव प्रेरणाप्रद हैं। डायरी में कुछ खाली पृष्ठ छोड़े गए हैं, जिनमें वे अपनी भावनाओं, विचारों एवं कार्यों को नोट कर सकते हैं। करुणा इण्टरनेशनल, चेन्नई का जोधपुर केन्द्र डॉ. धर्मचन्द जैन (सम्पादक, जिनवाणी), श्री मनोज डागा, श्री अनिल बोहरा आदि के नेतृत्व में निरन्तर प्रगति कर रहा है। जोधपुर, मथानिया, बालेसर आदि के ४५ विद्यालयों में करुणा क्लब कार्यरत हैं, जो छात्र-छात्राओं में करुणा, मैत्री, दया, परोपकार आदि के भावों को पल्लवित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। करुणा डायरी की प्राप्ति हेतु पता- **श्री अनिल बोहरा-सचिव, 63, तेज मेन्शन, धर्मनारायण जी का हत्था, पावटा, जोधपुर (राज.)**

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के परीक्षा परिणाम घोषित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा २७ जुलाई २००३ को आयोजित कक्षा १ से ११वीं तक का परीक्षा परिणाम घोषित किया जा चुका है। अंकतालिकाएँ सबको प्रेषित की जा चुकी हैं। इस परीक्षा में देश के २३० केन्द्रों से ४६५५ परीक्षार्थियों ने भाग लिया जिनमें से १८६३ परीक्षार्थी प्रथम श्रेणी में, ११५३ द्वितीय श्रेणी में तथा ८४४ तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। उत्तीर्ण होने का प्रतिशत ७८.५० रहा। योग्यता सूची निम्न प्रकार है-

स्थान	परीक्षार्थी का नाम	प्राप्तांक
	जैन धर्म परिचय (पहली कक्षा)	
प्रथम-	सौ. दीपिका राजेश कुमार जी चौपड़ा, हिंगनघाट	१००
द्वितीय-	कु. ज्योति लालचन्द जी जैन, पीपाड़ सिटी	९९
तृतीय-	सौ. उन्नति पंकजकुमार जी भटेवरा, नाशिक	९८.५
	जैन धर्म प्रवेशिका (दूसरी कक्षा)	
प्रथम-	सौ. शीला संजयकुमार जी संघवी, धुलिया	९९.५
द्वितीय-	सौ. प्रतिभा राजेन्द्र जी कोठारी, बेलापुर	९९
तृतीय-	कु. अन्तिमा भागचन्द जी सुराणा, अजमेर	९८.५
	जैन धर्म प्रथमा (तीसरी कक्षा)	
प्रथम-	कु. प्रियंका बाबुलाल जी जैन, सरवानियामहाराज	९९.५
द्वितीय-	कु. आदर्शना शांतिलाल जी देसर्डा, निफाड़	९९
द्वितीय-	सौ. प्रमिला दीपककुमार जी लोढ़ा, मदुरान्तकम, चेन्नई	९९
तृतीय-	कु. सुधा बाबुलाल जी जैन, सरवानियामहाराज	९८.५
	जैन धर्म मध्यमा (चौथी कक्षा)	
प्रथम-	कु. छाया हीरालाल जी जैन, विरार, मुम्बई	९७.५
द्वितीय-	सौ. मीना राजेन्द्र जी चौपड़ा, अहमदाबाद	९६.५
तृतीय-	श्री सौरभ कमलकिशोर जी सेठिया, चेन्नई	९६
तृतीय-	सौ. श्वेता प्रशान्त जी वेदमुथा, नाशिक	९६
तृतीय-	सौ. आशा संदीप जी वेदमुथा, नाशिक	९६
	जैन धर्म चन्द्रिका (पाँचवीं कक्षा)	
प्रथम-	सौ. सुनिता यशवन्त जी सिंघवी, चेन्नई	९७
द्वितीय-	श्री विनोद विमलकुमार जी जैन, जलगांव	९५
तृतीय-	सौ. सुरेखा प्रदीप जी चोरड़िया, नरडाणा	९३
	जैन धर्म विशारद (छठी कक्षा)	
प्रथम-	सौ. अभिलाषा अजय जी हीरावत, मुम्बई	९८
द्वितीय-	श्री लोकेश ज्ञानचन्द जी जैन, जयपुर	९७.५
तृतीय-	श्री जितेश राजेन्द्रकुमार जी जैन, जयपुर	९७
तृतीय-	सौ. कविता मनोजकुमार जी जैन, मुम्बई	९७

जैन धर्म कोविद (सातवीं कक्षा)

प्रथम-	श्री त्रिलोकचन्द शांतिलाल जी जैन, जलगांव	९७
द्वितीय-	सौ. शोभा मदनलाल जी लुणावत, भड़गांव	८६.५
तृतीय-	सौ. निर्मला शांतिचन्द जी हीरावत, जयपुर	८८.५

जैन धर्म भूषण (आठवीं कक्षा)

प्रथम-	सौ. चन्द्रा जी अमरजी मुणोत, मुम्बई	९५
द्वितीय-	कु. मंजु गौतमचन्द जी छाजेड़, भोपालगढ़	९३
द्वितीय-	सौ. कमला प्रेमसिंह जी लोढ़ा, जयपुर	९३
तृतीय-	कु. पूजा मुणोत ईश्वरलाल जी मुणोत, जामनेर	९१
तृतीय-	कु. डिम्पल अभयराज जी चोरड़िया, जामनेर	९१

जैन सिद्धान्त प्रभाकर पूर्वार्द्ध (नवमी)

प्रथम-	सौ. सुभद्रा कांतिलाल जी धारीवाल, पाली	९५
द्वितीय-	सौ. उजास जी शांतिलाल जी डाकलिया, जोधपुर	९४
तृतीय-	सौ. उर्मिला जी सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर	९१

जैन सिद्धान्त प्रभाकर उत्तरार्द्ध (दसवीं कक्षा)

प्रथम-	सौ. ललिता लक्ष्मीचन्द जी नाहटा, चेन्नई	९७
द्वितीय-	कु. सुनिता राजेन्द्र जी कोठारी, पीपाड़ शहर	९६
द्वितीय-	सौ. कुमकुम त्रिलोकचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर	९६
तृतीय-	कु. नेहा ईश्वरकुमार जी चोरड़िया, जामनेर	९५.५

जैन सिद्धान्त रत्नाकर पूर्वार्द्ध (ग्यारहवीं कक्षा)

प्रथम-	कु. शर्मिला संदीप जी जैन, ब्यावर	८८
द्वितीय-	सौ. मंजू लक्ष्मीचन्द जी भंडारी, ब्यावर	८३.५
तृतीय-	सौ. लाडदेवी महताबचन्द जी हीरावत, जयपुर	८२

आगामी परीक्षा ११ जनवरी २००४ को १२ से ३ बजे तक कक्षा १ से ८ तक के लिये आयोजित होगी। सभी नये एवं पुराने परीक्षार्थियों को ३० नवम्बर २००३ तक आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय को प्रेषित करने आवश्यक है।

–नवरतन डागा, सचिव, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन नं. 0291–2630490

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई– श्रमण संघ के प्रथम युवाचार्य श्री मधुरकरमुनिजी म.सा. के प्रथम शिष्य उपप्रवर्तक सलाहकार पूज्य श्री विनयमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ३ के चातुर्मास में दान, शील, तप एवं भावना की प्रभावना हो रही है। २ सितम्बर ०३ को श्री एस.एस. जैन संघ के अध्यक्ष श्री रिखबचन्द जी लोढ़ा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शांतिबाई जी लोढ़ा ने चातुर्मास में पहला शीलव्रत अंगीकार किया। इनके माताजी श्रीमती भंवरीबाई लोढ़ा ने ८० वर्ष की उम्र में अठाई तप के प्रत्याख्यान किए। इस तप के

उपलक्ष्य में श्रीमान् रिखबचन्द जी, अजीतमल जी लोढ़ा ने १,२१,०००/- रुपये की राशि शुभ कार्यों में लगाने की घोषणा की है। श्री शांतिलाल जी लोढ़ा-चंचलदेवी जी, श्री उत्तमचन्द जी-पिस्ताबाई नाहर, श्री तेजराज जी-चुन्नीबाई जी गादिया, श्री गुलाबचन्दजी-मूलीबाई जी बोथरा ने भी उसी दिन शीलव्रत के नियम अंगीकार किए। **-अखेचन्द मिडकचा, मंत्री**

औरंगाबाद—महाराष्ट्र प्रवर्तक श्री कुन्दनऋषि जी म.सा. आदि ठाणा ४ एवं मालवकीर्ति श्री कीर्तिसुधाजी म.सा. आदि ठाणा ४ के सान्निध्य में औरंगाबाद में अच्छा धर्माराधन हुआ है। सैकड़ों की संख्या में अठाई एवं उससे ऊपर की तपस्या हुई है। प्रतिक्रमण में भी पहली बार इतनी संख्या देखी गई। औरंगाबादवासियों को बड़ी प्रसन्नता है।

बड़ी सादड़ी— तपःकेसरी श्री अभयमुनि जी म.सा. तपोमूर्ति श्री घनश्याम मुनि जी म.सा. के ४६ दिवसीय तप-समारोह का आयोजन श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ की ओर से श्री कमलमुनि जी 'कमलेश' के सान्निध्य में किया गया। राज्य विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री गुलाबचन्द जी कटारिया एवं सांसद श्री श्रीचन्दजी कृपलानी ने पाँच-लाख रुपयों का सहयोग कर आई.सी.यू. की सुविधा प्रारम्भ करने की घोषणा की ।

बैंगलोर— मालवसिंहनी स्व. श्री कमलावती जी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री सत्यसाधना श्री जी म.सा. आदि ठाणा ७ के अक्कीपेट चातुर्मास में तपस्या, जाप, धार्मिक शिक्षण, त्याग आदि के विभिन्न कार्यक्रम चल रहे हैं।

उमरगांव— प्रातःस्मरणीय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के पाली चातुर्मास में अन्तिम दर्शन प्राप्त श्री मोहनलाल जी मेहता ने ८३ वर्ष की उम्र में १५ अगस्त २००३ को २०५१०१ (दो लाख पाँच हजार एक सौ एक) रुपये का विनम्र दान किया है। यह राशि एम.के. मेहता हाइ स्कूल के लिए समर्पित की है।

भवानीमण्डी— राजस्थान पत्रिका के २५ सितम्बर २००३ के अंक में प्रकाशित समाचार- "राता-देवी मन्दिर परिसर में पशुबलि परम्परा काफी पुरानी थी, लेकिन कुछ समय पूर्व प्रशासन एवं जागरूक नागरिक समिति के प्रयास से वहाँ पशुबलि बन्द हो चुकी है। अब यहाँ केवल शाकाहारी गोठ होती है।" इन समाचारों को मैं शाकाहार समिति, पचपहाड़ के लिए अनुपम सुखद संदेश मानता हूँ। **-राधेश्याम गुर्जर, शाकाहार प्रचारक, भवानीमण्डी**

बैंगलोर— श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, बैंगलोर के माध्यम से इस वर्ष ३१ क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधन पर आठ दिनों के लिए ११८ स्वाध्यायियों ने सेवा प्रदान की। **-शांतिलाल बोहरा**

नासिक— श्री घेवरचन्द जी गुलाबचन्द जी बाघमार ने १७ जुलाई १९९४ से एकाशन तप प्रारम्भ किया था। २ नवम्बर २००३ को उनके कुल ३३९५ एकाशन

पूर्ण हो जायेंगे।

बधाई

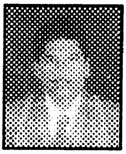

जोधपुर— ओसवाल समाज, जोधपुर की सर्वोच्च संस्था ओसवाल सिंह सभा, की जीवदया के क्षेत्र में कार्यरत सक्रिय संस्था धर्मपुरा-गौशाला में युवारत्न श्री नवरतन जी डागा, जोधपुर को मानद सचिव पद पर नियुक्त किया गया है। डागा साहब वर्तमान में अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड में सचिव पद का दायित्व-निर्वहन कुशलतापूर्वक कर रहे हैं।

श्रद्धांजलि

जलगांव— धर्मपरायण एवं सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती तारादेवी जी बाफना धर्मपत्नी श्री कस्तूरचन्द जी बाफना (महामंत्री, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जलगांव तथा प्रमुख स्वाध्यायी) का १४ सितम्बर २००३ को जलगांव से जोधपुर जाते समय पाली से कुछ पहले ट्रेन में रात्रि के ३ बजे ६१ वर्ष की आयु में आकस्मिक देहावसान हो गया। परमाराध्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म. सा., श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत- सतीवृन्द के प्रति आपकी अनन्य आस्था एवं अगाध श्रद्धाभक्ति थी। वे तप-साधिका एवं संघ-सेवी श्राविका थी। आप सरलता, सौम्यभाव, सादगी एवं सेवा की प्रतिमूर्ति थी। रात्रि चौविहार त्याग, जमीकन्द त्याग, आजीवन शीलव्रत, सन्त-सेवा, सामायिक-स्वाध्याय एवं अनेकविध त्याग-प्रत्याख्यान आपके जीवन के प्रमुख आकर्षण थे। अन्तिम समय में भी आपने व्रत-प्रत्याख्यानों को पूरी सजगता से निभाया, रात्रि में दवा तक नहीं ली। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के सन् २००० के चातुर्मास में जिस भक्ति-भावना से सेवा की, वह अनुकरणीय है। आपने एवं आपके सुपुत्र सुशील जी ने इस चातुर्मास में मासखमण तप किया। सामायिक, स्वाध्याय, साधना एवं सेवा हेतु श्राविकारत्न का जीवन समर्पित था। आपका जीवन हृदय की उदारता, व्यवहार की सरलता, सबके साथ आत्मीयता आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था। आपके निधन से एक जागरूक श्राविकारत्न की क्षति हुई है। आपके सुपुत्र श्री सुशील जी एवं सुनील जी बाफना तथा सुपुत्री सौ. सुनन्दा जी एवं सम्पूर्ण परिवार धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत है।

जयपुर—सुश्रावक श्री अभयसिंह जी मेहता (हरमाड़ा वाले) का १६ सितम्बर २००३ को आकस्मिक देहावसान हो गया। आप श्रद्धालु एवं धर्मपरायण श्रावक रत्न थे।

जयपुर— धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री ज्ञानचन्द्र जी पालावत का १४ सितम्बर २००३ को संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित श्रावक

रत्न थे। आपका जीवन कइयों के लिए प्रेरणाप्रद रहा।

भोपालगढ़— श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, भोपालगढ़ के वरिष्ठ श्रावक श्रीमान् दलीचन्द जी सुपुत्र स्व. श्री बख्तावरमल जी कांकरिया का ७६ वर्ष की आयु में १८ सितम्बर २००३ को सायं स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्य भगवन्त पूज्य १००८ श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्यप्रवर पूज्य १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त-सतीवृन्द के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। आप सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण नित्य प्रति करते थे। शीलव्रत एवं रात्रि चौविहार-त्याग का आजीवन नियम था। आप श्री जैन रत्न विद्यालय संस्थान के कोषाध्यक्ष थे। आपके भरे-पूरे परिवार में ५ पुत्र श्री उत्तमचन्द जी कांकरिया-चेन्नई, श्री गौतमचन्द जी कांकरिया-भोपालगढ़, श्री भूरचन्द जी कांकरिया-जलगांव, श्री चंचलचन्द जी कांकरिया-जलगांव व श्री प्रेमचन्द जी कांकरिया-जोधपुर तथा ५ पुत्रियाँ व पौत्र-प्रपौत्र आदि हैं जो सभी धर्मनिष्ठ एवं संस्कारी हैं।

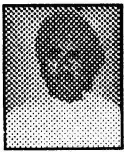

बीकानेर-सुश्राविका श्रीमती सुन्दरबाई धर्मपत्नी श्री चम्पालाल जी डागा (सम्पादक, श्रमणोपासक) का ११ सितम्बर २००३ को आकस्मिक निधन हो गया। आपका जीवन धर्मनिष्ठ, सादगीपूर्ण, सहिष्णु एवं देव-गुरु व धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित था। आप सेवाभावी एवं धर्मपरायण श्राविकारत्न थी। आप अपने पीछे ३ पुत्रों एवं २ पुत्रियों का परिवार छोड़कर गई हैं।

उदयपुर— सुश्रावक श्री मोहनलाल जी मेहता सुपुत्र स्व. श्री फतहलाल जी, बड़ी सादड़ी निवासी हाल मुकाम उदयपुर का ७२ वर्ष की अवस्था में त्याग-प्रत्याख्यान पूर्वक देहावसान हो गया। आप श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ के स्नातक थे। आप समाजसेवी होने के साथ साधु संतों की सेवा में सदैव संलग्न रहते थे। सामायिक, स्वाध्याय के धनी आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी। श्री वर्द्धमान हिन्दी हाई स्कूल, रायचूर (कर्नाटक) में आपकी शैक्षणिक सेवाएँ सदैव स्मरणीय रहेंगी। आप अपने पीछे अपनी एकाकी सुपुत्री सौ. सुशीला भणावत का भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।-**अमृतलाल मेहता, उदयपुर**

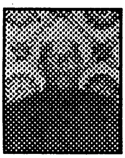

सवाईमाधोपुर—सुश्रावक डॉ.श्री महावीरप्रसादजी जैन सुपुत्र श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन का हृदयगति रुक जाने से ५० वर्ष की उम्र में आकस्मिक निधन हो गया। आप रत्नसंघ के सुयोग्य श्रावकरत्न थे। चिकित्सक होने से उनकी सेवाएँ संत- सतीवृन्द को सहज रूप से प्राप्त थी। वे दर्शन-वन्दन की भावना से जब भी सत्संग- सेवा में आते, स्वास्थ्य समाधि की बराबर पृच्छा करते और श्रमणोचित औषधोपचार देकर सेवा करते। चातुर्मास पूर्व महासती श्री रूचिता जी म.सा. की अस्वस्थता में डॉ.

जैन साहब ने सेवाएँ दी वे कभी भुलाई नहीं जा सकती। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के साधनामय जीवन का उन पर गहरा प्रभाव रहा। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति उनकी अनन्य आस्था व अटूट भक्ति थी। वे सच्चे कर्मयोगी थे। उपाध्यायप्रवर आदि संतों के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में लम्बे समय तक उन्होंने जो सेवा लाभ लिया वह वस्तुतः अनुकरणीय, अनुमोदनीय और अविस्मरणीय रहेगा।

भीलवाड़ा— सुश्रावक श्री महावीर प्रसाद जी चपलोत का देहावसान दिनांक २६.८.२००३ को मुम्बई में हो गया। आप विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी, सरल स्वभावी, मिलनसार, स्पष्टवादी, विनम्र एवं सेवाभावी सुश्रावक थे। देव, गुरु, धर्म के प्रति समर्पित आपका जीवन सेवाभावना, साधर्मी वात्सल्य आदि गुणें से ओत-प्रोत था। आप श्री की ज्ञानगच्छ एवं क्रियावान पूज्य संत-सतियों के प्रति दृढ़ अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आप संघ के कार्यों में अग्रणी थे। गत दो वर्षों से कैंसर जैसी बीमारी से ग्रस्त होते हुए भी आपने समभाव से वेदना सहन की। आप धार्मिक एवं सामाजिक दोनों क्षेत्रों में अग्रणी थे। आप कई संस्थाओं के पदाधिकारी थे। आपके स्वर्गवास से श्री सुधर्म जैन श्रावक संघ एवं भीलवाड़ा संघ को अपूरणीय क्षति हुई। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़ कर गये हैं। **–दिलीप सिसोदिया, संपादक : मेवाड़ लोकाशाह क्रान्ति**

विजयनगर— सुश्रावक श्री बच्छराज जी भण्डारी सुपुत्र श्री सोहनलाल जी

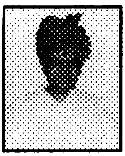

भण्डारी का संथारापूर्वक २५ सितम्बर २००३ को ६१ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप लम्बे समय से कैंसर से पीड़ित थे, तथापि आपकी सहनशीलता एवं धीरता प्रशंसनीय थी। आप विजयनगर संघ के उपाध्यक्ष रहे। आप प्रतिभा सम्पन्न एवं सूझबूझ के धनी होने के साथ मृदुभाषी एवं मिलनसार थे। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर— सुश्राविका श्रीमती कुसुम जी सिंघवी धर्मपत्नी श्री कैलाश जी सिंघवी पुत्रवधू स्व. श्री मुन्नीमल सा सिंघवी का स्वर्गवास १४ सितम्बर २००३ को हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण एवं व्रत-नियमों को जीवन में स्थान देने वाली श्राविका थी। आपके प्रतिदिन सामायिक, नवकारसी, एवं रात्रि-भोजन त्याग की वर्षों से पालना रही। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप धर्मानुरागी होने के साथ सेवा, कर्त्तव्यपरायणता आदि अनेक सद्गुणों से सम्पन्न थी। **–विक्रम मेहता, जोधपुर**

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

राष्ट्रीय समाचार

राजस्थान के राज्यपाल श्री निर्मलचन्द जैन दिवंगत

जयपुर— राजस्थान सरकार के राज्यपाल महामहिम श्री निर्मलचन्द जी जैन का रविवार, २१ सितम्बर २००३ की रात्रि को दिल का दौरा पड़ने से असामयिक निधन हो गया। रात्रि में ११:३० बजे के लगभग शयन के लिए जाते समय उन्हें अचानक यह दौरा आया तथा जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल की सघन चिकित्सा इकाई में २ बजकर ५ मिनट पर अस्पताल के अधीक्षक द्वारा उनके निधन की जानकारी दी गई। राज्यपाल २ दिन बाद ही ७५ वर्ष के होने वाले थे। निधन के पश्चात् उनके पार्थिव शरीर को गृहनगर जबलपुर (म.प्र.) ले जाया गया, जहाँ उनकी २२ सितम्बर को अन्त्येष्टि की गई। हंसमुख, हाजिरजवाब एवं विधि विशेषज्ञ माननीय श्री निर्मलचन्द जी जैन ने १४ मई २००३ को राज्यपाल पद की शपथ ली थी। वे धर्मनिष्ठ, अनुशासनप्रिय एवं सिद्धान्तवादी इन्सान थे। उनका ४ माह का कार्यकाल सौहार्दपूर्ण रहा तथा इसी अवधि में राज्य सरकार ने जैनों को अल्पसंख्यक घोषित करने का निर्णय लिया।

टोंक में ऊँट कुर्बानी के खिलाफ याचिका दायर

राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश अनिल देव सिंह तथा न्यायाधिपति के. के. आचार्य की खण्डपीठ के समक्ष प्राणिमित्र संस्थान तथा महावीर केन्द्र, जोधपुर की ओर से अधिवक्ता श्री धनपत मेहता एवं श्री राजेश शाह द्वारा प्रस्तुत जनहित याचिका की सुनवाई ३ सितम्बर २००३ को की गई। सुनवाई के अनन्तर उच्च न्यायालय ने मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव, गृह सचिव एवं टोंक के कलक्टर तथा एस.पी. को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। याचिका कर्ताओं का कहना था कि हर वर्ष टोंक में इदुलजुहा पर नगर बाग, मुबारक महल के प्रांगण में ऊँट के चारों पैर बांध कर नमाज के तुरन्त बाद टोंक के पूर्व नवाब द्वारा तीखे भाले से क्रूर प्रहार किया जाता है तथा उसके अनन्तर उपस्थित लोग ऊँट की बोटी-बोटी काटकर अपने साथ ले जाते हैं। यह दृश्य बड़ा भयावह एवं करुणाजनक होता है। उल्लेखनीय है कि राजस्थान राज्य पशु-पक्षी बलि अधिनियम-१९७५ के तहत पशुबलि पूर्ण रूप से निषिद्ध है। इसके बावजूद प्रशासनिक अमले द्वारा कानून की धज्जियाँ उड़ायी जा रही है। राजस्थान उच्च न्यायालय ने इस घटना को गम्भीरता से लिया है तथा राजस्थान सरकार से जवाब मांगा है।

जैसलमेर के मन्दिरों में पशुबलि पर रोक

५ सितम्बर २००३ को प्राणिमित्र संस्थान, जोधपुर के कार्याध्यक्ष श्री चंचलमल जी चोरड़िया तथा सचिव श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल द्वारा राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री अनिलदेव सिंह एवं न्यायाधीश श्री के.के. आचार्य की खण्डपीठ के समक्ष एक जनहित याचिका दायर की गई। जनहित याचिका में

विभिन्न मंदिरों में पशुबलि तुरन्त प्रभाव से रोकने के निर्देश दिए थे। इन निर्देशों को राज्य सरकार एवं जिला प्रशासन ने गम्भीरता से नहीं लिया। जैसलमेर में आज भी विभिन्न मन्दिरों में पशुओं की बलि दी जाती है। याचिका में कहा गया है कि गत तीन सितम्बर को संस्था को पता चला कि मंदिरों में बलि दी जा रही है। इस पर संस्था के पदाधिकारी एवं जैसलमेर के प्रबुद्ध व्यक्तियों ने बलि-स्थल का अवलोकन किया तथा एक वीडियो कैमरे में दृश्य कैद किए गए। पशुबलि की सूचना लिखित में तुरन्त जिला कलक्टर एवं पुलिस अधीक्षक, जैसलमेर को संस्था द्वारा दी गई, लेकिन इसके बावजूद प्रशासन द्वारा उपर्युक्त स्थलों पर बलि रोकने का पुख्ता प्रबंध नहीं किया गया। इस जनहित याचिका के अनन्तर उच्च न्यायालय के निर्देश पाकर जैसलमेर जिलाधीश ने ६ सितम्बर २००३ को विभिन्न मन्दिरों में पशुबलि के रोके जाने की कार्यवाही हेतु आदेश प्रसारित कर अधिकारियों को नियुक्त कर दिया है। इस कार्य को मुस्तैदी से सम्पन्न करने हेतु श्री चंचलमल जी चोरड़िया एवं श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल बधाई के पात्र है।

तमिलनाडु में पशुबलि पर रोक

तमिलनाडु के तिरुकुरल में पशुबलि को रोकने हेतु भगवान महावीर अहिंसा प्रचार संघ के द्वारा यद्यपि निरन्तर दबाव बनाया जाता रहा है, तथापि हिंसा का कार्य जारी था। अब मुख्यमंत्री जयललिता ने पशुबलि पर प्रभावी रोक लगाकर जानवरों के प्रति दया का भाव दिखाया है।- **केशरीचन्द सेठिया, मंत्री**

गाँधीजी की भावना

श्री आनन्दराज धीसुलाल तलेसरा

गाँधीजी को एक बार लोगों ने विदाई में सोने-चांदी के आभूषण, मूल्यवान घड़ियाँ और हीरे की अंगूठी उपहार में दी। गाँधीजी ने तय किया कि इन्हें बैंक में सुरक्षित रखवा देंगे। बा ने इस पर आपत्ति करते हुए कहा- आपने अपने परिवार के सारे आभूषण तो सार्वजनिक उपयोग में लगा दिए। अब ये उपहार हमारे परिवार के काम आएंगे। ये आभूषण यहाँ के निवासियों ने श्रद्धा से हमें दिए हैं, इसलिए ये हमारे बेटों की शादियों में काम आएंगे। मैं चाहती हूँ कि मेरी बहुएँ इन गहनों को पहनें। गाँधीजी काफी देर चुपचाप सुन रहे थे। अचानक बा को बीच में ही टोक कर बोले- बा! क्या तुम इतना भी नहीं जानती कि यह हमारी जनसेवा के बदले मिले हुए उपहार हैं। अतः इनका उपयोग जनहित के अलावा और कहीं कैसे हो सकता है? इस पर बा ने तुरंत अपनी सहमति दे दी और गाँधीजी ने उन उपहारों को बैंक में जमा करवा दिया, ताकि सेवा कार्य के लिए धन की जरूरत हो तो ये गहने काम आएँ।-*गोरेगांव, मुम्बई (महा.)*

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

11000/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की स्तम्भ सदस्यता हेतु

१०० श्री पुखराज जी, प्रकाशचन्द जी, रमेशचन्द जी, पदमचन्द जी बाघमार, चेन्नई, आचार्य भगवन्त के दर्शनलाभ की खुशी में जिनवाणी पत्रिका की स्तम्भ-सदस्यता ग्रहण की।

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

६३६३ श्री महेन्द्र कुमार जी नाहर, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६३६४ श्री अतुल कुमार जी मुणोत, मुम्बई (महा.)
६३६५ Shri Vimalchand Ji Lunawat, Simoge (Karnataka)
६३६६ श्री पारसमल जी बोहरा, मण्डली, बाड़मेर (राज.)
६३६७ श्री दीपक कुमार जी कैलाशचन्द जी मेहता, दूद, जयपुर (राज.)
६३६८ श्री दिलीप जी रांका, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६३६९ श्री पोपटलाल जी माणकचन्द जी चोरड़िया, आला, पूना (महा.)
६३७१ श्री भूपेश कुमार जी सुगनमल जी संकलेचा, नांगलवाड़ी, बड़वानी (म.प्र.)
६३७२ श्रीमती मंजु जी छाजेड़, भोपालगढ़, जोधपुर (राज.)
६३७३ श्री रमणलाल जी छाजेड़, धुलिया (महा.)
६३७४ श्री बी.बी. जैन, धुलिया (महा.)
६३७५ श्री त्रिलोकचन्द जी लोढ़ा, देवली, टोंक (राज.)
६३७६ श्रीमती मीनादेवी जी भीमराज जी शाह, वापी, वलसाड़ (गुजरात)
६३७७ श्री चन्द्र एम. जैन, चेन्नई (तमि.)
६३७८ श्री मनोज कुमार जी बेताला, इन्दौर (म.प्र.)
६३७९ श्री पारसमलजी निर्मलचन्दजी बाघमार, जबलपुर (म.प्र.)
६३८० श्री आशीष जी धरमीचन्द जी ललवाणी, वेलदा, सूरत (गुजरात)
६३८१ श्री देवराजजी सोहनराज जी कोठारी, सौंदत्ती, बेलगाम (कर्नाटक)
६३८५ श्री संजय जी कचरदास जी संचेती, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)

नोट- श्री दिनेश कुमार जी सिंघवी (आजीवन सदस्यता नं. १११-एफ) के अब भारत में आ जाने से, उनका नाम जिनवाणी आजीवन सदस्यता सूची में क्रमांक ६३७० पर दर्ज किया गया है।

श्रीमान् अमर पी. मुणोत सा., मुम्बई के सौजन्य से

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

६३०३ श्री महावीर किराना स्टोर, लवेरा बावड़, जोधपुर (राज.)
६३०४ श्री शंकरलाल जी अरोड़ (खत्री जी), पीपाड़ सिटी (राज.)
६३०५ श्री शांतिलाल जी लुणावत, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३०६ श्री रंगराज जी प्रसन्नराज जी चौधरी, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३०७ श्री पुखराज जी चौधरी, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३०८ श्री मंगलसिंह जी चौधरी, बाड़ा खुर्द, जोधपुर (राज.)
६३०९ श्री कानाराम जी जैन, साथिन, जोधपुर (राज.)
६३१० श्री जवरीलाल जी नौरतनमल जी लुंकड़, पीपाड़ सिटी (राज.)

६३११ श्री तुलसीदास जी महाराज़, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३१२ श्री प्रसन्नराज जी कांकरिया, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३१३ श्री पवन एजेन्सीज, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३१४ श्री धनपतराज जी मेहता, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३१५ श्री जंगदीश जी वैष्णव, साथिन, जोधपुर (राज.)
६३१६ श्री निवास पुरुषोत्तम जी असोपा, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३१७ श्री राजेन्द्रकुमार जी कांतिलाल जी जैन, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३१८ श्री भंवरलाल जी शांतिलाल जी मुथा, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३१९ श्री सुखराज जी सुभाषचन्द जी बोहरा, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३२० श्री ऋषभ कुमार जी जैन, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३२१ श्री उत्तमचन्द जी गोलेछा, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३२२ श्री करीमबक्श खुदाबक्श जी, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३२३ श्री जवरीलाल जी कांतिलाल जी सोनी, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३२४ श्री शांतिलाल जी निर्मला जी लुणावत, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३२५ श्री उम्मेदीलाल जी पांडया (लालजी), पीपाड़ सिटी (राज.)
६३२६ श्री अनिल जी गांधी, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३२७ श्री मोहनलाल जी बोहरा, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३२८ श्री तेजराज जी मुथा, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३२९ श्री तेरापंथ सभा भवन, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३३० श्री श्रुति मेडिकल स्टोर, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३३१ श्री प्रकाशचन्द जी भण्डारी, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३३२ श्री धनेन्द्र जी चौधरी, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३३३ श्री प्रकाश जी गोपाल जी सोनी, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३३४ श्री गौतमचन्द जी जैन, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३३५ श्री सुरेशचन्द जी नौरतन जी गांधी, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३३६ श्री सुभाषचन्द जी भंवरलाल जी गुन्देचा, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३३७ श्री भोमराज जी कोठारी, भोपालगढ़(राज.)
६३३८ श्री अशोक कुमार जी दवे श्रीमाली, पीपाड़ सिटी (राज.)
६३३९ श्री सुरेशकुमार जी अजय कुमार जी बाघमार, वडाला-वडाली, जलगांव (महा.)
६३४० श्री राहुल जी लक्ष्मीलाल जी कटारिया, नालासोपाला(ईस्ट), ठाणे (महा.)
६३४१ श्री सौरभ कुमार जी सुरेश कुमार जी पीपाड़ा, नालासोपाला(ईस्ट), ठाणे (महा.)
६३४२ श्री संजय जी सुरेश कुमार जी वडाला, नालासोपाला(ईस्ट), ठाणे (महा.)
६३४३ श्री पुनीत कुमार जी प्रकाशचन्द जी हींगड़, नालासोपाला(ईस्ट), ठाणे (महा.)
६३४४ श्री आशीष जी अशोक कुमार जी लोना, नालासोपाला(ईस्ट), ठाणे (महा.)
६३४५ श्री यीषु जी लालचन्द जी कोठारी, नालासोपाला(ईस्ट), ठाणे (महा.)
६३४६ श्री प्रिंस जी लालचन्द जी कोठारी, नालासोपाला(ईस्ट), ठाणे (महा.)
६३४७ श्री ललित कुमार जी जैन, विरार(ईस्ट), ठाणे (महा.)

६३४८ श्री नंदलाल जी ताराचन्द जी बोरा, नालासोपाला(ईस्ट), ठाणे (महा.)
६३४६ श्री क.वि.ओ.स्थानकवासी जैन संघ, नालासोपाला(ईस्ट), ठाणे (महा.)
६३५० श्री राजेन्द्र जी मोहनलाल जी जैन, आगाशी, ठाणे (महा.)
६३५१ श्री राकेश जी लक्ष्मीलाल जी जैन, आगाशी, ठाणे (महा.)
६३५२ श्री आनन्द जी शांतिलाल जी जैन, आगाशी, ठाणे (महा.)
६३५३ स्व. श्रीमती मोहानीबाई मांगीलाल जी कच्छाटा जैन स्थानक, विरार, ठाणे (महा.)
६३५४ श्री अजय जी लालवानी, विरार (वेस्ट), ठाणे (महा.)
६३५५ श्री जितेन्द्र जी कमलचन्द जी सुराणा, विरार (वेस्ट), ठाणे (महा.)
६३५६ श्री अर्जुनलाल जी विरचंद जी ढालावत, सफाला, ठाणे (महा.)
६३५७ श्री पूनमचन्द जी सोलंकी, सफाला, ठाणे (महा.)
६३५८ श्री भंवरलाल जी शाह, सफाला, ठाणे (महा.)
६३५६ श्री महेन्द्रकुमार जी कस्तूरचन्द जी सोलंकी, सफाला, ठाणे (महा.)
६३६० श्री अमृतलाल जी प्रेमचन्द जी जैन, सफाला, उमरपाडा, ठाणे (महा.)
६३६१ श्री कमलदेव जी जैन, सफाला, ठाणे (महा.)
६३६२ श्री भरत जी मणिलाल जी शाह, सफाला, ठाणे (महा.)

चेन्नई से प्राप्त गुप्तदान के सौजन्य से

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

६३८२ श्री लुणचन्द जी जबरचन्द जी कटारिया, गुलेदगढ, बागलकोट
६३८३ श्री जौहरीलाल जी अजीतकुमार जी कटारिया, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६३८४ श्री नथमल जी प्रकाशचन्द जी गुन्देचा, गुलेदगढ, बागलकोट

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

११०००/- श्री रतनलाल सी. बाफना ज्वैलर्स, जलगांव, श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना जी एवं श्री बन्सीलाल जी बोथरा का बाई-पास ऑपरेशन बैंगलोर में सफलतापूर्वक सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

३०००/- श्री संदीप जी धीरज जी भण्डारी, फरीदाबाद, पूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में अठाई तप के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२१०१/- श्री इन्दरचन्द जी जवाहरलाल जी भंसाली, बैंगलोर, श्रीमती सूरजबाई हस्तीमल जी की पुण्यस्मृति में भेंट।

२१००/- श्री सज्जनराज जी बाफना, जलगांव, अपनी पुत्रवधू सौ. बबीता जी महेन्द्र कुमार जी बाफना के ग्यारह उपवास के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२१००/- श्री उमरावमल जी सुराणा, चेन्नई, आचार्य भगवन्त, सन्त-सतीमण्डल के इचलकरंजी में दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२०००/- श्री पुखराज जी प्रकाशचन्द जी कोचर, विशाखापट्टनम, श्री प्रकाशचन्द जी कोचर की माताजी श्रीमती चंचलबाई जी कोचर की पुण्य स्मृति में भेंट।

११००/- श्रीमती मंजु जी श्री संदीप जी धारीवाल, जोधपुर, स्व. श्री नरेन्द्रराज जी सुपुत्र श्री मूलराज जी धारीवाल की तृतीय पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री सुशील कुमार जी डोसी, पाली, आचार्य भगवंत एवं सन्त-सतीमण्डल के इचलकरंजी में

दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री मुकनराज जी कुन्दनमल जी धारीवाल, चेन्नई, इचलकरंजी में गुरु आम्नाय लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री मोहनलाल जी पारसमल जी बोहरा(ब्यावर वाले), तिरुनामल्लई, आचार्य भगवन्त एवं सन्त-सतीमण्डल के इचलकरंजी में सपरिवार दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१००१/- श्री हनवन्तमल जी सुराणा, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कोमलदेवी जी सुराणा की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

६००/- श्री मंत्री महोदय, महावीर भवन, जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी संघ, जयपुर की ओर से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री माणिकचन्द जी दिनेशकुमार जी मुणोत, इचलकरंजी, पूज्य आचार्य भगवन्त का इचलकरंजी में चातुर्मास होने की खुशी में एवं सौ. अर्चना/सुशील जी मुणोत द्वारा ६ की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री जवरीलाल जी प्रकाशचन्द जी लुणिया, पल्लीपेट (तमिलनाडु), सौ. ताराबाई जी बालचन्द जी एवं सौ. विमलाबाई जी हेमराज जी के तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम।

५०१/- श्री राजकुमार जी श्रीमती उर्मिला जी बाफना, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री अभिषेक जी बाफना के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री धर्मचन्द जी पालडेचा, धनोप, पूज्य पिताजी स्व. श्री हरकचन्द जी पालडेचा की पुण्य स्मृति में भेंट।

५०१/- श्रीमती कंचनबाई जी धर्मीचन्द जी बोहरा, चेन्नई, आचार्य भगवन्त एवं सन्त-सतीमण्डल के इचलकरंजी में दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्रीमती कंचनबाई जी धर्मीचन्द जी बोहरा, चेन्नई, अपनी सुपौत्री सौ. कां. मुस्कान व मानसी के जन्मोत्सव पर सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री महावीर प्रसाद जी जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, द्वारा श्रीमती नवरतनदेवी जी चपलोत, भीलवाड़ा, श्री महावीर प्रसाद जी चपलोत की पुण्य स्मृति में भेंट।

५००/- श्री एस.एस. जैन संघ, पल्लीपेट (तमिलनाडु), पर्युषणपर्व की आराधना के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मेड़ता सिटी, पर्युषणपर्व की आराधना के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री दुलीचन्द जी बोहरा, चेन्नई, अपने सुपुत्र श्री राजेश जी बोहरा एवं पुत्रवधू श्रीमती इन्द्रादेवी की सजोड़े ११ की तपस्या इचलकरंजी में आचार्यप्रवर की सेवा में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५००/- श्रीमती संतोष जी ढड्ढा, सूरत, आचार्य भगवन्त एवं सन्त-सतीमण्डल के इचलकरंजी में दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री समस्त बाघमार परिवार जबलपुर, आचार्य भगवन्त एवं सन्त-सतीमण्डल के दर्शनलाभ और भाई श्री उदयराज जी नाहर की ३१ की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई, इचलकरंजी में आचार्य भगवन्त एवं सन्त-सतीमण्डल के दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री जवाहरलाल जी एवं श्रीमती शान्ताकंवर जी बाघमार (कोसाना वाले), चेन्नई, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं रत्नवंश के सभी सन्त-सती आदि ठाणा के जहाँ-जहाँ चातुर्मास हैं वहाँ जाकर दर्शन करने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

३०१/- श्री पुखराजजी भागचन्द जी पारख, जलगांव, आचार्य भगवन्त के दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२५१/- श्री पवनलाल जी फूलफगर, जामनेर, परम पूज्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दर्शन किये, उसके उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२५१/- श्री पारसमल जी माणकचन्द जी कोठारी, बैंगलोर, आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से शीलव्रत अंगीकार करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२५०/- श्रीमती खम्माबाई धर्मपत्नी श्री मुल्तानमल जी बांठिया, जोधपुर, सहायतार्थ।

२०१/- श्रीमती शान्ताबाई जी एवं श्री मिश्रीलाल जी गांधी, औरंगाबाद, पूज्य आचार्यप्रवर से आजीवन शीलव्रत अंगीकार करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२०१/- श्री नेमीचन्द जी शांतिलाल जी कर्णावट, भोपालगढ़, अपनी माताजी श्रीमती पानीदेवी के चौविहार संथारा के साथ समाधिमरण की पुण्य स्मृति में भेंट।

२०१/- श्री अशोक कुमार जी भंसाली, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुधा जी भंसाली के ११ की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२०१/- श्रीमती कचरीबाई जी अन्नराज जी बरड़िया, जलगांव, आचार्य भगवन्त के दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२००/- श्री कुशालचन्द जी नथमल जी गुन्देचा, पाली की ओर से आर्थिक सहयोग।

२००/- श्री विमलचन्द जी संतोषचन्द जी गांधी, अजमेर, आचार्य भगवन्त के दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१५१/- श्री महेन्द्र जी लोढ़ा, गुडगांव, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती मीनाक्षी जी लोढ़ा की ११ की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१५१/- श्री नेमीचन्द जी नाहर, जयपुर, पूज्य पिताजी श्री कुन्दनमल जी नाहर की सत्रहवीं पुण्य तिथि दिनांक २०.९.०३ की पुण्य स्मृति में भेंट।

१५१/- श्री कनकमल जी दौलतराज जी चोरड़िया, चेन्नई, आचार्य भगवन्त एवं सन्त-सतीमण्डल के इचलकरंजी में दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१२०/- श्री वर्द्धमान जैन श्वेताम्बर स्थानक, रामगंजमण्डी, कोटा, महासती श्री छगनकुंवर जी म.सा. आदि ठाणा ६ का चातुर्मास होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री महेन्द्र जी जैन, सवाईमाधोपुर, उपाध्यायप्रवर प.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., आशुकवि श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा-५ के दर्शनों की खुशी में सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री राजेन्द्र जी गांग, जोधपुर, पूज्य माताजी स्व. श्रीमती प्रसन्नकंवर जी धर्मपत्नी श्री मनोहरमल जी गांग की दिनांक १४.१०.०३ की पावन पुण्य-स्मृति में भेंट।

१०१/- श्री महावीर प्रसाद जी जैन, कोटा, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती विमलादेवी जी जैन की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री सुमतचन्द जी जैन, मई, श्रीमती उषा जी जैन धर्मपत्नी श्री सुमतचन्द जी जैन के द्वारा

पर्युषण पर्व पर तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री सुमतचन्द जी जैन, मई, सुपुत्री कु. निशा जी जैन के पर्युषण पर्व पर तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री श्रवणकुमार जी जैन, गंगापुरसिटी, पर्युषण पर्व पर तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

५०/- श्री अमृतलाल जी मेहता, उदयपुर, श्री मोहनलाल जी मेहता की पुण्यस्मृति में भेंट।

जीवदया हेतु साभार-प्राप्त

१००१/- श्री भोपालचन्द जी प्रकाशचन्द जी नाहर, भीलवाड़ा, अपने सुपौत्र चि. सिद्धार्थ नाहर के मुण्डन संस्कार के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०००/- श्री हनवन्तमल जी भंसाली, जोधपुर, धर्मपत्नी श्रीमती कमला जी भंसाली के १० की तपस्या के उपलक्ष्य में जीवदया में भेंट।

५०१/- श्री जवरीलाल जी प्रकाशचन्द जी लुणिया, पल्लीपेट (तमिलनाडु), जीवदया हेतु आर्थिक सहयोग।

२३५/- श्री महिला मण्डल, आलनपुर, सवाईमाधोपुर, जीवदया हेतु आर्थिक सहयोग।

१०१/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बौंण, पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में जीवदया हेतु आर्थिक सहयोग।

५०१/- श्री महिला मण्डल संघ, गंगापुरसिटी द्वारा जीवदया हेतु आर्थिक सहयोग।

१०१/- श्री सुमतचन्द जी जैन, मई, अपनी पुत्रियां कु. सीमा जी एवं कु. निशा जी जैन द्वारा प्रथम बार आयंबिल तप करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार-प्राप्त

१०००००/-श्री जी. एस. प्यारेलाल जी कोठारी, पाड़ी (चेन्नई) की ओर से पुस्तक "निर्ग्रन्थ भजनावली" की २१०० प्रतियों के पुनः मुद्रण हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर को साभार-प्राप्त

२१००/- श्री मुकनराज जी कुन्दनमल जी धारीवाल, चेन्नई की ओर से मण्डल कार्यालय को सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री शांतिलाल जी कमलचन्द जी चौधरी, पीपाड़ वाले, चेन्नई, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में।

२५०/- श्रीमती रमकूदेवी-जौहरीमल जी छाजेड़, जोधपुर, आजीवन शीलव्रत के नियम उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से ग्रहण करने के उपलक्ष्य में।

२५०/- श्रीमती उमरावकंवर जी सुराणा धर्मपत्नी श्री घीसुलाल जी सुराणा, नागौर, सहायतार्थ।

२५०/- श्री जौहरीमल जी छाजेड़, जोधपुर, अपने सुपुत्र गजराज जी जैन एवं पुत्रवधू श्रीमती अनिता जी जैन की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार-प्राप्त

५१००/- श्री सागरमल जी नागरमल जी छाजेड़, चेन्नई, पूज्य माताश्री सजनी देवी जी छाजेड़ (धर्मपत्नी श्री मिश्रीमल जी छाजेड़) की पावन स्मृति में सप्रेम भेंट।

२०००/- श्री गुप्तदान, चेन्नई

१०००/- श्री शिवराज जी शंकरलाल जी भंवरलाल जी वाणीगोता, कोयम्बतुर, पर्युषण सहायतार्थ।

१०००/- श्री किशोर जी छाजेड़ एवं श्री श्रीपाल जी देशलहरा, हैदराबाद, आवड़ी में पर्युषण सेवा देने की खुशी में।

१०००/- श्री दुलीचन्द जी बोहरा, चेन्नई, अपने सुपुत्र श्री राजेश जी बोहरा एवं पुत्रवधू श्रीमती इन्द्रादेवी के सजोड़े ११ की तपस्या इचलकरंजी में आचार्यप्रवर की सेवा में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री नीलमचन्द जी ज्ञानचन्द जी बाघमार, चेन्नई, पर्युषण पर्वाराधना २००३ में नलीकुपम में स्वाध्यायी सेवा देने के उपलक्ष्य में।

२५१/- श्री सोहनराज भूरीबाई धार्मिक पारमार्थिक ट्रस्ट, इन्दौर, सहायतार्थ।

२५०/- श्रीमती खम्माबाई धर्मपत्नी श्री मुल्तानमल जी बांठिया, जोधपुर, सहायतार्थ।

१५१/- श्री प्रकाशचन्द जी बोथरा, जोधपुर, सुपुत्र श्री सुनील जी बोथरा के देउर बुद्रक में तथा श्री मनीष जी बोथरा के लासुर में पर्युषण सेवा देने के उपलक्ष्य में।

१५१/- श्रीमती कमला-प्रकाशमल जी बोथरा, सुपुत्री श्रीमती अनिता जी जैन धर्मपत्नी श्री गजराज जी जैन (सुपुत्र श्री जौहरीमल जी छाजेड़) के सजोड़े अठाई एवं तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में।

१०१/- श्री हरीश कुमार जी सुरेन्द्र कुमार जी जैन, मौजपुर, सहायतार्थ।

१०१/- श्री छगनचन्द जी प्रदीप कुमार जी जैन, खौह, सहायतार्थ।

१०१/- श्री प्रमोद कुमार जी प्रसून कुमार जी जैन खौह, सहायतार्थ।

८०/- श्रीमती मिथलेश जी जैन, खौह, सहायतार्थ।

दीपावली पटाखों से नहीं मनाएँ

प्रतिवर्ष दीपावली पर करोड़ों रुपयों के पटाखों में हंसते-हंसते आग लगा दी जाती है। सैकड़ों-हजारों जानवरों को इस निमित्त दुर्घटना का शिकार भी होना पड़ता है। पटाखों के धमाकों, शोर और अग्नि से असंख्य सूक्ष्म जीवों की हिंसा का पाप भी जन- सामान्य कमाते हैं। आइये इस दीपावली को प्रदूषण-रहित एवं एक आदर्श अहिंसक दीपावली मनाने के लिए संकल्प करते हैं और अपने संघ-समाज के अन्दर पटाखे के त्याग की प्रेरणा करते हुए आस-पास के विद्यालयों में इस हेतु मुहिम चलाते हैं। गत वर्ष इस अभियान के तहत १६२०० से भी अधिक बालक-बालिकाओं एवं युवाओं को जीवन-पर्यन्त के लिये पटाखों के त्याग करवाये गये थे। 'पटाखा त्यागो अभियान' को राष्ट्रव्यापी स्वरूप प्रदान करने के लिए निःशुल्क प्रचार सामग्री हेतु सम्पर्क करें :- ***प्राणिमित्र नितेश नागोता जैन, संचालक- अखिल भारतीय सुधर्म अहिंसा प्रचार समिति, १७५- जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी-३२६५०२***

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
—आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

BRIGHT STAR DIAMOND CO.,LTD.

Diamond & Precious Stones

Ghisalal Gyanchand Prakashchand Bamb

410 The Executive House,
12th Floor, Suite 160-161,
Suriwongse Road,
BANGKOK 10500, Thailand
G.P.O. Box No. 2088

Tel : 237-8051, 237-8052
234-7648
Fax : (662) 237-6110
Res : 437-0910
Mobile : 01-6285733

॥ श्री ॥

रत्न वंशीय अष्टम पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य
श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणाओं के चरण कमलों में कोटी कोटी वन्दन !

जय गुरु हस्ती *जय महावीर* *जय गुरु हीरा-मान*

SANJAY SURANA

DEEPAK SURANA

AADINATH
EXPORTS

The Trend Setter People

Manufacturers & Marketers :

TOYS • GAMES • NOVELTIES

31, Kurla Street, 2nd Floor, Opp. Satyam Collection,
Masjid Bunder (East), Mumbai 400 009, INDIA
Off.: 2377 4254 • Fax : 91-22-2374 6319
Mobile : 98200 73955, 3683 5318
Email: aadinathexports@hotmail.com

वीरेन्द्र कुमार बाघमलसा सुराना (नागौरवाले)
६/८३ वर्मानगर, जुना नागरदास रोड,
अंधेरी (पूर्व) मुंबई - ४०० ०६९.
फोन ; २६८३ ५३१८, २०५३ ७०५२

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

''आचार्य श्री हस्ती''

With Best Compliments From :

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

जय गुरु हस्ती   जय गुरु हीरा-मान

गुरु हस्ती के दो फरमान ।
सामायिक स्वाध्याय महान ।।

JAI GURU HASTI

GHT

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 3, Car Street
Poonamallee, Chennai-600 056
Phone : 26272609

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
(Banker)

No. 3A, Car Street
Poonamallee Chennai- 600 056
Phone : 26272906

'समता' मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है। - आचार्य श्री हस्ती

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, CHANDRAPPAN STREET
CHENNAI-600079(T.N.)
PH.# 25258436, 25298130

Branches:

Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960
Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66
Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077
Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526

JAI GURU HASTI

JAI MAHAVEER

JAI GURU HIRAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

LIVE & LET LIVE

Lord Mahaveer

With Best Compliments from

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A Division of Prithvi Securities Limited

Regd. Office : 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008, Ph. : 8553185/3059.
Website : www.prithvifx.com

CHENNAI	BANGALORE	PANJIM GOA
044-8553185	080-5327812	0832-231190
044-8553059	080-5327813	0832-420675

PRITHVI SECURITIES LTD.

Unit No. 6, I floor,
Topaz Building, (Opp. To Odyssey)
63-883, Punjagutta, Hyderabad-500 082

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD
NAVARATHAN KAVAD
RAVINDRA KAVAD
ASHOK KAVAD

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph : 044-627 3165, 627 4165

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्ता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
✆ 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

☆ Bangalore ☆ Coimbatore ☆ Ernakulam ☆
☆ Kollidam ☆ New Delhi ☆

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।
- आचार्य श्री हस्ती

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

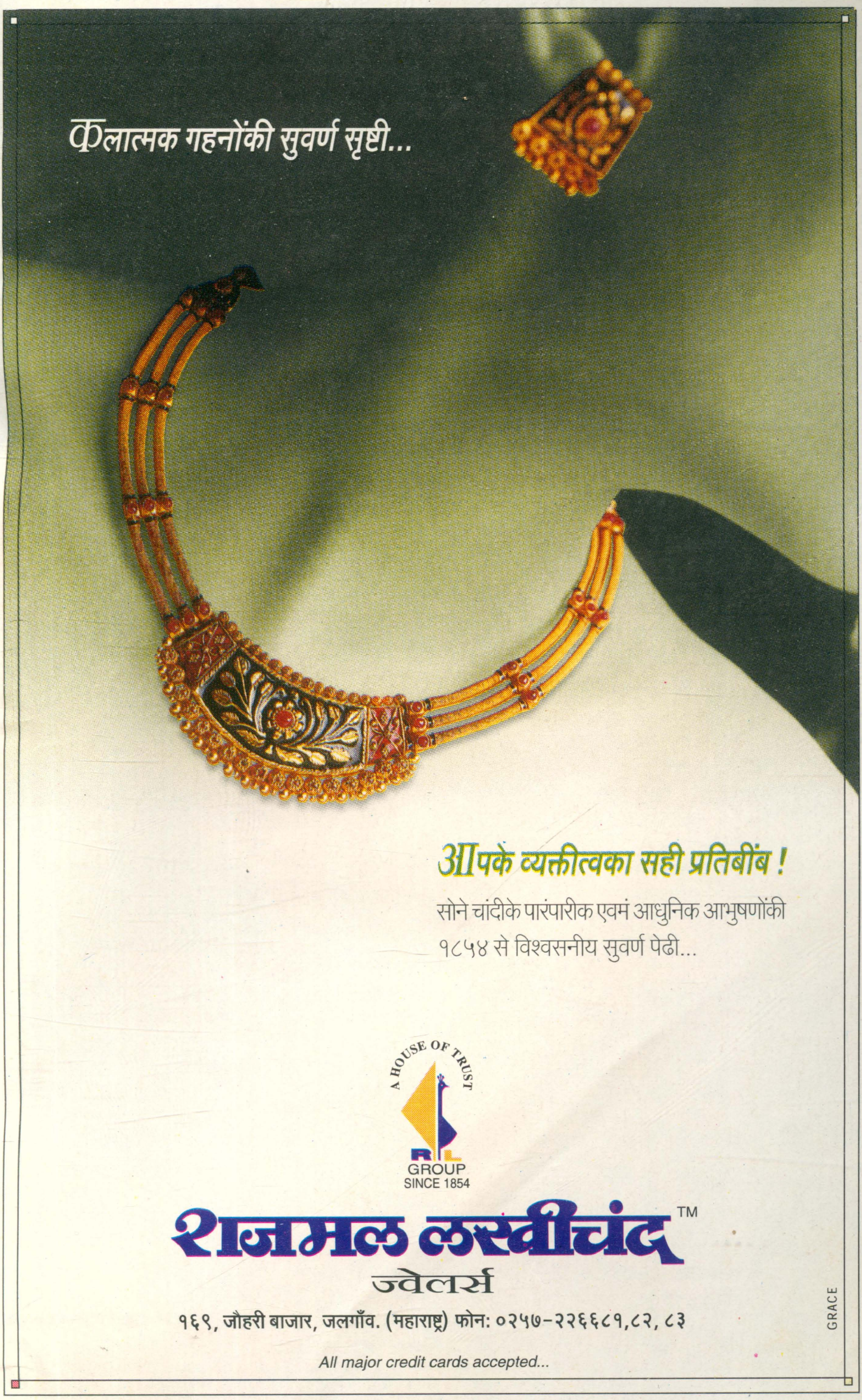
कलात्मक गहनोंकी सुवर्ण सृष्टी...
आपके व्यक्तीत्वका सही प्रतिबींब !
सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...
A HOUSE OF TRUST
GROUP
SINCE 1854
राजमल लखीचंद™
ज्वेलर्स
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (महाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८१,८२, ८३
All major credit cards accepted...
GRACE

आर. एन. आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

Stop existing Start living

KALPATARU HABITAT

Dr. S. S. Rao Road, Parel

- 23 storeyed luxury twin towers
- 2 & 3 BHK Apts. & 4 BHK Penthouses
- Swimming pool, landscaped garden, clubhouse with gym & party lounge
- Squash & tennis court, mini golf putting green
- Independent car park building
- Tower B - ready possession
- Tower A - construction in full swing

KALPATARU RESIDENCY

Opp. Cine Planet, Off Sion Circle, Sion

- Premium 18 storeyed twin towers
- 2, 3 & 4 BHK Apts. & 3 BHK Penthouses
- Clubhouse with gym, squash court & party lounge
- Swimming pool, toddlers pool & landscaped garden
- Stilt & basement car parking
- Tower A - ready possession
- Tower B - nearing completion

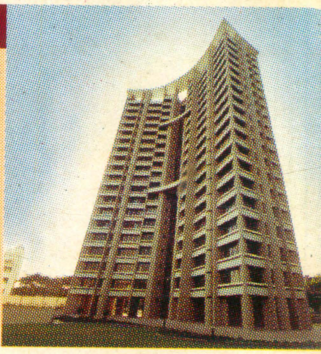

KARMA-KSHETRA

Near Shanmukhanand Hall, King's Circle

- 25 storeyed towers with 2 wings
- 2 & 4 BHK Apts.
- Landscaped garden & clubhouse
- Independent car park building
- Ready possession

Other projects : Kalpataru Gardens - Kandivali (E), Siddhachal - Thane (W), Tarangan - Thane (W), Kamdhenu - Mulund (E), Kalpataru Enclave & Kalpataru Regency II - Pune.

KALPA-TARU For details call: 2281 7171/2282 2888
III, Maker Chamber IV, Nariman Point, Mumbai-400 021.
Fax : 2204 1548/2288 4778. E-mail : sales@kalpataru.com Visit : www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।